Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली का प्रकाशन

जन - ज्ञान

(मासिक)

सम्पादक
—राकेशरानी

□

दूरभाष : ५६६६३९.

—पता
१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग
निकट ३१-नाईवाला
करौल बाग, नई दिल्ली-५

□

वार्षिक मूल्य १५)
विदेश में—३ पौंड
(हवाई डाक से)
१ पौंड : समुद्री डाक से
आजीवन—२५१)

□

वर्ष ८ : अंक ९
सृष्टि संवत्
१,९६,०८,५३,७५

माघ—संम्वत् २०३१
जनवरी—१९७५

रणभेरी बज उठी

पाप-अज्ञान अधर्म की सेना बढ़ती चली आ रही है। आर्यो! उठो, रणभेरी बज रही है, शत्रु सेना समाप्त करने के लिए सेना सजाओ और विजय वरण करो!

आर्यसमाज की स्थापना धर्म की रक्षा के लिए हुई थी। धर्म पर आज फिर संकट मँडराया है। काल चढ़ आया है, तुम भी उठो, और अपने गांडीव से अधर्म को समाप्त करो!

१२ अप्रेल हमारा स्थापना दिवस है चैत्र सुदी प्रतिपदा को आर्यसमाज की स्थापना हुई थी। इस वर्ष यह ऐतिहासिक दिन १२ अप्रैल को पड़ रहा है। अत: १२ १९७५ को पूरे बल से शंख ध्वनि करो!

आर्यसमाज स्थापना शताब्दी मनाने की तैयारी सभी अपने क्षेत्र में करें। १२ अप्रैल हमारी परीक्षा का दिन है। इस दिन शहनाइयाँ भी बजें और रणभेरी भी—दीवाली भी मने और जय गोष गूँजे। ऋषि दयानन्द के चित्रों से सारा क्षत्र भर दो। हर घर पर "ओ३म्" पताका फहराओ! आर्यसमाज के नियम, सत्यार्थप्रकाश और ऋषि जीवन घर-घर पहुँचाओ!

हम दयानन्द के सैनिकों को पुकारते हैं। वीर आर्यों का आवाहन करते हैं। सर्वत्र गुंजा दो, वैदिक धर्म की स्वर के जय!"

अपनी शक्ति और धन का पूर्ण प्रयोग अपने ही क्षेत्र में करें। लम्बी-चौड़ी व्यर्थ की अपीलों पर धन देने के स्थान पर अपने क्षेत्र को आर्यसमाजमय बनाएँ।

बीता अवसर फिर न आएगा
जागो काम करो, आगे बढ़ो!
विजय आपकी प्रतीक्षा कर रही है—

—भारतेन्द्रनाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज शताब्दी अवसर पर

जन - ज्ञान का

विशाल संग्रहणीय विशेषांक

आर्य समाज शताब्दी अंक

भारी संख्या में मंगाकर बांटिए

मूल्य : ३)

१० प्रतियां २०) की।
२५ प्रतियां ४५) की।
५० प्रतियाँ ८०) की।
१०० प्रतियां १४०) की।

२२८ पृष्ठों का यह वृहद् विशेषांक
अपनी उपमा आप ही होगा।

शीघ्रता कर और अपना आदेश धनसहित
२० फरवरी १९७५ तक भेज दें

व्यवस्थापक :—
'जन-ज्ञान' १५६७ हरध्यानसिंह मार्ग,
नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

फरवरी १९७५ | **अंक में पढ़िए** | फाल्गुन संवत् २०३१

१–सम्पादकीय —[illegible]
२–वेदोपदेश —६
३–मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूं —७
४–नींद पर चिकित्सकों के विचार— डा० अपर्णा चट्टोपाध्याव—१७
५–वर्तमान युग और आर्य संस्कृति— स्व० पं० भगवत्त जी—२०
६–भारत की भारतीयता— डा० माहेश्वरी—२५
७–बूंदी का किला सर हो गया— दिग्दर्शानन्द—
८–संस्कृत का पाश्चात्य अध्ययन— पं० देवीरत्न अवस्थी—३३
९–वृक्षों में जीव हैं— डा० सु० ब० काले—३९
१०–हिन्दी की बिन्दी— निर्भय—४७
११–अपने मुन्ना की ओर ध्यान दें— कृष्ण मोहन—५०
१२–कुछ सुझाव शताब्दी के लिए— सत्यप्रकाश गुप्त—५२
१३–कल्याणकारी प्रार्थना— भोलाराम—५६
१४–बाल संसार— —५९
१५–खाओ फल—पाओ बल— सत्यपाल—६४
१६–भारत में जलपोत और नौ सेना— नरेन्द्रकांत—६७
१७–विदेशी ईसाई मिशनरी— हीरालाल शर्मा—७१
१८–धर्मवीर हकीकतराय– सत्येन्द्र—७४
१९–दान सूचि —७६
२० श्री रामगोपाल जी सभाप्रधान को शास्त्रार्थ की चुनौती— आचार्य जगदीश विद्यार्थी –८१
२१–सायण के सम्बन्ध में ऋषि दयानन्द की सम्मति— प्रो० रत्नसिंह—८३
२२–शताब्दी मनाइए —८५-८६
२३–आर्य विद्वानों की सार्वदेशिक सभा को फटकार —८७
२४–आर्यसमाजों के नाम परिपत्र व अन्य लेखादि —८८

अखिल भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष

श्री लालचन्द अडवानी का पत्र

प्रिय श्री भारतेन्द्रनाथ जी !

जन भाषा के माध्यम से वेदों का ज्ञान सर्वसुलभ कराने के जिस प्रशंसनीय कार्य में दयानन्द संस्थान लगा हुआ है उसके लिये आप सभी बधायी के पात्र हैं।

दयानन्द संस्थान के इस कार्य से स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके गुरु दण्डी स्वामी विरजानन्द का वैदिक ज्ञान घर-घर पहुंचाने का स्वप्न साकार हो सकेगा, ऐसी आशा है।

—लालचन्द अडवानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शिवरात्रि के उपलक्ष्य में

—शताब्दी के लिए साहित्य हेतु
—वेद भाष्य प्रकाशन के लिए
—सस्ते साहित्य व प्रचार ट्रैक्टों के लिए
—सत्यार्थ प्रकाश
—ऋषि जीवन घर-घर पहुंचाने के लिए

उदारतापूर्वक धन भेजिए

दयानन्द संस्थान के कार्यों से यदि आप सन्तुष्ट हों तो
हमें सहयोग दीजिए !

हमें आपका जितना सहयोग प्राप्त होगा उतना ही
अधिक कार्य हम कर सकेंगे

आपका स्नेह सहयोग ही
हमारी पूंजी है—

धन—

दयानन्द संस्थान नई दिल्ली-५
के नाम पर ही भेजें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्यार का मन्त्र : राष्ट्र मन्त्र

जीवन में से यदि प्यार की भावना को मिटा दिया जाये तो मनुष्य पशु नहीं राक्षस बन जाता है। प्यार का अमृत ही उसे देवत्व की ओर बढ़ने की प्रेरणा करता है। ऋषि दयानन्द ने भी आर्यसमाज के नियमों में प्रीतिपूर्वक व्यवहार करने की आज्ञा दी—सत्यार्थ प्रकाश के अन्त में भी अपना अभिप्राय प्रगट करते हुए ऋषि ने लिखा है कि—

"सबको ऐक्य मत में करा, द्वेष छुड़ा परस्पर में दृढ़ प्रीतियुक्त कराके सबको सुख लाभ पहुँचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है।"

ऋषि दयानन्द का यह प्रयत्न और अभिप्राय हमने व्यर्थ कर दिया। प्रीति के स्थान पर द्वेष का मार्ग हमने ग्रहण किया और वस्तुतः हमारी दृष्टि में उन्नति मार्ग की यही सबसे बड़ी बाधा बनी—

आज भी हमारे पास सब कुछ है यदि अभाव है तो केवल प्यार का। फूट-द्वेष-ईर्ष्या-घृणा और वैमनस्य की अग्नि सुलगा कर उसमें सभी कुछ हम जला रहे हैं, किन्तु सर्वनाश की राह छोड़ने के लिए तैयार नहीं।

कोई भी अवसर कितने ही महत्व का क्यों न हो, उसमें फूट और पार्टीबाजी के सिवा और किसी बात के दर्शनों की आशा दुराशामात्र रहती है। जीवन के सारे लक्षण इसी कारण हमसे दूर बहुत दूर होते जा रहे हैं।

संसार को आर्य बनाने की घोषणायें करने वाले हम, स्वयं अनार्यत्व की गन्दी नालियों में बह गये। फूट, झूठ और लूट को महामंत्र मानकर द्वेष ईर्ष्या को हमने विजयवरण का साधन बनाया। इस प्रकार हमने पूर्णतया ऋषि के विचारों को समाप्त कर उनकी जय का ढोंग रचाया।

शताब्दी के अवसर पर भी हमें होश नहीं आया। शताब्दी का पावन पर्व भी हमें बदल न सका। कुर्सी के मोह में पागल होकर हमने दयानन्द के लक्ष्य की हत्या की ओर कर रहे हैं। कोई शक्ति नहीं जो हमें बदल सके। घृणा-फूट के स्थान पर प्यार का मंत्र सिखा सके।

गुरुदेव दयानन्द के प्रति यदि हमारे शीर्षस्थ नेताओं में तनिक भी श्रद्धा हो और उन्हें तनिक भी प्यार हो आर्यसमाज से तो आज कम से कम एक वर्ष के लिये तो "फूट" पिशाचनी का मोह छोड़ "एकता" देवी की शरण में आने का निश्चय करें। वर्षों से गृहयुद्ध की अग्नि में अपने को जला रहे हैं, एक वर्ष के लिये संगठन की राह पकड़ें।

जिनसे मतभेद हैं उन्हें ठुकराना और जो हाँ में हाँ मिलायें—वे कैसे भी हों उनके गीत गाना आर्यसमाज को आगे न बढ़ने देगा। अगर तनिक भी लक्ष्य का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ध्यान है तो प्यार से सारे भेद भुलाकर एक "ओ३म्" के झंडे के नीचे बैठकर शताब्दी रचनात्मक ढंग से मनाइये।

शताब्दी मनाने का अर्थ करोड़ों रुपये की अपील मात्र करना नहीं है। धन एकत्र करना स्वयं कोई लक्ष्य नहीं होता। कार्य की प्रचार की योजनाएँ व्यवहार में लाइये, धन स्वयं आयेगा।

झूठी घोषणायें, झूठे वायदे। झूठी अपीलें, आपसी कलह और गद्दियों की भूख अगर हमने नहीं छोड़ी तो आर्यसमाज को कोई बचा नहीं सकेगा। केवल प्यार का मन्त्र ही आर्यसमाज, ऋषि दयानन्द और वैदिक धर्म की जय का मार्ग खोल सकता है। काश, कि आप अपने को बदल सकते ? किसी भी तरह आपके मन में ऋषि के प्रति श्रद्धा का अंकुर उत्पन्न हो सकता ?

—हम अपना अन्तर्मन टटोलें—

—दयानन्द के भक्त बनें—

—आर्यसमाज को आर्यसमाज बना सकें।

इसके लिये प्रभु सभी को बुद्धि दें—

—राकेशरानी

वेदोपदेश

वेद हमारा सच्चा मित्र है

यस्तित्याज सचिविदं सखायं न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति।
यदीं शृणोत्यलकं शृणोति न हि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम् ॥

ऋ० १०।७१।६॥

पदार्थान्वयभाषा—(यः) जो अज्ञानी पुरुष (सचिविदम्) सत्य ज्ञान के देने वाले (सखायम्) मित्र के समान वेद को (तित्याज) त्याग देता है, (तस्य) उसका (वाचि अपि) किसी भी वचन में (भागः न अस्ति) कोई भाग नहीं होता- अर्थात् लोग उसे मिथ्यावादी समझने लगते हैं। (ईम्) ऐसा पुरुष (यत् शृणोति) जो कुछ सुनता है, (अलकं शृणोति) व्यर्थ ही सुनता है, और वह (सुकृतस्य पन्थाम्) सत्कर्मों के मार्ग को (नहि प्रवेद) नहीं जानता ॥

भावार्थ—ईश्वरीय ज्ञान वेद मनुष्यमात्र का सच्चा मित्र है। वह हम सबको कल्याण की बातें बतलाता है। किसी वर्ग, जाति व देश विशेष की सीमा से वह बँधा नहीं है। उसके उपदेश सार्वभौम और सार्वजनीन हैं। इस प्रकार के निःस्वार्थ सच्चे मित्र को जो लोग स्वार्थवश त्याग देते हैं, वे अपयश के भागी बनते हैं। वेदविहित लोक-परलोक के हितसाधक उपदेशों को त्यागने का मतलब है अपने दोनों लोकों का स्वयं नाश करना। यही कारण है कि जब तक संसार में वेद तथा वैदिक धर्म का प्रचार रहा, संसार में सर्वत्र सुख-समृद्धि की वृद्धि होती रही। उससे विमुख होकर सब लोग दुःख भोग रहे हैं। वेद-विहित मार्ग पर चलने में ही मानव का कल्याण है ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूँ ~ भारतेन्द्र

प्यार की गोद में

जीवन की साँस पर

आशा का गीत कौन गाएगा ?

कुछ भी तो ज्ञात नहीं, जीवन का अन्त कहाँ होगा, कौन जानता है, कब मृत्यु आएगी और हमें जीवन की अन्तिम सांस के सरगम पर विदा का गीत गाना होगा।

किसे पता है स्वप्न कैसे सच होते हैं ? द्वेष की अग्नि जब सांसों को जला-जलाकर प्राणों को सालती है, तब आशा भीनी-भीनी मादक ध्वनि में प्यार की गोद में पालना झुलाती है, दीप बुझते हैं, दीप जलते हैं पर मेरे संगीत की ध्वनि अविराम गूंजती है।

किस ने सुनी है वह आवाज, किसने छेड़े हैं मधुर साज, कौन है वह जिसे बिना देखे ही हम उसके भक्त हैं, और कहां है वह, जो हर जगह उपस्थित रहकर भी सबसे दूर है।

तुमने प्यार का पाठ कभी पढ़ा है ? कभी गाए हैं मिलन के गीत, कभी सुना है मन के सरगम को ? यदि नहीं तो कैसे समझोगे जीवन की वीणा के निर्झर गीतों की भाषा को ?

मेरे साथी !

प्यार मेरी शक्ति और विश्वास पूंजी है। मैंने उसे देखा है, उसकी गोद में झूले झूलकर मैं मुस्कराया हूं। मेरा मन नृत्य करता रहा है और कर रहा है पर तुम बताओ, तुमने क्या उससे कभी प्यार किया है ?

मन मन्दिर की नीरव घाटी में, एकान्त मिलन के मादक क्षणों में, उससे कभी तुम्हारी भेंट हुई है क्या ? क्या तुमने उसे अपना सामीप्य दिया है, चिन्तन के प्रहरों में उसकी स्मृति ने क्या तुम्हें कभी झकझोरा है ?

यदि नहीं, तो सच मानो यह धरती सूनी है। सूनी हैं प्यार की मंजिल और यात्रा की परिधि ? बंधन और मुक्ति के द्वार हार से नहीं प्यार की झंकृतियों से खुलते हैं।

मैं तुम्हें पुकारता हूं प्यार के लिए··· प्यार की कोमलता तुम्हें ज्ञान की गरिमा, जीवन का सन्तोष और आशा की मुस्कान देगी—विश्वास कर आगे बढ़ो··· सफलता तुम्हारे स्वागत हेतु खड़ी है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं तुम्हारी श्रद्धा को पुकारता हूँ !
तुम्हारी आत्मा को झकझोरता हूँ!
तुम्हें ललकार कर पूछता हूं—बताओ····

तुम्हें ऋषि दयानन्द पर कितनी श्रद्धा है ?

दयानन्द के भक्तो !

तुम जिन्दा हो, या नहीं, इसके निर्णय का वक्त आ गया है, तुम्हारी रगों में आर्य रक्त है या नहीं, इसका फैसला अब होके रहेगा ! तुम्हारी ऋषि भक्ति, तुम्हारी 'वेद' गरिमा की अग्नि परीक्षा अब होनी है !

आर्य समाज मन्दिरों में बन्द तुम्हारा आत्मा मर गया प्रतीत हो रहा है। तुम्हारा स्वाभिमान धन संग्रह की भेंट हो गया है। जोश और वीरता को त्यागकर तुम आज कायरों की भाषा बोल रहे हो !···

आखिर क्यों ?

क्या कोई उपाय है कि तुम दयानन्द के सैनिक बन सको। क्या कोई ऐसी औषधि है जो तुम्हें जगा सके ? और तुम्हें कर्त्तव्य का पाठ पढ़ा सके। मैं तुम्हारी स्थिति देखकर सोच रहा हूँ कि तुम्हें कैसा व्यामोह हो गया है जो तुम्हें सुला रहा है। शताब्दी की प्रतीक्षा तुम १० वर्ष से कर रहे थे, किन्तु जब शताब्दी सिर पर आ गई तब तुम सो रहे हो।

प्राण देकर जिसने तुम्हें बचाया, धर्म का सच्चा ज्योतिर्मय रूप जिसने तुम्हें दिखाया, जिसने तुम्हारे आत्म गौरव से तुम्हें परिचित कराया, उस महान् पुरुष देव दयानन्द को श्रद्धा सुमन अर्पित करने की उमंग तुम्हारे मन में क्यों नहीं उभरती !

मेरे भाई !

सोचो और कर्त्तव्य विचारो, अब तो समय नहीं रहा, १२ अप्रैल—आर्य समाज का १००वां जन्मदिन आ गया, अत्यन्त निकट, अब भी न जगे तो फिर कब जगोगे ?

'वेद' की पताका हाथ में लेकर उठो ! धर्म की मशाल लेकर बढ़ो और जहां भी आप रहते हों, अपने आसपास के क्षेत्र को दयानन्दमय बना दो ! चारों ओर ऋषि के चित्र चिपकाओ। साहित्य बांटो, आर्य समाज के नियम लगाओ।

कुछ ऐसा करो कि १ अप्रैल से १२ अप्रैल तक सारा देश दयानन्द और आर्यसमाजमय हो उठे। जिधर भी दृष्टि जाए, वहीं ऋषि का चित्र और आर्यसमाज के नियम दिखाई दें।

साहित्य, ट्रैक्ट, पोस्टरों से अपना क्षेत्र भर दो। सत्यार्थ प्रकाश और ऋषि जीवन घर-घर फैला दो ! कुछ करो, आगे बढ़ो और १२ अप्रैल मनाने की तैयारी करो।

१२ अप्रैल को धूमधाम से मनाओ। नेताओं की ओर मत देखो। अपने को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

टटोलो । अगर वहां ऋषि दयानन्द के प्रति भक्ति का सागर नहीं उभरता तो क्या लाभ ? अगर तनिक भी श्रद्धा हो देव दयानन्द पर तो काम में जुट जाओ !

मैं दयानन्द के अनुयायियों को पुकारता हूं। मैं उन्हें बुला रहा हूं जो दयानन्द के लिए कुछ कर सकते हों। भाषण, योजनाएं और प्रस्तावों के चक्कर से बचो और काम करो। घर-घर जाओ और आर्य समाज का सन्देश पहुंचाओ।

महिला आर्यसमाजों से !

मेरी प्रार्थना है कि वे परिवारों में जाकर बहनों से मिलें और सत्यार्थ प्रकाश को हर घर आँगन में पहुंचाने का व्रत लें ! हर घर में दयानन्द का चित्र—आर्य-समाज के नियम लगें यह हमारी इच्छा है !

इस इच्छा की पूर्ति में आप सहयोगी बनें इसलिए आप को पुकार रहा हूँ। देखना है कि संसार में कितने सच्चे दयानन्द के भक्त जीवित हैं। दयानन्द की जय-वाणी से बोलने वालों की भीड़ नहीं चाहिए। कर्म से दयानन्द की विजय के लिए काम करने वालों की आवश्यकता है......

प्राणों को गति दो, मन में ज्योति जगाओ और प्रभु के भरोसे विश्व विजय के लिए सेना सजाओ ! आर्य वीरो ! महानाश की आंधी में चट्टान बनकर खड़े होने के लिए बिगुल बजा रहा हूं। बहरे कानों में भी मेरी आवाज टकरायेगी और गुरुदेव दयानन्द के प्रति समर्पण की भावना आपके मन में उभरेगी...... यह मेरा विश्वास है।

क्रांति के लिए, निर्माण के लिए जीवन के स्वरों की ध्वनि गूंज उठी है। शहनाइयां बजेंगी और 'धर्म' की विजयवाहिनी अधर्म को समाप्त कर शताब्दी मनाएगी... इसी विश्वास से आपको पुकारता हूं।

आपकी रगों में यदि आर्य रक्त हो तो मेरी पुकार सुनो ! मां की लाज बचाने के लिए जीवन अर्पण की भावना से चल सकते हो तो कर्म क्षेत्र में आओ !

आज—या फिर कभी नहीं।
शताब्दी—विजय का स्वर है।
शताब्दी—जागरण का मन्त्र है।
शताब्दी—धर्म की वाणी है।
शताब्दी पुकारती है।
धर्म बुलाता है—
दयानन्द का बलिदान निमन्त्रण दे रहा है।
वीर सपूतो ! जागो और सर्वत्र वेद-ओ३म्-धर्म पताका फहरा कर शताब्दी मनाने की तैयारी करो।

देखें कौन आर्य पुत्र मेरी गुहार सुनता है। और कौन कायर—मौन रहता है ?

सुन्दर — सस्ता — बढ़िया कागज पर
तिरंगा आकर्षण आवरण

सत्यार्थ प्रकाश

३२५) सैकड़ा मँगाकर बाटें। (जनता संस्करण २५०) सैकड़ा)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वीरों को आज बुलाता हूँ
बल से आवाज लगाता हूँ

दूर-दूर तक कहीं किनारा, नहीं दिखायी देता।
सपने सारे टूट चुके हैं अनजाने में—
तुम से क्या कहकर मैं कहूं कि, ज्योति कहीं से लाओ।
सारे जितने दुःख हमारे-दूर उन्हें कर जाओ।
जीवन का हर पल छलना है, टूट चुका उजियारा,
अन्धकार बढ़ता जाता है, जीवन में बेचारा!
गति सारी ठुकरायी जाकर काँप रही है,
बोझिल धरती अपनी गरिमा ढांप रही है,
स्वप्न बिखर कर चूर-चूर हो बैठे हों क्यों,
प्रश्न अधूरे, सपने पूरे कैसे बोलो हो पाएँगे?
"धर्म" निशा की गहरी घाटी में डूबा है,
"कर्म" स्वार्थ की अँगड़ायी से सिसक रहा है,
दीप बिना बाती के जलकर बुझने वाला है,
"सत्य" सुधा में गरल मिलाकर अन्तिम घड़ियाँ
गिन कर अपनी डूबा डूबा सा फिरता है।
कहाँ "ज्ञान" की लाली, कहाँ "शक्ति" की आभा,
कहाँ "विजय" के स्वर खोये हैं, कहाँ गई है प्रतिभा,
प्रतिमा जन की चकराई सी चक्कर खाकर डोल रही है,
मेरे मन में ज्वार उठा है, दीप शिखा की दीप्ति लुटाकर,
अपने मन की अकथ कथा भी खो बैठी है।
प्राण! कहाँ तुम, अन्तर्मन की गहरायी में,
डूब चुका है सारा गौरव काली काली सी घाटी में,
तुम जीवित हो, या स्पन्दन है केवल साँसों में,
अधरों पर मुस्कान तुम्हारी विदा कहाँ पर, कहो हो गई!

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तुम—मैं, वे, सब आकुल हैं–पता नहीं है ठौर ठिकाना,
मिलन यामिनी, विरह वेदना लेकर कैसे जाग उठी है ?
कुछ तो बोलो, गुण्ठन खोलो, भेद मृत्यु का हम भी जानें,
जीवन और मरण का चक्कर सदा-सदा से चलता आया,
किसने भेद कहो है पाया ?

बन्धु हमारे ! युग परिवर्तन की आशा में हम जीवित हैं,
सोच रहे हैं सत्य सूर्य का उदय धरा पर कैसे होगा ?
नील गगन पर धर्म-ज्योति की आभा कैसे फैल सकेगी ?
दूर पार तक ज्ञान-तरगें कैसे नूतन नृत्य करेंगी ?
मेरी उलझन, शाश्वत पथ की दीप शिखा है।
मेरा कम्पन चरण वंदना युग की सदा करेगा।

तुम सोचो तो, मनुज धरा पर स्वर्ग नहीं ला सकता है क्या ?
इस युग को भी सतयुग का रूप नहीं दे सकता है क्या ?
बोलो साथी, बोलो भाई, आज सृजन को गति पाने दो,
ध्वंस करो पाषाण खण्ड को, अन्धकार की काली छाया

घूमिल कर दो, भरकर सब में, नयी चेतना,
नए जागरण का बलशाली शंख बजाओ !

मेरे अर्जुन ! अब अपना गांडीव उठा लो,
चक्र सुदर्शन फिर योगी के सबल हाथ से चलना होगा,
भीम ! कहाँ है गदा तुम्हारी, कहाँ तुम्हारा पौरुष खोया,
कौरव दल का अट्टहास सुन तुम भी क्या प्रिय काँप रहे हो ?

मेरा राम रावण से डर कर भाग रहा है,
लक्ष्मण आज बंधु के घर में, लुका छिपा सा,
हँस कर डाका डाल रहा है।
सीता की गरिमा बाजारों में बिकने आयी।
कैसा युग है, कैसी वीणा, कैसी है रूठी शहनायी ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कायरता आभूषण बनकर आर्यशक्ति को दीन बनाकर,
अट्टहास करती है नागिन, पापों की कटु बीन बजाकर,
मेरा मन गीतों की ध्वनि में जीवन कैसे ला पाएगा,
सब कुछ उलट गया हो जग में, सीधा कौन बना पाएगा,
मेरे मन, प्राण, स्वप्न सब अब भी जाग रहे हैं।
सब कुछ देख रहे हैं, फिर भी उनपर भार नहीं है।
गीता के स्वर की विजय वाहिनी अब भी जागृत है,
वेद मन्त्र की पूत ऋचायें, गूँज रही हैं मेरे मन में,
आज बजाता हूँ मैं तुरही, देखूँ कितने वीर बचे हैं,
जो मां का दुग्ध पान कर धर्म-सत्य हित प्राण चढ़ाकर,
स्वयं मिटाकर अपने को, युग की लाज बचा सकते हों।
बजा रहा हूँ शंख कृष्ण का, सोने वाले जागो,
मरना तो होगा सब को ही, रोने वालो जागो।
जागो युग के देव, जाग कर नया जागरण मंत्र गुंजाओ।
नयी प्रभा से, नयी शक्ति का, मंगल जीवन दीप सजाओ।
जागो, राम-कृष्ण के वंशज, जागो वीर शिवा सन्तान।
जगा रहा है आज प्राण को, प्राणों का प्रेरक भगवान्।
नव विहान में, नयी भावना, आदि सृष्टि की पुण्य कामना,
जगा रही ऋषियों की वाणी, मन मन्दिर की दिव्य साधना,
सपनों का श्रृङ्गार करो रे! माँ—जगती को नया रूप दे,
नव युग के वैदिक मंत्रों का अब गुंजार करो रे!
बुला रहा हूँ, प्राण शक्ति से, जगा रहा दे जीवन अर्घ्य।
सब कुछ भेंट चढ़ा चरणों में मांग रहा हूं मैं प्रतिदान।
मनुज मात्र को नव जीवन दो, मत मरने दो—
अन्धकार में, पाप-ताप की काली छाया दूर करो रे।

सत्य उठो रे! धर्म उठो रे!
आर्य उठो रे! पुण्य उठो रे!
जगा रहा हूँ मानव मन को,
बुला रहा हूँ, जीवन बल को,
नयी शक्ति से नव युग के निर्माण हेतु मैं,
बल से आवाज लगाता हूँ!
वीरों को आज बुलाता हूँ!

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज शताब्दी पर : दयानन्द संस्थान भेंट करता है—

आकर्षक, सुन्दर, बढ़िया कागज पर
तिरङ्गे सुनहरी आवरण के साथ

५½×६ इंच के उपहार योग्य साइज में

सत्यार्थ प्रकाश

अजिल्द

प्रचार संस्करण

केवल ३२५ रु० सैकड़ा

जनता संस्करण
२५०) सैकड़ा

लागत ४००) सैकड़ा

सजिल्द : राज संस्करण : ४००) सैकड़ा

कपड़े की बढ़िया जिल्द : ५००) सैकड़ा

स्वामी दयानन्द जीवन चरित्र : १००) सैकड़ा । ८००) हजार

आर्य समाज के १०० वर्ष : १००) हजार । १५) सैकड़ा

महर्षि दयानन्द का तिरंगा चित्र : २००) हजार
३०) सैकड़ा

भारी संख्या में मँगाकर शताब्दी मनाइये
घर घर में आर्य समाज का सन्देश पहुँचाइये

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्यार्थ प्रकाश : जनता संस्करण—२५०) सैकड़ा

१ से १३ अप्रैल तक

हर घर पर

शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में

ओ३म् पताका लहराएँ

लागत से कम मूल्य पर झंडे देने का प्रबन्ध संस्थान ने किया है। जिसकी व्यवस्था श्री सत्यपाल जी आर्य गांधी नगर कर रहे हैं। बढ़िया कपड़ा। सुन्दर आकर्षक छपाई मूल्य अत्यन्त कम।

१० लेने पर भी सैकड़े का रेट देंगे।

और स्थानों से आधा

१२×१८ इंच का झण्डा=१४०) सैकड़ा

१८×२७ इंच का झण्डा=२५०) सैकड़ा

३६×५४ इंच का झण्डा=८००) सैकड़ा

अपना आदेश तुरन्त भेजें

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली–५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शताब्दी के उपलक्ष्य में दयानन्द संस्थान

११ हजार रु० का साहित्य
मुफ्त बाँटने की घोषणा
करता है।

केवल २०० जन-ज्ञान के सदस्यों को--
जिनका धन पहले आ जाएगा—
"वेद भाष्य"

का सदस्य बनने पर—५१) का साहित्य मुफ्त दिया जायेगा।

१. अपनी सदस्य संख्या लिखें।

२. १५१) वेदभाष्य का मूल्य और १०)५० तीन कवरों का मूल्य १६१)५० पैसे तुरन्त भेजें।

३. २०० सदस्यों को ही यह उपहार दिया जाएगा। बाद वालों को धन तुरन्त वापस कर दिया जाएगा।

५१) की उपहार की पुस्तकें

१. सत्यार्थ प्रकाश (उपहार) ८)
२. शतपथ ब्रह्मण १५)
३. वेदों का यथार्थ स्वरूप १०)
४. आर्य-क्रांतिकारी ३)
५. बोध रात्रि ५)
६. गायत्री शतक-२)
७. वैदिक ज्ञान सुधा १)
८. ईश्वर भक्ति १)५०
९. वैदिक अर्थशास्त्र परिचय १)
१०. उपनिषद् त्रयी १)५०
११. क्या वेदों में मांस भक्षण का विधान है? १)
१२. ऋषि जीवनी १)६०
१३. ३ ट्रेक्ट —)६०

अपने रेलवे स्टेशन का नाम अवश्य लिखें।

दयानन्द-संस्थान

नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रत्येक आर्य समाज ३००) व्यय कर ३००० ट्रैक्ट

शताब्दी के अवसर पर बांटे

आप निम्न ट्रैक्टों में से कोई से ३००० ट्रैक्ट मंगा सकते हैं—

१–निमन्त्रण आर्यसमाज का।
२–आर्य समाज के सौ वर्ष।
३–आर्य समाज क्या मानता है ?
४–आर्य समाज के दस नियम।
५–आर्य समाज की मान्यताएं।
६–सुख का मार्ग।

इन ३००० ट्रैक्टों का लागत मूल्य है ४५०)। हम १५०) आप से इसलिए कम ले रहे हैं कि आप शताब्दी के अवसर पर **अधिक-से-अधिक प्रचार कर सकें।**

३००० ट्रैक्टों से कम के आर्डर १५) सैकड़ा की दर से ही भेजे जायेंगे।

समय थोड़ा है : शीघ्र से शीघ्र १२ अप्रैल को शताब्दी मनाने की तैयारियां करें।

स्वामी जी के रंगीन चित्र ११×१८ इंच काग़ज पर केवल२००) हजार। ३०) सैकड़ा मंगाइए। अपने क्षेत्र के हर कोने में चित्र लगाइए।

दयानन्द संस्थान नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नींद पर चिकित्सकों के प्राचीन भारतीय विचार

डा० अपर्णा चट्टोपाध्याय

चरक ने नींद के महत्त्व की ओर ध्यान दिलाया है। उसने कहा है कि मानव जीवन में दुःख और सुख, स्वास्थ्य और रोग, शक्ति और कमजोरी शारीरिक विकास और क्षीणता, बुद्धि और अज्ञान, यहां तक जीवन और मृत्यु सभी नींद पर निर्भर है।

चरक के अनुसार नींद छह प्रकार की होती है—

(१) तमोगुण के कारण उत्पन्न नींद, (२) कफ के कारण उत्पन्न नींद, (३) शारीरिक या मानसिक, थकावट के कारण नींद, (४) असमय नींद (५) रोग के कारण उत्पन्न नींद, (६) प्राकृतिक नींद जो रात को आती है। उक्त छह प्रकार में से प्राकृतिक नींद वह है जो रात को आती है, उसको दैवी कहा गया है, जो प्राणियों को जीवित रखती है। तमोगुण के कारण उत्पन्न नींद सब पापों की जड़ है। शेष चार प्रकार की नींदों का रोगों के साथ वर्गीकरण किया जाना चाहिए।

सुश्रुत ने नींद, इसके कारण और विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों में इसकी प्रकृति का दार्शनिकतापूर्ण विवरण दिया है। वह कहता है कि मानव हृदय नीचे की ओर मुड़े हुए खिले हुए कमल की तरह है। जागृतावस्था में यह खिला हुआ रहता है, सुप्तावस्था में इसकी पंखुड़ियां बन्द रहती हैं। सुश्रुत के अनुसार नींद मोह माया के समान है और अधिक नींद लेना पाप भी है। जब कफ जिसमें 'तम' का तत्व प्रधान है, ज्ञानेन्द्रियों को प्रभावित करता है, तब नींद जो 'तम' प्रकार की होती है, मानव प्रणाली पर विजय पा लेती है। 'तम' प्रकृतिवाले व्यक्तियों को नींद दिन में आती है, रात में भी। राजसिक प्रकृतिवाले व्यक्तियों में नींद समय-असमय आती है और बिना कारण आती है। सात्विक प्रकृति वाले व्यक्तियों में नींद केवल आधी रात को आती है और जिन व्यक्तियों में "कफ" का तत्व अल्प है, जिनमें "वात" तत्व प्रधान है, जो शारीरिक और मानसिक रोगों से ग्रस्त है, वे अनिद्रा से पीड़ित रहते हैं। सुश्रुत ने नींद की शरीर-रचना शास्त्र की दृष्टि से भी व्याख्या की है। इसका सार यह है कि सभी प्राणियों को तभी नींद आती है जब हृदय पर जो सम्पूर्ण चेतना का केन्द्र है "तम" तत्व विजय पा लेता है।

चरक कहता है कि, यदि कोई व्यक्ति रात को नियमानुसार सोये, तो इससे शारीरिक आराम और दीर्घायु प्राप्त होती है, वैसे ही, जैसे—नवलब्ध अन्तर्ज्ञान-विरागी को मोक्ष प्रदान करता है। उसने एक अन्य सन्दर्भ में इस बात को दोहराया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है और कहा है कि स्वास्थ्य रक्षा, शारीरिक विकास या दुबलापन मुख्यतः भोजन और नींद पर निर्भर है। अतः पर्याप्त नींद शरीर को आराम देती है और स्वास्थ्य बनाये रखने में सहायता करती है। पर्याप्त मात्रा में प्रतिदिन नींद लेने की आवश्यकता के महत्व पर वाग्भट्ट ने भी बल दिया है। उसने कहा कि व्यक्ति को अपनी आवश्यकतानुसार रात को सोना चाहिये। और यदि रात को जागना पड़े, तो इसकी पूर्ति प्रातःकाल सोकर की जानी चाहिए। पर्याप्त नींद पर सुश्रुत ने भी बल दिया है और कहा है कि पर्याप्त नींद व्यक्ति को अच्छा स्वास्थ्य, रोगों से मुक्ति, शक्ति, उत्साह, उचित प्रकार का शारीरिक गठन, सम्पत्ति और दीर्घ आयु प्रदान करती है। इसके विपरीत, चरक के अनुसार असमय सोना, अधिक सोना या बिल्कुल न सोना ये, न केवल हानिकारक हैं, बल्कि जीवन के लिए घातक हैं और वाग्भट्ट ने भी यही विचार व्यक्त किया था।

सुश्रुत ने दिन में सोने को बहुत गलत बताया है। सुश्रुत ने कहा है कि गर्मी को छोड़कर अन्य किसी मौसम में सोना निषिद्ध है। दिन मे सोना एक प्रकार की रजोवृत्ति है, और इस प्रकार यह स्मृतिकारों के विचारों को प्रतिध्वनित करता है, जिनके अनुसार दिन में सोना पांच व्यभिचारों में से एक है। सुश्रुत आगे कहता है कि दिन में सोना पाप है और यह अन्य पापों और बुरी आदतों में वृद्धि करता है। चरक ने स्पष्ट किया है कि स्वास्थ्य की दृष्टि से गर्मी को छोड़कर अन्य मौसम में दिन में सोने से कफ और पित्त में वृद्धि होती है और इस प्रकार इन ऋतुओं में दिन में सोना हानिकर है।

दिन में सोने से जो रोग उत्पन्न होते हैं चरक ने उनकी एक लम्बी सूची दी है। ये विकार हैं, सिर में दर्द, आलस्य, अगों में भारीपन, भूख कम होना, हृदय में कफ में वृद्धि, आधे सिर में दर्द, उनींदापन, दमा, गले का विकार, स्मरण शक्ति में गिरावट, ज्वर इत्यादि। सुश्रुत के अनुसार, दिन में सोने से दमा, खाँसी, सिर में भारीपन, शरीर में दर्द, ज्वर, भूख कम होना इत्यादि रोग हो जाते हैं। वाग्भट्ट ने भी असमय सोने की हानियों का उल्लेख किया है। उसने कहा है कि असमय सोने से ज्वर, आलस्य, सिर में दर्द, 'सौफा', मतली, नाक के विकार इत्यादि रोग हो जाते हैं।

चरक ने उन लोगों के सभी ऋतुओं में दिन में सोने की सिफारिश की है जो गायन, अध्ययन, मद्यपान उलटी आने इत्यादि के कारण कमजोर हो गये हैं। उनके लिए भी इसकी सिफारिश की गई है जो घायल हैं, जो घाव इत्यादि के कारण कमजोर हो गये हैं। वृद्ध, छोटे बच्चों, स्त्रियों या जो शारीरिक रूप से कमजोर हैं, दमा के रोगियों के लिए इसे लाभकर बताया गया है। इस सम्बन्ध में वाग्भट्ट के भी यही विचार हैं और वह कहता है कि उपरोक्त स्थितियों में दिन में सोना शक्ति उत्पन्न करेगा।

गर्मियों में भी सोना उनके लिए वर्जित है जो मोटे हैं: जो नियमित रूप से प्रशमनकारी भोजन खाते हैं जिनके कफ अधिक है, जो खांसी और जुकाम के रोगी हैं।

वाग्भट्ट का विचार है कि जो लोग गले के विकारों से पीड़ित हैं उन्हें रात में भी नहीं सोना चाहिये। सुश्रुत का भी विचार है कि जो कफ, मोटापे या विष से पीड़ित है यदि वे रात को जागते रहें तो लाभान्वित होंगे। चरक का भी विचार है कि जो बहुत अधिक सोता है सुअर की तरह मोटा हो जाता है। ऐसे व्यक्तियों के लिए रात में जागना लाभदायक रहेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भय, क्रोध, चिन्ता, धूम्रपान, व्यायाम उपवास, विरेचक औषधियों का सेवन, सख्त बिस्तर, सात्त्विक आदत ग्रहण करना, योगाभ्यास इत्यादि से अधिक सोने की आदत छुड़ाने में सहायता मिलेगी। यह चरक का विचार है। सुश्रुत ने भी इन्हीं उपायों की सिफारिश की है।

सुश्रुत का कहना है कि वायु विकार या पित्त, मानसिक विकारों से ग्रस्त या घायल व्यक्ति अनिद्रा रोग से पीड़ित हो जाते हैं। चरक का कहना है कि जो तत्त्व अतिनिद्रा को समाप्त करते हैं, अनिद्रा के कारण हो सकते हैं। अतः विरेचक औषधियों का सेवन, व्यायाम, भय, क्रोध, या दुख, उपवास, सख्त शय्या इत्यादि अनिद्रा के कारण हो सकते हैं। चरक ने कहा है कि वृद्धावस्था, चिन्ता, शारीरिक व्याधियां और कुछ व्यक्तियों में प्राकृतिक प्रवृत्ति अनिद्रा का कारण हो सकती है। अनिद्रा के बुरे प्रभाव हैं, शरीर में दर्द, सिर में भारीपन, जम्हाइयां, सिर में चक्कर, शारीरिक और मानसिक अशांति और अजीर्ण।

अनिद्रा के रोगियों के लिए चरक ने तेल मालिश, स्नान, दूध, दही, छाली, चावल और वसायुक्त वस्तुएँ, घी इत्यादि, मानसिक शांति या भय, सुगंधि और मनपसंद संगीत, नरम शय्या, इत्यादि की सिफारिश की है। सुश्रुत ने शरीर के साथ-साथ सिर पर भी तेल की मालिश, गुड़ की बनी मिठाइयां, मिश्री, और रात को गन्ने की भी सिफारिश की है। शय्या, आसन और सवारी मुलायम और आरामदायक होनी चाहिए।

वाग्भट्ट ने दो पद्यांशों में इलाज स्पष्ट किया है। अतः वह कहता है कि जो अनिद्रा से पीड़ित है उसे दूध, और दही का सेवन करना चाहिए। तेल की मालिश, सुखी जीवन, इच्छाओं की पूर्ति और अनुकूल परिस्थितियाँ गहरी नींद लाने में सहायक हैं।

"आर्यसमाज के नियमों" का पोस्टर

भारी संख्या में मंगाकर बाँटें।

आस-पास सर्वत्र 'वेद' नाद गुंजाएँ।

मूल्य ५०) सैकड़ा। ३५०) हजार

हर घर पर

शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में

ओ३म् पताका लहराएं

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली–५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

□ वर्तमान युग और आर्य संस्कृति

स्व० पं० भगवद्दत

संवत् १८०० के बाद भारत नये युग में प्रविष्ट हुआ। आर्य गौरव के कारण हिन्दू शतियों के बाद जाग रहा था। उसने मुगल साम्राज्य को छिन्न-भिन्न कर दिया था। पर उसी समय भारत में एक नई शक्ति उपस्थित हो गई। संवत् १८१४ के पलासी युद्ध के बाद अंग्रेज भारत के पूर्व के शासक हो गये वे अपनी विकृत संस्कृति अपने साथ लाये। जो बात मुसलमानों ने भारत में आकर अनुभव की थी, वही अंग्रेजों ने भी अनुभव की। उन्होंने देखा कि भारतीय जनसाधारण और विशेषतया विद्वान् आत्मगौरव के भाव से ओत-प्रोत हैं।

कर्नल विल्फर्ड ने संवत् १८६६ में लिखा—"प्रत्येक श्रेष्ठ बात को अपने साथ जोड़ने का झुकाव प्रसिद्ध है।"

ईस्ट इंडिया कम्पनी के डायरेक्टरों की कोर्ट के अधीन लिखता हुआ टौमस मौरिस सवत् १८७७ में लिखता है—"वह पवित्र जाति जिसे ब्राह्मण कहा जाता है, आत्मगौरव और जातीय सम्मान के भाव से लदी हुई है। वह अपने अतिप्राचीन होने का कथन करती है यह बात वह अभिमान से नहीं प्रत्युत अपने सर्वश्रेष्ठ ज्ञान के आधार पर कहती है।"

फिर सं० १६२६ में चन्द्रनगर के फ्रेंच न्यायाधीश लुई जैकालियट ने जब भारत की भूरि-भूरि प्रशंसा की और उसे संसार के मतों और सभ्यताओं का उद्गम-स्थान लिखा, तो जर्मनी में उत्पन्न और अंग्रेजी राज्य के वेतनभोगी ईसाई अध्यापक मैक्समूलर ने उसका खण्डन किया। अंग्रेज भारत में शासन करना चाहता था। वह भारतीय गौरव की यथार्थ बात सुनकर भी घबराता था। उसने मैकाले के परामर्शानुसार यह यत्न किया कि भारतीय लोग अपना गौरव भूल जावें। एतदर्थ उसने निम्नलिखित कुछ उपाय वर्ते—

१. भारतवर्ष के इतिहास को कहानी कहा।

२. ब्रह्मा, भृगु, अत्रि, कश्यप, दक्ष, नारद, मनु, चक्रवर्ती भरत, दशरथ, राम, व्यास तथा कृष्ण सब मिथिकल—कल्पित—व्यक्ति कहे गये।

३. जितने ग्रन्थ पुरातन ऋषि महर्षियों के रचित कहे जाते थे, उनके विषय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में कहा गया कि उत्तरकाल में पण्डितों ने लिखकर इन्हें कल्पित ऋषियों के नाम पर मढ़ दिया है।

४. संस्कृत भाषा का महत्त्व नष्ट करने के लिये लाखों-करोड़ों रुपये व्यय किये। एक सर्वथा निराधार "भाषा विज्ञान" नामक विषय पर ग्रन्थ लिखवाये। उसके प्रचार के लिए भारतीय छात्रों और अध्यापकों को इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी और अमरीका आदि स्थानों में भेजा। संस्कृत से विकृत होकर संसार की भाषायें बनीं, इस सत्य को हेत्वाभासों द्वारा असत्य सिद्ध करने का यत्न किया गया और अन्ततः अंग्रेजी भाषा को भारत में प्रमुखता दी।

उसी भ्रान्ति में स्वतन्त्र भारत के अज्ञानी शासक आज भी फंसे हुए हैं।

ब्रिटिश शासक कृतसंकल्प था कि भारत पर विज्ञान के नाम से योरोप की प्रधानता अंकित कर दे। ऐसी परिस्थिति में तीन विचारधारायें यहाँ उत्पन्न हुईं। पहली विचारधारा राजा राम मोहन राय द्वारा प्रचारित ब्राह्म समाज की थी। इसका केन्द्र बंगाल था। देवेन्द्रनाथ ठाकुर के प्रवचनों वा ग्रन्थों द्वारा इस धारा का विस्तार हुआ। बंगाल के अतिरिक्त यह धारा अन्यत्र अधिक नहीं फैल पायी। इसमें अनेक मतों के मिश्रण करने की भावना काम करती है।

राममोहनराय, देवेन्द्रनाथ ठाकुर और केशवचन्द्र सेन संस्कृत के विद्वान् नहीं थे। उन्हें शब्द प्रमाण के मूल सिद्धान्तों का कोई ज्ञान नहीं था। उन्हे शास्त्र का सम्पर्क भी प्राप्त नहीं हुआ था। वेद-ज्ञान तो दूर की बात थी। साथ ही इन सबके ऊपर अंग्रेजी ज्ञान द्वारा प्राप्त ईसाई विचारों की पर्याप्त छाप थी। वे ईसाई मत से बचे, पर अनेक ईसाई विचारों के नीचे दबे रहे। फलतः इनके सब प्रयासों में देश-हित की स्वल्पमात्रा के साथ आर्य-गौरव की भावना का सर्वथा अभाव था।

इन्होंने एक खिचड़ी विचारधारा का आश्रय लिया। ईश्वर-स्वरूप के अज्ञान के कारण इन्होंने ईसाई और इस्लाम की ईश्वर-पूजन-विधि को भी अपने सिद्धान्तों में स्थान दिया और अन्ततः एक 'मिश्रित संस्कृति' की कल्पना खड़ी की।

यह कल्पना आगे चलकर श्री मोहनदास कर्मचन्द गाधी ने अपनाई। इसी कल्पना को इंडियन नेशनल कांग्रेस ने अपनाया।

दूसरी धारा प्रार्थना समाज की थी। यह भी महाराष्ट्र देश के थोड़े से भाग में सीमित रही।

शब्द प्रमाण का अलौकिक दर्शन इनकी समझ से भी परे था। इन्होंने भी ईसाई मत को परे रखने का यत्न किया, पर ईसाई विचारों में से अनेक का इन पर प्रभाव पड़ा।

तीसरी धारा आर्य-समाज की थी। इसके प्रवर्तक सत्यता और स्वच्छ जीवन के अवतार और अपने रोम-रोम में देशहित की भावनाओं से युक्त योग-निष्ठ स्वामी दयानन्द सरस्वती थे। यह धारा उत्तर भारत में पर्याप्त फैली। इसका ध्येय आर्ष-ग्रन्थों का प्रचार, संस्कृत विद्या का उद्धार और वैदिक मत का प्रसार था। पहली दो धाराओं की अपेक्षा यह धारा विशुद्ध रूप से भारतीय थी। इस धारा द्वारा भारत में स्वतन्त्रता प्राप्त करने की उत्कट इच्छा उत्पन्न हुई।

जिस समय अंग्रेजों के तेल और अंग्रेजी की बत्ती से होने वाले एक धुंधले प्रकाश में ब्राह्म समाज और प्रार्थना समाज के उत्साही सदस्य बंगाल और महाराष्ट्र में ईसाइयत की वेगवती तरंग को थोड़ा-थोड़ा रोक रहे थे, उस समय मथुरा के नगर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में विशुद्ध भारतीय स्नेह और विशुद्ध भारतीय बत्ती के उज्ज्वल प्रकाश में एक नेत्रहीन, दण्डी संन्यासी भारतीय ज्ञान की सरिता बहा रहा था। नाम था उसका विरजानन्द। उसके अन्त: नेत्र ज्ञान की रश्मियों से युक्त हो चुके थे। उसने दैवी कृपा से शब्दार्थ सम्बन्ध के नित्य पक्ष को समझ लिया था। वह शब्द-प्रमाण का महत्त्व समझ चुका था। वह महान् वैयाकरण अपनी वृद्धावस्था में भी छात्रों को स्नेहमय होकर विद्या पढ़ाया करता था। उसमें क्षमता थी कि जिस प्रकार पुराकाल में दण्डी स्वामी ने अपने अपूर्व आत्मबल से सिकन्दर के अभिमान को परास्त किया था, उसी प्रकार वह अपने सूक्ष्म ज्ञान से हीन अंग्रेजी प्रभाव को भारत से दूर करे। पर एतदर्थ कोई अलौकिक छात्र उसे मिला नहीं था।

दैव कृपा से दण्डी दयानन्द सरस्वती के रूप में एक छात्र उसे मिल गया। सं० १९२३-२५ तक दयानन्द सरस्वती ने दण्डी स्वामी से मथुरा में विद्या पढ़ी। इस अध्ययन का फल था कि स्वामी दयानन्द सरस्वती को भी शब्दार्थ-सम्बन्ध की नित्यता का यथार्थ ज्ञान हो गया। यह विद्या वेदविदों के अलंकार-भूत भर्तृहरि के निधन के बाद भारत में लुप्तप्राय थी। हिमालय से कन्याकुमारी तक इसकी निर्मल सत्यता को समझने वाले विरले ही थे।

इस विद्या के आधार पर स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की आधार शिला रखी। "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।" यह दयानन्द सरस्वती का सिंहनाद था, जयघोष था। दयानन्द सरस्वती का प्रभाव बढ़ता ही गया। ईसाई और इस्लाम मतस्थ इस प्रभाव से भयभीत हुए।

धर्मविजय का स्वामी दयानन्द सरस्वती का मार्ग नया नहीं था। जिस प्रकार उद्योतकर, कुमारिल, शंकर और उदयन ने बौद्ध आदि मतों को शास्त्रार्थों के द्वारा पराजय पर पराजय दिया था, उसी प्रकार दयानन्द सरस्वती ने ईसाई और इस्लाम वालों को वादों के लिए ललकारा। दयानन्द सरस्वती का तर्क प्रबल था। दोनों मतवादी अपने अन्नदाता अंग्रेज शासकों से शिकायतें करने लगे। अंग्रेज शासक तो था ही वदिक मत का विरोधी। षड्यन्त्र रचे गये। संवत् १९४० में स्वामी दयानन्द सरस्वती कालधर्म को प्राप्त हो गये।

दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना सन् १८७५ में कर दी थी। उनके निधन के बाद आर्यसमाज की नौका के कर्णधार वेद में विश्वास तो रखते थे, पर वेद की नित्यता के दर्शन के सूक्ष्म पक्ष में पूर्ण पारंगत नहीं थे। वे बढ़ते हुए पाश्चात्य प्रभाव को पूरा रोक नहीं सके। भारत के सब विश्वविद्यालयों में वेद का अध्ययनाध्यापन पाश्चात्य पद्धति पर हो रहा है। इस स्वतन्त्रता के युग में भी वही मूर्खता की पद्धति अपनाई जा रही है।

सिखों के दस गुरु वेद मानने वाले थे। वे वेद को परम आदर की दृष्टि से देखते थे, और अपने को वेद मतानुयायी ही समझते थे। वे अपने युग के हिन्दू धर्म के संरक्षक थे, और आमूलचल हिन्दू थे। उन्होंने कोई नया मत खड़ा नहीं किया था। उन दिनों अर्थात् सन्१९०० के आस-पास ब्रिटिश सरकार के भारतीय सेवा दल में अंग्रेज उच्च कर्मचारी मैकाले नाम का था। उसने गुरु ग्रन्थ साहब पढ़ा और पंजाब सरकार और भारतीय सरकार को एक प्रस्ताव भेजा कि सिखों को हिन्दुओं से राजनीतिक दृष्टि से एवं सर्वथा पृथक् जाति के रूप में उपस्थित करने का चक्र चलाना चाहिये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दक्षिण में अंग्रेज सरकार द्रविड़ों को हिन्दुओं से पृथक् कर रही थी। ईसाई और इस्लामी प्रचारकों को बहुविध सहायता देकर अंग्रेजी शासन हिन्दुओं को निर्बल कर रहा था। भारतीय विश्वविद्यालयों में विदेशियों को संस्कृत के महोपाध्याय बनाकर हिन्दुओं के शास्त्र-विश्वास को विज्ञान और तर्क के हेत्वाभासों द्वारा निर्बल किया जा रहा था। उसी दिशा में सिखों की एक पृथक् जाति बनाने का भाव काम करने लगा।

इसके कुछ उत्तर काल में भारत में एक और विचित्र धारा उत्पन्न हुई। इसमें अनेक मतों का मिश्रण था। इसको थियोसोफिकल सोसाइटी के नाम से पुकारते हैं। इसके जन्म-दाता कर्नल आलकाट और मैडम ब्लैवेटस्की थे। उत्तरकाल में मिसिज ऐनीबेसैन्ट इसकी कर्णधार रहीं। इसका केन्द्र स्थान मद्रास रहा है।

स्वनामधन्य, भक्तप्रवर, रामकृष्ण परमहंस मस्त पुरुष थे। उन्होंने अपने अलौकिक आकर्षण से विवेकानन्द को वैराग्य और प्रचार की दीक्षा दी।

प्रखरबुद्धि, उत्साह के पुंज, तपस्या की मूर्ति, वाग्मिता के धनी स्वामी विवेकानन्द ने देश-विदेश में आर्य संस्कृति के अनेक अंशों का अति वेग से प्रचार किया। अमरीका और इंग्लैंड में ईसाई पादरियों ने उनका घोर प्रतिरोध किया। पर संन्यासी का तेज उन पर व्यापक हुआ। हिन्दू धर्म के प्रति अनुराग उत्पन्न कराने में विवेकानन्द का बड़ा भाग है।

विवेकानन्द चिरजीवी नहीं हुए। रामकृष्ण मिशन का प्रचारक उत्पन्न करने का प्रकार श्रेष्ठ और स्तुत्य है। पर इनमें संस्कृत के योग्य विद्वान् अति न्यून हैं। अतः आर्य संस्कृति की रक्षा का काम ये पूर्णरूप से नहीं कर सकते।

संवत् १९७५ से महात्मा गांधी का प्रभाव भारत में बढ़ने लगा। महात्मा गांधी ने एक नई विचारधारा चलाई। उसका आधार आधा भारतीय और आधा विकासमत-पोषक पाश्चात्य विचार था। भारतीय आधार पर उन्होंने अहिंसा और सत्य का प्रचार आरम्भ किया। यह धारा अधिकांश राजनीतिक हो गई। इस धारा में ब्राह्म समाज की मिश्रित संस्कृति का पाठ बड़े उत्साह से होने लगा।

आर्य संस्कृति को मंद और मंदतम करने में फ्रायड और मार्क्स का भी प्रभाव पड़ रहा है। इनके मतों का खंडन करने के लिए वर्तमान काल का कोई समाज-कार्य नहीं कर रहा है। वस्तुतः फ्रायड का मत अति दोषपूर्ण है। उसका सारा तर्क अनुभव और सारहीन है।

मार्क्स का कथन भी निराधार है। सम्पत्ति व्यक्ति की हो सकती है और राज्य की भी और पहले तो राज्य था ही नहीं। तब सम्पत्ति मानव की निजी थी। अतः सूक्ष्म विचार के अनुसार मार्क्स का विचार भी थोथा है।

आर्य संस्कृति के प्रत्यग्र रूप को सामने लाने के लिए इन दोनों के विचारों के निराधार होने का प्रदर्शन करना इस समय अत्यावश्यक है।

आर्य संस्कृति के प्रति पाँडिचेरी के महामना तपस्वी, विद्वान अरविन्द घोश की देन भी न्यून नहीं है। संस्कृत, अंग्रेजी और ग्रीक भाषाओं के अप्रतिम विद्वान् अरविन्दजी अपना दृष्टान्त आप ही थे। उनका धक्का भी वर्तमान युग में अपना काम कर रहा है। खेद है कि उनके अनुयायियों में भी संस्कृत विद्या के अनुपम विद्वान नहीं हैं। उनका काम मात्र अंग्रेजी में होने से वे पिछड़ रहे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मिश्रित संस्कृतिवाद के गुंजाने वाले ब्राह्म समाजी, गांधीवादी और इंडियन नेशनल कांग्रेसी हैं। पर इनमें कोई विद्वान् उत्पन्न नहीं हो रहे। उनमें इतिहास जानने वाले भी नहीं हैं। अतः उनका प्रभाव क्षणिक रहेगा। अंग्रेजी मात्र जानने से भारत में वे पनपेंगे नहीं।

इस युग की दीन, हीन और असहाय अवस्था में भी भारतीय संस्कृति ने संसार पर कई अंशों में अपनी छाप दी है।

भारतीय संस्कृति ने योरोप से टक्कर ले ली है। वह विजयी होकर ऊपर आ रही है। यद्यपि इस समय दशा अधिक उत्साहवर्द्धक नहीं, तथापि भारत का स्वराज्य निस्सन्देह कभी न कभी इसमें सहायक होगा और अगला रूप भविष्य बतायेगा।

आर्यसमाज शताब्दी के प्रचार के लिए

आर्यसमाज के १०० वर्ष

प्रचार पुस्तक का मूल्य केवल १००) हजार कर दिया गया है। यह रियायत केवल हजार लेने पर—
केवल इसी ट्रैक्ट के लिए है।
कम लेने पर १५) सैकड़ा
ही मूल्य होगा।

महर्षि दयानन्द का तिरंगा चित्र

हमारी इच्छा है कि आप के क्षेत्र के प्रत्येक कोने में महर्षि दयानन्द का चित्र दिखायी पड़े। इसलिए हम दीवारों पर चिपकानेके लिए स्वामी जी का सुन्दर चित्र

२०० रु० में हजार दे रहे हैं।

सैकड़े का भाव ३०) है।

हम चाहते हैं कि आप ट्रैक्ट और चित्र १०००—१००० मँगाकर अपने क्षेत्र को दयानन्दमय बना दें।

आर्यसमाज शताब्दी मनाने के लिए

कमर कसकर तैयार हो जाएँ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत की भारतीयता : आधुनिक संदर्भ में

★ डॉ० ह० माहेश्वरी

इधर कुछ वर्षों से हमारे देश में एक विवाद छिड़ा है। एक ओर प्रबल भावना के साथ यह कहा जा रहा है कि हम भारतीय हैं, हमें भारतीयता को बनाये रखना चाहिये ; हमें भारतीय भावना और भारतीय जीवन- शैली की रक्षा करनी चाहिये ; हमारी लोक-व्यवस्था, राज्य-व्यवस्था, अर्थ-व्यवस्था, हमारी भाषा, शिक्षा, कला, हमारा साहित्य, हमारा संगीत और नाट्य सब भारतीय परम्परा और संस्कृति के अनुरूप होना चाहिये। दूसरी ओर से एक प्रबल प्रतिवाद सुनायी पड़ता है कि आज के युग में भारतीयता की दुहाई देना दकियानूसी प्रवृत्ति है, प्रगति विरोधी है, आज का युग विज्ञान और प्रगति का युग है ; इसमें मानव जीवन कहीं से कहीं आगे बढ़ गया है। देश-देशान्तर की सीमाएँ टूट गयी हैं। समस्त पृथ्वी एक घर बन गई है, पृथ्वी तो पृथ्वी, समस्त सौरमंडल के ग्रह एक मुहल्ले के घर होने जा रहे हैं ; अंतरिक्ष-यात्रा के इस युग में किसी प्रकार का देशवाद अथवा राष्ट्रवाद सर्वथा बेसुरा अलाप मात्र है, इसकी कोई तुक नहीं, कोई संगति नहीं ; आज विभिन्न राष्ट्रों और संस्कृतियों के घुलमिल जाने का युग आ गया है; विश्वव्यापी मानवतावाद ही सच्चा आदर्श है; अर्थव्यवस्था, राजनीति, शिक्षा विज्ञान और तकनीक—सब कुछ अन्तर्राष्ट्रीय है; भाषा और संस्कृति, वेषभूषा और संगीत, खान-पान और रहन-सहन सब कुछ समय के साथ बदलता रहा है : प्रगति के इस युग में 'अपनी ढफली और अपना राग' नहीं चल सकता, उसे नहीं चलना चाहिये, नहीं चलने देना चाहिये : सभ्यताओं और संस्कृतियों के उन सभी घेरों को, जो मानव को मानव से अलग करते हैं, तोड़ डालना चाहिये और विश्व-संस्कृति का तेजी से निर्माण करना चाहिये। उस निर्माण में 'भारतीयता' के नाम पर पुरानी संकुचित मान्यताओं, परम्पराओं और रीति-रिवाजों, सामाजिक प्रथाओं और जीवन-शैलियों को बनाये रखना केवल एक मूर्खता होगी, पिछड़ापन होगा, उससे हमारी प्रगति रुक जायेगी, विकास बन्द हो जायेगा, इत्यादि।

समर्थकों की धारणा

भारतीयता का समर्थन करने वालों की प्रबल धारणा है कि कोई भी राष्ट्र अथवा कोई भी जाति सुदृढ़ नहीं हैं, यदि उनकी अपनी संस्कृति नहीं, अपनी सभ्यता नहीं, अपनी नीति नहीं, अपने आदर्श नहीं और अपनी जीवनशैली नहीं, तो उसमें आत्मविश्वास नहीं हो सकता, वह सदा अन्य राष्ट्रों और संस्कृ-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तियों का दास बना रहेगा, सदा दूसरों पर निर्भर, दूसरों का मुंह देखनेवाला, दूसरों के पीछे चलनेवाला रहेगा। ऐसे दुर्बल राष्ट्र में आत्मसम्मान नहीं रहता, आत्मगौरव नहीं रहता। भारत के प्रसंग में विशेषरूप से इतिहास यह बता रहा है कि पिछली कई शताब्दियों में उसकी दासता ऐसी रही जिससे उसका आत्मबल क्षीण हुआ और आत्मबल की क्षीणता से उसकी दासता बढ़ती गई। अतः शताब्दियों की दासता से मुक्त होकर अब यदि भारतवर्ष को आत्मबल, आत्मसम्मान और आत्मविश्वास के साथ अन्यान्य राष्ट्रों की पंक्ति में प्रतिष्ठित रहना है, और उसे रहना चाहिये, तो उसे अपने को बनाये रखना होगा, अपनी भारतीयता को सुदृढ़ करना होगा।

केवल इतना ही नहीं, भारत एक महान राष्ट्र है। उसका भूतकाल गौरवमय रहा है। आर्य जाति एक श्रेष्ठ जाति रही है। उसकी संस्कृति, सभ्यता, धर्म और दर्शन, साहित्य, कला और कौशल, सब कुछ महान् रहा है। विश्व के देशों में भारत का उच्च पद था। उसे अपनी श्रेष्ठता को पुनः स्थापित करना होगा और उसके लिए भारत को भारतीयता की प्रतिष्ठा करनी होगी, आत्मसम्मान के साथ उसमें जीना होगा। यदि हमने ऐसा नहीं किया, यदि हमने इस सत्य का तिरस्कार किया कि भारतीयता की रक्षा करने से ही हमारे भीतर सुदृढ़ आत्मबल रह सकता है तो भारत एक प्रकार से दुर्बल बना रहेगा; राजनीति में उसका अपना कोई तन्त्र नहीं होगा। केवल अन्य राष्ट्रों के तन्त्रों को अपने ऊपर लादता रहेगा : अर्थव्यवस्था में वह अन्य देशों की सहायता का भिखारी रहेगा, उधार माँगता फिरेगा, शिक्षा, कला और शिल्प में दूसरों की नकल करता फिरेगा, वेशभूषा, आहार-विहार और रहन-सहन की शैलियों में केवल दूसरों का अनुकरण करता फिरेगा, उसकी अपनी न कोई भाषा होगी—न साहित्य, न उसका अपना काव्य होगा, न संगीत। नकल, नकल केवल करते-करते वह स्वयं नकली बन जायेगा।

परम्परावाद के नाम पर

'भारतीयता' के विषय में छिड़े हुए इस विवाद के साथ यह भी देखने को मिल रहा है कि एक ओर परम्परावाद के नाम पर रूढ़ियों में जकड़े हुए व्यक्ति क्षुब्ध मन से नयी प्रवृत्तियों को कोस रहे हैं और उसी प्रकार निरुपाय और असहाय हुए दुःखी हैं जैसे कोई दुर्बल व्यक्ति अपने सामने अपनी सम्पत्ति को लुटते हुए देखे और कुछ भी कर न सके। उन्हें इस प्रबल नये युग में सर्वनाश ही दिखायी पड़ रहा है, घोर संकट और कलिकाल की दशा मानकर वे अपने देश में, अपने समाज में सर्वत्र अनीति ही अनीति का उपद्रव देख रहे हैं। दूसरी ओर प्रगतिवाद के नाम पर नयेपन का दीवाना युवावर्ग सभी व्यवस्थाओं और मर्यादाओं को तोड़कर भी यह शिकायत कर रहा है कि उसके चारों ओर जकड़न है, कुण्ठाएँ हैं, ऊब है, एकाकीपन है और उसके जीवन में छायी है एक नीरसता, जिसे दूर करने के लिए वह कोई भी नया उद्योग करने के लिए तैयार है। उसे अब तक की प्रत्येक जीवन-पद्धति जड़ता से भरी प्रतीत होती है और प्रत्येक नयी प्रवृत्ति प्रगति का प्रतीक दिखायी पड़ती है। फिर वह प्रवृत्ति हिप्पियों की मैली कुचैली फूहड़ता में हो अथवा नये प्रकार के नाच-रंग और नशेबाजियों में, उसके लिए अंगीकार्य बन गयी है। वह नयी प्रवृत्ति कहाँ से उत्पन्न होती है, कैसे पनपती है, उसके क्या कारण हैं—ये प्रश्न उसके लिए अनावश्यक जैसे हैं। नयापन अपने आप में अनोखा है, प्रगतिवाद का लक्षण है। वेश और परिधान को लेकर—वह भीषण गर्मियों में चमड़े की जाकिट पहनने में ही अथवा फाड़े हुए पायँचों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की पैबंद लगी जीन की गन्दी कसावटवाली पतलून में हो, रामनामी दुपट्टे से बनाये गये झोलझप्प में हो अथवा माथे पर बाँधी गयी चोर-कत्तर के साथ गले में लटकती हुई अजीब-सी माला में हो, ग्राह्य हैं, अनुकरणीय है। उसी प्रकार कला के क्षेत्र में—रंगों के डिब्बों को अनायास कागज पर उड़ेल कर लीप देने से बनाया गया अचित्र हो अथवा किसी किले के खण्डित कोने की उघड़ी हुई ईंटों से किसी की मुस्कान की उपमा देने में कविता का नया प्रयोग हो, पीड़ित मानवता के चीत्कार को करुणा का नहीं, व्यंग्य अथवा ईर्ष्या का विषय बनाने का नाट्य प्रसंग बनाने की चेष्टा हो अथवा गीदड़ के रुदन और गदहे की रेंक को संगीत में शामिल कर लेने का नया प्रयोग हो, ऐसे सभी प्रयास आकर्षक हैं, प्रगति के लिए उत्तेजक हैं। इतना ही नहीं, मानव सम्बन्धों के प्रसग में माता-पिता और भाई-बहन को आकस्मिक मानकर अस्वीकार कर देना अथवा मित्रद्रोह के अनुभवमात्र के लिए मित्रद्रोह कर पाना, विचारहीन सहज व्यवहार का रस लेने के लिए किसी को भी अकारण अपनी गोली से उड़ा देना अथवा नित्य नया सहभोगी ढूंढ़ना, स्वयं किसी का भी नहीं होना और सभी से अपने एकाकी होने की शिकायत करना—ये हैं कुछ ऐसी नयी प्रवृत्तियाँ जिनका अंधे होकर अनुकरण करना युवावर्ग की प्रगति का लक्षण जैसा माना जाने लगा है।

ऐसी परिस्थिति में पुराणपंथी अपना माथा ठोककर ऐसा रोता है मानो उसका भाग्य उजड़ गया हो, उसके घर में आग लग गयी हो; और प्रगति का पागल दीवाना ऐसा भ्रान्त घूमता है मानो उसका अपना कोई ठिकाना, कोई घर हो ही नहीं।

> अपने ही घर को वह समझा कि कैदखाना है,
> उससे भागा पता चला कि सब बेगाना है।

यह है समाज की वह बिखरती दशा जिसे सब दुःखी और निरुपाय होकर देख रहे हैं; और अपने को नहीं दूसरों को ही उसके लिए जिम्मेदार ठहरा रहे हैं।

आश्चर्य नहीं

जो भी हो, जीवन की इस दुर्गति पर दुःख और चिन्ता स्वाभाविक है किन्तु आश्चर्य नहीं। आश्चर्य तो सचमुच तब होता जब यह दुर्दशा न हुई होती। परन्तु यह दुर्गति कितनी भी गम्भीर क्यों न हो, इसे सर्वनाश की स्थिति मानकर निराश हो जाना न युक्ति-संगत होगा न बुद्धिसम्मत। कारण सब मिलाकर यह दशा सभी के लिए—पुराणपंथी के लिए भी, प्रगतिवादी के लिए भी—एक गहरा असंतोष लेकर आयी है और यह सिखाना चाहती है कि परम्परा का मोह हो अथवा प्रगति का, मोह तो मोह होता है, वह अंधा बना देता है और जकड़नों से मुक्त नहीं होने देता। वे जकड़नें पुरानी पद्धतियों की हों अथवा नये आकर्षणों की, दोनों ही मनुष्य को मानसिक गुलाम बना देती हैं। मनुष्य को प्रबुद्ध होना होगा, प्रबुद्धता से ही उसकी मानसिक दासता दूर हो सकती है, इसी से उसकी सच्ची उन्नति हो सकती है, इसी से परम्परागत प्राप्ति की रक्षा भी हो सकती है और इसी से अधिकाधिक प्रगति भी हो सकती है।

प्रबुद्ध होकर यदि हम भारत की भारतीयता पर विचार करेंगे तो निःसंदेह हमें कुछ बड़े ही गहरे तथ्य प्राप्त होंगे और उनके प्रकाश में यह स्पष्ट होगा कि भारतीय इतिहास और उसके युग-युग के अनुभव से प्राप्त कुछ ऐसे सिद्धान्त हैं, कुछ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऐसे सूत्र हैं जिनकी अवहेलना करके न हम अपनी परम्परा में सुदृढ़ रह सकते हैं, न प्रगतिशील बन सकते हैं।

जीवन के गहनतम तत्त्वों का उद्घाटन करें तो यह रहस्य स्पष्ट होगा कि प्रत्येक प्राणी, प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक जाति अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार विकसित होती है, प्रत्येक का स्वभाव भिन्न-भिन्न होता है, सम्भावना उसका अनुभव और प्रयोग और उसकी क्षमता और उसकी गतिपथ, सब कुछ उसकी विशेष प्रकृति के अनुसार होता है। इस विशेषता का न तो यह अर्थ है कि किसी भी व्यक्ति अथवा जाति की अन्य व्यक्ति अथवा जाति के साथ किसी प्रकार की भी कोई समानता नहीं होती और न यह तात्पर्य कि सब की प्रकृति इतनी कड़ी होती है कि उसमें परिवर्तन, कोई परिमार्जन होता ही नहीं। यदि ऐसा होता तो कोई विकास सम्भव न होता। एक बगीचे में अनेक प्रकार के पेड़-पौधे होते हैं, यद्यपि उन सब में समान रूप से वनस्पति जीवन है, तो भी अपने आकार-प्रकार में, अपनी फूल-पत्तियों और फलों में वे एक-दूसरे से भिन्न और विशिष्ट होते हैं, जल, खाद, हवा इत्यादि से सम्बन्धित उनकी आवश्यकताएँ अपनी-अपनी होती हैं, उनका सब विकासक्रम भी अपनी-अपनी विशेषता के अनुसार होता है। पशु जीवन में भी यही बात है, मनुष्य जीवन में भी। व्यक्ति-व्यक्ति की और जाति-जाति की विशेषता होती है, उसी के अनुसार उसका स्वाभाविक विकास होता है, उस विशेषता की अवहेलना करके अस्वाभाविक प्रकार से किसी की नकल करके किसी भी व्यक्ति अथवा समाज का सही विकास नहीं हो सकता।

भारत की विशेषता

भारत की अपनी एक विशेषता रही है, इस तथ्य को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। उसको अस्वीकार करना इतिहास के प्रति आँख बन्द कर लेने जैसा है; किसी भी सचेत व्यक्ति के लिए यह असम्भव है। भारत की यह विशेषता, जो युगान्तर से चली आ रही है, उसके जीवन-दर्शन में, उसके धर्म और उसकी संस्कृति में, उसकी कला और साहित्य में अभिव्यक्त है: श्री अरविन्द के अनुसार वह है **सम्पूर्ण जीवन को अन्तरात्मा के साथ संयुक्त करके उसी के ज्ञान के प्रकाश में उसे देखना, उसी की प्रेरणा से उसका संचालन करना और उसी के रस से उसे रंग देना।** जीवन का यह सम्पादन ऊपरी, सतही, बाहरी वृत्तियों से नहीं आन्तरिक, गहनतम, गूढ़ सत्यानुभूतियों से होता है: यही यहाँ की विशेषता है। निश्चय ही भारत की यह विशेषता यहाँ की कोई बंधी-कटी रीति नहीं है, रिवाज नहीं है, यह कोई बाहरी साँचा नहीं है, ऊपरी ढाँचा नहीं है: **यह यहाँ की जीवन शक्ति है, यहां का जीवन-सिद्धान्त है, अन्तःप्रेरणा है, प्रबल सामर्थ्य है। इसमें स्वस्थ स्फूर्ति है, आदर्श की विशालता है, सत्य का स्वागत है, प्रगति का उत्साह है।**

भारत की इस विशेषता को नहीं समझ पाना और भारतीयता को केवल किन्हीं प्रथाओं में संकुचित करके देखना एक प्रकार का अंधापन है। पुराणपंथी वृत्ति से यदि हमने अपने को किन्हीं प्रथाओं में बाँध लिया और नित्य सत्य का अनादर किया तो यह वैसे ही होगा जैसे किसी जीवित गुरु की अवज्ञा करना और उसकी मूर्ति को पूजना। उसी प्रकार अंधी प्रगतिवादी वृत्ति से यदि हमने अपने को बैचेन बनाया और स्वभाव और स्वरूप में विकसित होनेवाली अपनी अन्तःप्रकृति की अव-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हेलना की, तो वह वैसे ही होगा जैसे कोई अपनी शक्ल को आये दिन बदलने के लिए भाँति-भाँति के नकली चेहरे चढ़ाता फिरे।

परम्परावादी यदि हृदय से चाहते हैं कि भारत की भारतीयता अक्षुण्ण बनी रहे तो उन्हें भारतीय संस्कृति के शाश्वत तत्वों का अनुसंधान करना होगा, जीवन में सत्य का सदा स्वागत करना होगा, सनातन और सामयिक के बीच विवेक करना होगा। वस्तुत: आध्यात्मिक ज्ञान और शक्ति के नित्य सिद्धान्त युग-युग की बदलती हुई परिस्थितियों में बदलती हुई जीवन-शैलियों और पद्धतियों का समाहार और सदुपयोग कर सकने में समर्थ होते हैं, उनसे वह नष्ट नहीं होते, विकृत नहीं होते। भारत की भारतीयता मूलत: इन्हीं सजीव सिद्धान्तों में है। निश्चय ही वह अभी और भी समृद्ध और समर्थ होने को है ; भविष्य उसकी प्रतीक्षा में है। साथ ही उसके कुछ ऐसे तत्त्व भी हैं जिनसे समस्त मानवजाति को लाभान्वित होना है।

अपरंच, यदि प्रगतिवादी सच्ची प्रगति के इच्छुक हैं तो उन्हें प्रगति के उस सच्चे स्रोत को अपने भीतर ढूंढना होगा, जिसका सम्बन्ध उनकी अन्त:प्रकृति से है, उस अन्त:प्रकृति से जिससे उनके स्वभाव का, उनकी क्षमताओं का, उनकी योग्यताओं का आज तक विकास हुआ है और आगे भी होगा। अपने स्वभाव और स्वरूप को छोड़कर प्रगति की आशा उतनी ही मिथ्या है जितनी किसी पौधे की जड़ों को उखाड़कर ऊपरी प्रयासों से उसके विकास की चेष्टा। निश्चय ही प्रगति में परिवर्तन होगा, होना ही चाहिये। जड़ दशा को, स्थिरता को अथवा कोल्हू के बैल की तरह घूमते रहने को, किन्हीं बंधे-कटे रीति-रिवाजों और जीवन शैलियों में संकुचित हो जाने को प्रगति नहीं कहा जा सकता, वस्तुतः वह सब तो प्रगति विरोधी ही है। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि परिवर्तन के नाम पर अंधे होकर अपना आपा गंवा देने का नाम प्रगति है : उससे प्रगति तो दूर अपना अस्तित्व ही मिट जायेगा। यदि परिवर्तन प्रगति का एक लक्षण है तो सबलता, सामर्थ्य, समृद्धि, सम्पन्नता, आत्म-निर्भरता, आत्म-विश्वास उसके अन्यान्य लक्षण हैं। सच्ची प्रगति होती है अपने विकसित होने से न कि विद्रूप हो जाने से। स्पष्ट है कि अपने आपको गंवा देने से, अपने सच्चे स्वरूप का तिरस्कार करके दूसरों का अंधे होकर अनुकरण करने से, असल का निरादर करके नकल को अपनाने से परिवर्तन तो आ जायेगा किन्तु प्रगति के अन्य सभी लक्षण लुप्त हो जायेंगे। शेर को घास दिखाकर भूखा मारा जा सकता है, और घोड़े के सामने मांस के टुकड़े डाल-डालकर उसे बीमार किया जा सकता है, परिवर्तन दोनों में आ जायेगा किन्तु प्रगति का नाम नहीं होगा, उसके स्थान पर मृत्यु खड़ी दिखायी देगी।

१९७५ की वैदिक डायरी

संगाइए : बाँटिए

संध्या—हवन—भजन और एक मंत्र प्रतिदिन का।

मूल्य : सजिल्द : ३००) सैकड़ा
अजिल्द : २२५) सैकड़ा

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हास्य-व्यंग्य

बूंदी का किला सर हो गया

बोपदेव ने नगर की दीवार पर लगा एक पोस्टर पढ़ा। बार-बार नजरें गड़ाईं, दृष्टि घुमाई और फिर मन-ही-मन बड़बड़ाए, पोस्टर पर दृष्टि गड़ाए कुछ अकड़े, अपने ही मानसिक ऊहापोह के जाल में जकड़े पुनः जा चढ़े, माले-मुफ्त दिले बेरहम की तरह इस्तेमाल में लाई जा रही पराई कार में, जो नगर के एक भद्रजन के दरबार में वर्षों तक भरे पानी की मेहरबानी है। सफेद नहीं उस ताम्रवर्ण लघु हाथी को अपने पर सवार पाकर चालक के इशारे पर बढ़ चली। उदारता में मिली इस सवारी को अपनी मिलकियत समझने वाले बोपदेव ने चालक को कहा—ले चलो···मैदान। वहीं जो अपना दोपहर का ठिकाना है।"

गाड़ी चलती गई, बोपदेव योजनाओं का तान वितान पूरते गए। उन्हें बार-बार एक ही विचार मारे जा रहा था। अरे कहीं अमुक संस्थान का कार्यक्रम सफल हो गया, तो मेरी अनेक बार कटी-फटी नासिका एक बार पुनः कट जाएगी। अपने इन्हीं विचारों में खोए-खोए बोपदेव कुछ ही क्षण के बाद मैदान के सामने एक शानदार भवन के द्वार पर उतर पड़े। सीढ़ियाँ चढ़ और ऊपर की मंजिल में जा विराजे। घुमावदार कुर्सी, जो असली अधिकारी की अनुपस्थिति में खाली थी, आपने हथिया ली और फिर आपका हाथ अनायास ही, नहीं-नहीं जान-पूछ कर घंटी पर जा पड़ा। टनटनाहट हुई--बोपदेव की लीला में ट्वेन्टीफाइव के शेयर होल्डर हैं पधारे और बोल उठे, 'जी महाराज'! कहिए।' अरे तुम तो कहते थे कि अब तो उस संस्था की ओर कोई फटकेगा भी नहीं। मैंने सभी जगह फोन कर दिए हैं। सभी के कान पूरी तरह भर दिए हैं। फिर यह क्या कि जो पोस्टर उस संस्था की ओर से लगा है, उसमें तो कई प्रमुख जनों के नाम हैं। और तो और हमारे एक बड़े जन का भी नाम उसमें सजा है। आखिर यह क्या वजह है। तुम अभी फोन मिलाओ, भोलेनाथ को बतलाओ और यह भी जतलाओ कि आप अपने गैरों की ही नहीं, बल्कि अपने हरीफों की महफिल को आबाद करने जा रहे हैं।

ट्वेन्टीफाइव के हिस्सेदार बटमार दत्त बोले, "अजी पोस्टरों पर न जाइए, तनिक देखते तो जाइए। आप तो षड्यन्त्र चूड़ामणी हैं। उस शास्त्र के पारंगत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
शास्त्री तो कई हैं, किन्तु आप तो आचार्य हैं। फिर आपकी बड़ी-बड़ी पहुँच है। तनिक जिन-जिनके नाम हैं, उन्हें बिदकाइए। इधर-उधर की मिलाइए, अपना रंग जमाइए।"

"अच्छा वटमार चंद फिर तुम अपना काम करो। छोटे-मोटे कार्यकर्ताओं के कान भरो। मैं फिर तुम्हारी सलाह और अपनी बुद्धि दोनों का प्रयोग करूँगा।

और शुरू हो गया टेलीफोनों का सिलसिला। उस कार्यक्रम के द्वारा प्रकाशित भगवद्वाणी ग्रन्थ के विमोचनकर्ता के यहाँ रहा, "जी आप कहाँ जा रहे हैं। वहाँ तो कोई भी नहीं आएगा। वे तो भद्रजन ही नहीं, भद्रता की ठेकेदारी तो हमारी है। हमारी ही पुस्तक असली है, उनकी तो नकली है।"

सुनने वाले ने सुना और सोचता रहा ये कैसे संगठनकर्त्ता मानव मात्र के कल्याणकर्त्ता हैं। नारा तो एकता का लगाते हैं फिर अनेकता का राग गाते हैं।

फिर भी उन्होंने कार्यक्रम के आयोजकों से पूछा। वे सीधे-साधे बेचारे उन्होंने कहा, "जी यह काम तो प्रभु का है। भगवान का है। जो भगवान के प्रति अनुरक्त हैं, वे सभी हमारे हैं। वे तो आएंगे। रहे विरोध करने वाले उनसे भी हमें शिकायत नहीं। आप आइए। उनकी घोषणा की सदाकत जान जाएंगे। तथ्य को पहचान जाएंगे।"

कार्यक्रम निर्धारित समय पर संपन्न हुआ। सभी आमंत्रित जन आए। उन्होंने नारों की नहीं कार्य की सराहना की। पावन ज्ञानधारा को प्रवाहित करने की दिशा में हो रहे कार्य से वे भी प्रभावित हुए।

और अगले दिन देश के सभी समाचार पत्रों में था समाचार। पढ़ा तो बोपदेव को आँखें फटी-की-फटी रह गईं। चौकड़ी जमी—जी भर एक-दूसरे को कोसा। अपना मन मसोसा। अंत में चक्रान्त चूड़ामणी से अब तक प्रभावित रहे बड़े आदमी ने बोपदेव से कहा, 'क्या हुआ तुम्हारी योजनाओं को। लम्बे-चौड़े कमरे में की गई घोषणाओं का। कोई तो रुका नहीं, झुका नहीं। तुमने सैकड़ों टेलीफोन कर दिए। पर नतीजा वही ढाक के तीन पात।"

चक्रान्त चूड़ामणी सकपकाए। कुछ हिले, कुछ डोले और फिर मिमियाते हुए बोले, "जी! मैं क्या करता। किस-किस का पानी भरता। कहाँ कहाँ जीता-मरता। खैर एक मौका और दीजिए। अब की बार मैं निपटाए देता हूँ किस्सा। फिर दीजिएगा मेरा हिस्सा।'

"क्या करोगे। अब क्या स्वाँग भरोगे?"

बोपदेव बोले, "एक हफ्ते ठहर जाइए। मुझे एक बार और आजमाइए। इस बार तो मैं बूंदी का किला तोड़ ही दूंगा। सारे फेपदेवों को पीछे छोड़ दूंगा।

और फिर एक हफ्ते बाद। वे एक साप्ताहिक की प्रति हाथ में लिए बड़े बॉस के श्री चरणों में उपस्थित हुए। उन्होंने कुछ देर तक देखा नहीं, नजरें न उठाईं, अपनी आँख बोपदेव पर न गड़ाईं, तो फिर बोपदेव कुछ खाँसे। बॉस ने नजरें उठाई और बोले, "क्यों बोपदेव क्या बात है? कैसे आए हो। क्या फिर मुँह की खाई है?"

"जी नहीं, इस बार तो मैंने बूंदी का किला तोड़ ही दिया है। अपनी सफलता में एक और पन्ना जोड़ दिया है। पत्रकारिता के इतिहास में नया पृष्ठ जोड़ दिया है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"अरे बोपदेव तुम पत्रकार कब से हो गए ?" बॉस ने पुनः प्रश्न किया।

जी आप नहीं जानते कि मेरे नाम से कितने लेख छपते हैं। कई पुस्तकें ऊपर नीचे के पन्ने उलट-पलटकर अपनी बना चुका हूँ। उन्हें माले-मुफ्त दिले-बेरहम के सहारे छपवा चुका हूँ।"

"अरे हाँ मैं जानता हूँ। तुम्हारी काबलियत पहचानता हूँ। इसीलिए तो तुम्हारा भत्ता बांधा है। अब अपना करिश्मा तो दिखाओ।"

"जी तो देखिए यह साप्ताहिक।"

बॉस ने देखा तो बोले, "अरे यह तो अपना ही है। इसमें क्या किया है। कौनसी है तुम्हारी कारगुजारी। जिस पर यहाँ तक आ पहुँची है तुम्हारी सदारी।"

"मालिक यह पढ़ो!"

"अरे तुम ही सुना दो।"

तो सुनिए। मैंने देश-विदेश के समाचारपत्रों में प्रकाशित 'उनके' समाचार को इस रूप में दिया है। उसमें से उस संस्थान के साथ लगा नाम काट दिया है। देखिए नींव भले ही न हटा सकूँ पर 'चोटी' तो काट दी है।"

बॉस ने निहारा। बोले, 'यह क्या कलाकारी है। इसी के लिए एक हफ्ते का समय चाहते थे?"

"जी बूंदी के दुर्ग की बुर्जी तो मैंने गिरा दी है अब आगे की आप जानें।"

बॉस था कुछ ज्ञानी। कहा, "अरे बुद्धि के हिमालय! यह क्या बहादुरी है। तूने तो उसी का नाम काट दिया, जिसके नाम पर हमारी चौधराहट जनता जनार्दन में थोड़ी बहुत जमी है।"

बोपदेव बोला, "जी मैं क्या करता! किला आपने तुड़वाना था। प्रतिज्ञा आपको पूरी करनी थी। आज कागज पर तोड़ दिया है। पुख्ता किला तोड़ने की प्रतिज्ञा भले ही पूरी न हुई हो। हम सभी कागजों के सहारे जीते हैं। मैंने भी कागजी कार्रवाई तो कर ही दी है। अब आगे आप जो कहेंगे वही करूंगा। आपके घर का पानी भरूंगा।"

बॉस क्रुद्ध हो उठा था बोल उठा, "शट-अप। बस-बस।"

बोपदेव भागे। ऐसे बेतहाशा कि पराई गाड़ी जो लोगों पर रोब डालने के लिए लाते हैं, उसमें चढ़ना भूल गए और आ खड़े हुए बस स्टाप पर। एक बस आई 'डान्ट स्टाप।' दूसरी 'रन थ्रू' तीसरी भी न रुकी। और बोपदेव चौथी को देखते ही पागल के समान पीछे दौड़े और चिल्लाते रहे "बस-स्टाप-बस-स्टाप बस-स्टाप।"

घंटा भर इसी मुद्रा में खड़े और टहले। और फिर सड़क से घोषणा करते हुए चीखे, "मैंने उनका नाम मिटा दिया है, हटा दिया है। मैंने बूंदी का बुर्ज गिरा दिया है।

—दिग्दर्शनानन्द

वढ़िया, सुन्दर, सुनहरा, आकर्षक—सफेद कागज पर छपा
सत्यार्थ प्रकाश ३२५) सैकड़ा मंगायें।
ानन्द संस्थान, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संस्कृत का पाश्चात्य अध्ययन

—श्री पं० देवीरत्न अवस्थी 'करील'

इतिवृत्तों के अनुसार पाश्चात्य विद्वानों में संस्कृत के अध्ययन का आरम्भ, ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासनकाल में, कलकत्ते के उच्चन्यायालय के विचारपति सर विलियम जोन्स द्वारा किया गया था। सर विलियम जोन्स एक प्रतिभाशाली विद्वान् थे। उन्होंने अपने न्यायालय में प्रस्तुत किए गए वादों पर यथोचित निर्णय देकर उन्हें शीघ्र निपटाने के लिए यह अनुभव किया था, कि भारतवर्ष के न्यायाधीश को संस्कृत जाननी ही चाहिए।

आज से लगभग दो सौ वर्ष पहले, एक विधर्मी व्यक्ति को, चाहे वह कितने ही उच्चपद पर प्रतिष्ठित हो, संस्कृत पढ़ाने का साहस करना, किसी भी संस्कृत के विद्वान के लिए, एक असम्भव-सा कार्य था; क्योंकि उस युग का भारतीय समाज ऐसे विषयों में अत्यन्त असहिष्णु था।

उन दिनों ईस्ट इण्डिया कम्पनी की पूजा, उगते हुए सूर्य की पूजा थी; इसलिए बंगाल के बड़े-बड़े राजारथी, अपने महाप्रभुओं के उच्चन्यायालय के मुख्य न्यायाधीशों की सेवा में, किसी योग्य पण्डित को भेजने के लिए तत्पर हो उठे। वेतन सौ रुपए मासिक। आने-जाने के लिए पालकी की निःशुल्क व्यवस्था। अध्यापन का समय केवल एक घण्टे प्रतिदिन का।

जब आज की महँगाई में भी ऐसी गुरुदक्षिणा आकर्षक प्रतीत होती है, तो अठारहवीं शती के अन्तिम चरणों में वह कितनी आकर्षक रही होगी, सोचिए! पर उस युग का भारतीय पण्डित भी किसी दूसरी ही जीवट का था। ब्राह्मण, म्लेच्छ का गुरु बने! बात चाहे जितनी संकीर्णतापूर्ण हो, पर उसके पीछे एक विशिष्टता तो थी ही। उसके पीछे यह तो था ही, कि अंगरेज जाति अभारतीय हैं; और उसका आचार-विचार तथा उसकी जीवन-पद्धति भारतीयता के विपरीत है; अतः भारतीय विद्वान् उससे निकट का सम्पर्क कैसे स्थापित करे? बंगाल के राजाओं के प्रयत्न सफल नहीं हो रहे थे। प्रबल और प्रचण्ड सामाजिक बहिष्कार का सामना करने का साहस किसी में होता है कभी!

लगातार प्रयत्न होते रहे। अन्त में रामनाथ वैद्य नामक एक पण्डित मिल ही गए। वैद्य जी चिकित्सक नहीं थे। वैद्य, उनके कुल का पद मात्र था। वे उच्चकोटि के पाण्डित्य के कारण विद्याभूषण कहे जाते थे। उनके मन में भी यह बात कसक रही होगी, कि वे गोपूजक होकर भी, एक गोभक्षक को संस्कृत पढ़ाने का दुष्कर्म करने जा रहे हैं। ऐसा लगता है; कि अपनी उस कसक को मिटाने के लिए ही, गुरुदेव ने अपने अभारतीय शिष्य पर ऐसे प्रतिबन्ध लगाये, जिनको सुनकर, किसी भी व्यक्ति का चित्त डगमगा सकता है। पर, सर विलियम जोन्स थे अद्भुत पुरुष! उन्होंने अपने गुरु द्वारा लगाए हुए सारे प्रतिबन्ध स्वीकार कर लिए। अब इन प्रतिबन्धों का भी स्वरूपदर्शन कर लीजिए—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१. विद्यार्थी अपने अध्ययन काल की सारी अवधि में ब्रह्मचर्य व्रत धारण करेगा।

२. विद्यार्थी अपने अध्ययन काल की सारी अवधि में न तो मांस भक्षण करेगा और न सुरापान ही।

३. विद्यार्थी अध्ययन प्रारम्भ करने से पहले गंगाजल से स्नान करेगा; और अध्ययन के लिए कुशासन पर ही बैठेगा।

४. विद्यार्थी के घर पर, अध्यापन से निवृत्त होकर, गुरुदेव द्वितीय स्नान करेंगे; जिससे उनका म्लेच्छसम्पन्न का दोष शान्त हो सके। इस स्नान के लिए, शिष्य को नित्य गंगाजल मँगवाना होगा।

सर विलियम जोन्स ने इन चारों प्रतिबन्धों का पालन, ठीक उसी प्रकार किया, जैसे महात्मा गांधी अपने कारावासकाल में, अधिकारियों लगाए गए प्रतिबन्धों का पालन करते थे। उन्होंने अपनी धर्मपत्नी को स्वदेश भेज दिया। वे निरामिषभोजी बन गए; और उन्होंने मदिरापान भी सर्वथा त्याग दिया।

गुरु और शिष्य दोनों को जैसी भी हिन्दी आती थी, वही शिक्षा का माध्यम बनी। इस प्रकार लगातार दो बरस संस्कृत के लिए तपस्या करके, सर विलियम जोन्स अच्छे संस्कृतज्ञ बन गए। संस्कृत का अध्ययन प्रारम्भ करने से पहले, उनकी यही धारणा थी, कि संस्कृत में विधि-निषेधों से भरा हुआ, प्राचीन परम्पराओं का पोषक, कुछ साहित्य है पर जब उन्हें अपने गुरु से यह ज्ञान हुआ, कि संस्कृत में नाटक भी हैं, तो उन्होंने कालिदास का सुविख्यात नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तलम' पढ़ा। सर विलियम जोन्स, कालिदास की इस कृति पर इतने मुग्ध हुए, कि उसका उन्होंने अंग्रेजी में अनुवाद कर डाला। अपने इस अनुवाद का प्रकाशन भी उन्होंने कराया; जिसे पढ़कर जर्मन भाषा के मूर्धन्य कवि गेटे ने 'अभिज्ञान शाकुन्तल' की प्रशस्ति में जो छन्द लिखा था, वह अभिज्ञान शाकुन्तल की भांति ही अद्भुत और अपूर्व है।

सर विलियम जोन्स के किए हुए इस अंगरेजी अनुवाद के माध्यम से, जब कालिदास यूरोप में प्रविष्ट हुए, तो उस महाद्वीप के सारे देशों में संस्कृत के अध्ययन की होड़-सी लग गई। कल्पना कीजिए, उन कालिदास की, जिनकी प्रतिभा से मुग्ध होकर, विश्व में सभ्यतम कहे जाने वाले यूरोप के देशों के विद्वानों में, संस्कृत के अध्ययन की प्रेरणा जाग उठी।

संस्कृत साहित्य के प्रत्येक क्षेत्र में यूरोप के विद्वानों ने प्रवेश किया। उन्होंने वेदों, ब्राह्मण ग्रन्थों, उपनिषदों, पुराणों, रामायण तथा महाभारत पर ही नहीं, संस्कृत के व्याकरण और कोषग्रन्थों पर भी कार्य कर दिखाए।

जर्मनी के लुडविग, ओल्डनवर्ग, ग्रासमान, वेबर, राथ और मैक्समूलर, फ्रांस के लांगलोआ, इटली के आउफरेख्त, इंग्लैंड के विल्सन, हाग, मैकडानल, पार्जिटर, ग्रिफिथ और कीथ आदि सैकेड़ों यूरोपीय विद्वानों ने वेदों और संस्कृत साहित्य की भिन्न-भिन्न शाखाओं पर ऐसी महत्त्वपूर्ण रचनाएं प्रस्तुत कीं, जो अप्रतिम कही जा सकती हैं। इन सारी रचनाओं की चर्चा इस लेख में सम्भव नहीं है। इस स्थल पर केवल इतना संकेत देना ही पर्याप्त होगा, कि ग्रिफिथ के द्वारा किए हुए चारों वेदों के अंग्रेजी पद्यानुवाद सारे अंग्रेजी जानने वाले देशों में पढ़े जाते हैं। आउफरेख्त का केटलागस केटलागरम, संस्कृत साहित्य का ऐसा प्रामाणिक विश्वकोष है, जिसकी प्रामाणिकता कभी समाप्त नहीं हो सकती।

यूरोप के देशों की सरकारें ऐसे विद्वानों को भूतकाल में जिस प्रकार का राजाश्रय देती थीं, वैसा ही राजाश्रय वहां के आधुनिक संस्कृतवेत्ता, आज के इस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

युग में भी प्राप्त कर रहे हैं। उसकी तुलना में भारतवर्ष की सरकार ने, स्वराज्य के उपरान्त भी, संस्कृतज्ञों को प्रोत्साहित करने के लिए कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं किया। इन पंक्तियों के लेखक ने, इस भावना से, कि संस्कृति की सम्पदा हिन्दी में भी उतर पड़े, कालिदास के सभी काव्यों और नाटकों के समश्लोक हिन्दी रूपान्तरण किए। उसने सम्पूर्ण वाल्मीकि रामायण का हिन्दी में समश्लोक पद्यानुवाद किया। उसने किरात, माघ, नैषध और गीतगोविन्द जैसे विलक्षण काव्यों के समश्लोक और समतुल्य सरस हिन्दी पद्यानुवाद किए। उसने सम्पूर्ण ऋग्वेद और सामवेद के भी सुललित हिन्दी पद्यानुवाद किए। यदि उसका जीवन रहा तो प्रकाशन के अभाव में भी वह यजुर्वेद और अथर्ववेद के वैसे ही प्रभावी पद्यानुवाद करेगा। पर उस हिन्दी में, जो भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा है; हिन्दी में जिसका विश्व सम्मेलन मनाया गया है; वेदों के, वाल्मीकीय रामायण के, कालिदास के, और संस्कृत के मूर्धन्य महाकवियों के काव्यों के इन हिन्दी पद्यानुवादों के लिए, प्रकाशक नहीं मिलता। केन्द्रीय सरकार और प्रान्तीय सरकारें अनुवादक की प्रार्थना पर मौन हैं।

पाश्चात्यों द्वारा किए हुए संस्कृत के अध्ययन और लेखन से, सारे संसार में संस्कृत भाषा और उसके साहित्य की महत्ता बढ़ी है। पर उन्होंने इस विपुल साहित्य के सम्बन्ध में काल निर्णय सम्बन्धी जो भूलें की हैं, उनका निराकरण भारतीय विद्वानों को करना चाहिए। इस सन्दर्भ में अधिक अशोभनीय बात यह है, कि हमारे देश के सामान्य संस्कृतज्ञ ही नहीं, प्रत्युत बड़े-बड़े विद्वान भी, पाश्चात्यों के इन भ्रान्त निर्णयों को, स्वतः प्रमाण की भांति, स्वीकार करते चले जा रहे हैं।

पाश्चात्य विद्वानों की इस प्रकार की भूलों में केवल एक पर ही इस समय विचार कीजिए; जिससे इस लेख का कलेवर बहुत अधिक न बढ़े। पाश्चात्यों का ब्रह्मास्त्र है, भाषाविज्ञान। भाषाविज्ञान के आधार पर ही वे स्थिर कर चुके हैं, कि ऋग्वेद के सैकड़ों वर्षों के उपरान्त अथर्ववेद की रचना हुई। भाषा विज्ञान के आधार पर की गई स्थापना के विरुद्ध कुछ भी कहना, हमारे देश में मूर्खता का द्योतक समझा जाता है; जबकि स्वयं भाषा विज्ञान का अध्ययन ही अब तक अपरिपक्व अवस्था में है।

भाषा विज्ञान के आधार पर स्थित इस मत पर सरल दृष्टि से विचार करना अधिक अच्छा होगा। यदि आप भाषा की भिन्नता के कारण, यह समझने लगें, कि रामचरितमानस और कवितावली की भाषा एक-दूसरे से भिन्न है, इसलिए कवितावली तुलसीदास की रचना नहीं है; तो यह कितनी बड़ी भूल होगी। यदि बाईसवीं शती के विद्वान यह मत स्थिर करें, कि प्रियप्रवास में "रूपोद्यान-प्रफुल्लप्राय कलिका राकेन्दु-बिम्बानना" लिखने वाले हरिऔध जी से सौ बरस बाद उत्पन्न होने वाले किसी कवि ने उस ग्रन्थ में "सरस सावन सुन्दन मास था" जैसे पद बनाकर जोड़ दिए, तो क्या भाषा विज्ञान के आधार पर किया गया ऐसा निर्णय निर्भ्रान्त होगा!

इसी बीसवीं शताब्दी की भारत भारती का भी, इसी सन्दर्भ में स्मरण कर लीजिए; जिसका पहला छन्द इस प्रकार है—

मानस-भवन में आर्यजन जिनकी उतारें आरती
भगवान भारतवर्ष में गूँजे हमारी भारती
हे भद्रभावोद्भाविनी! हे भारती! हे भगवते!
सीतापते! सीतापते! गीतामते! गीतामते!

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस ऊपर के छन्द से ऊपर के दोनों चरणों की भाषा, नीचे के दोनों चरणों की भाषा से भिन्न है। भाषा विज्ञान के आधार पर भविष्य का कोई भी भाषा वैज्ञानिक इनमें पचास बरस का अन्तर सिद्ध कर सकता है; क्योंकि पिछले चरणों में क्रिया का अभाव है। अब सोचिए, कि भाषा विज्ञान पर आधारित यह मत सत्य से कितना निकट होगा; जबकि स्वर्गीय मैथिलीशरण जी गुप्त ने, ये चारों पंक्तियां मिनट भर के अन्दर ही लिख डाली होंगी।

इस प्रकार के तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, अब भाषा विज्ञान पर आधारित इस मत का परीक्षण कीजिए; कि अथर्ववेद तीनों वेदों का परावर्ती है। सामवेद, ऋग्वेद मन्त्रों पर ही आधारित है; इसलिए यदि सामवेद में अथर्ववेद के मन्त्र मिल जाएँ, तो अथर्ववेद की प्राचीनता के लिए वे अन्तःसाक्ष्य बनकर, एक प्रबल प्रमाण सिद्ध होंगे। इस विचार से इन दोनों वेदों का अध्ययन करने पर, हमारे सामने यह तथ्य उजागर हो उठता है; कि अथर्ववेद सामवेद के युग में विद्यमान था; क्योंकि सामवेद में उसके ६ मन्त्र उस आदिकाल से विद्यमान हैं; जिसे हमें सृष्टि का आदिकाल कहते हैं। यह भी ध्यान रखना चाहिए; कि इस वैदिक काल की स्थापना पाश्चात्य विद्वानों द्वारा प्रायः एक मत से की गई है। इन मन्त्रों का विवरण—

१. अथर्ववेद के तीसरे खण्ड के दूसरे सूक्त का छठा मन्त्र इस प्रकार है—

असौ या सेना मरुतः परेषा-
मस्मानैत्यभ्योजसा स्पर्धमाना
तां विध्यत तमसापव्रतेन
यथैषामन्यो अन्यं न जानात्

इस मन्त्र में अथर्वा ऋषि मरुतों से कहते हैं—"मरुतो! जो यह अपने सामर्थ्य से सारे संसार के प्रकाशक बल से स्पर्धापूर्वक भिड़ने के लिए उसकी शत्रु-सेना हम पर चढ़ी चली आ रही है, उसे तुम अपने तमोमय विस्तार से रोको!

यह मन्त्र सामवेद के उत्तरार्चिक के इक्कीसवें अध्याय का १८६०वें छन्द में अथर्ववेद से उद्धृत किया गया है। इसके तीसरे चरण में जो विध्यत शब्द है, उसके स्थान पर सामवेद में गूहत आया है। विध्यत का अर्थ है, बेध दो; और गूहत का अर्थ होगा ढक दो। सामवेद में भी इस अथर्वा ऋषि का मन्त्र माना गया है।

२. अथर्ववेद के चौथे काण्ड के छब्बीसवें सूक्त का पहला मन्त्र इस प्रकार है :—

मन्ये वां द्यावा पृथिवीसुभोजसौ
सचेतसौ ये अप्रथेथाममिता योजनानि
प्रतिष्ठे ह्यभवतं वसूनां
ते नो मुञ्चतमंहसः

इस मन्त्र के ऋषि मृगार कहते हैं :—"हे द्युलोक! हे पृथिवी लोक! तुम दोनों ऐश्वर्य सम्पन्न हो। मैं तुम्हारे वैभवों से सुपरिचित हूँ; और तुम्हारी स्तुति करता हूँ। तुम दोनों ही दैवी और मानवीय ऐश्वर्यों के मूल कारण हो। तुम सर्व-व्यापक और असीम मार्गों वाले हो; अतः तुम हमारा जीवन दोषमुक्त कर दो।"

यह मन्त्र सामवेद के पूर्वार्चिक के अरण्य काण्ड के छठे अध्याय के ६२२वें छन्द में अथर्ववेद जैसा है। इसमें द्वितीय चरण में आए हुए योजनानि शब्द

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के स्थान में सामवेद का पाठ योजनम् है; और प्रतिष्ठे के स्थान पर द्यावा-पृथिवी शब्द फिर से दुहराया गया हैं। पूरे मन्त्र का जो अर्थ अथर्ववेद में है वही अर्थ सामवेद में भी विद्यमान है।

३. अथर्ववेद के छठे काण्ड के पहले सूक्त का पहला मन्त्र इस प्रकार है—

दोषो गाय बृहद् गाय द्युमद्धेह्याथर्वण
स्तुहि देवं सवितारम्

इस मन्त्र के ऋषि अथर्वा कहते हैं :—स्तुति के योग्य जदुत्पादक सविदा के हेतु दिनोंरात सामगान करो। तुम्हारा यह सामगान बृहत हो। सविता गुणों से युक्त प्रकाश रूप हैं।

यह मन्त्र सामवेद के पूर्वार्चिक के ऐन्द्र काण्ड के दूसरे अध्याय के १७७वें छन्द में अथर्ववेद के समान है। पहले चरण के द्युमद्धेह्यार्थवण को द्युमद्गामन्नाथर्वण का रूप प्राप्त हो गया है; पर दोनों वेदों में इस पूरे मन्त्र का अर्थ एक ही है। ऋषि भी दोनों वेदों में अथर्वा ही बताए गए हैं।

४. अथर्ववेद के छठे काण्ड के ३३वें सूक्त का पहला मन्त्र इस प्रकार है :—

यस्येदमा रजोयुजस्तुजे जना वनं स्वः
इन्द्रस्य रन्त्यं बृहत्

इस मन्त्र के ऋषि जाटिकायन कहते हैं—जिस अत्यन्त तेजस्वी इन्द्र का यह दान स्वर्ग में, और जनों में प्रशसित हो रहा है उसी इन्द्र के बृहत् दान सबके लिए रत्नस्वरूप होकर छाए हुए हैं।

अथर्ववेद का यह मन्त्रसाम वेद के अरण्य काण्ड के पहले सूक्त का तीसरा सामगान है। सामवेद में आकर इस मन्त्र के प्रथम चरण के 'जना' को 'जने' का रूप प्राप्त हो गया है जिससे अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता।

५. अथर्व वेद के छठे काण्ड के छत्तीसवें सूक्त का पहला मन्त्र इस प्रकारहै :—

ऋतावानं वैश्वानरमृतस्य ज्योतिषस्पतिम्
अजस्रं धर्ममीमहे

इस मन्त्र के ऋषि अथर्वा कहते हैं :—यज्ञ करने वाले, मनुष्यों के हितैषी, अपने तेज से सदाचार का रक्षण करने वाले, निरन्तर प्रदीप्त परमेश्वर के वैश्वानर अग्निरूप की हम उपासना करते हैं।

अथर्ववेद का यह मन्त्र सामवेद के उत्तरार्चिक के अठारहवें अध्याय का १७०८वां सामगान है। इसमें पाठभेद कुछ भी नहीं है; अतः अर्थ भेद का प्रश्न ही नहीं उठता।

६. अथर्ववेद के छठे काण्ड के ६७वें सूक्त का दूसरा मन्त्र इस प्रकार है :—

मूढाअमित्राश्चरता शीर्षाण इवाहयः
तेषां वो अग्निमूढानामिन्द्रो हन्तु वरंवरम्

इस मन्त्र के ऋषि अथर्वा कहते हैं—"निःशीर्ष सांपों के समाज मूढ होकर जो तुम तड़फड़ा रहे हो; ऐसे तुम बादलों के मूढ़ अग्निबल का संहार इन्द्र के वीर्य करें जो हमारी स्तुतियों से प्रसन्न हो रहा है :

अथर्ववेद का यह मन्त्र सामवेद के उत्तरार्चिक के इक्कीसवें अध्याय का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१८७१वां सामगान है। प्रथम चरण के 'मूढा' के स्थान पर अन्धा, तथा चरता के स्थान पर भवता पाठ सामवेद में है; पर उससे अर्थ में कोई अन्तर नहीं आता।

इन अन्तःसाक्ष्यों के आधार पर, मैं पुनः इस बात पर विशेष बल देता हुआ, यह निवेदन प्रस्तुत करना चाहता हूँ कि इन अन्तरंग प्रमाणों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। ये इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं, कि अथर्ववेद और सामवेद एक ही समय प्रभु द्वारा प्रदत्त ज्ञान है। ऋग्वेद की घोषणा भी यही है :—

आशा है पाठक विदेशी विद्वानों द्वारा फैलाए जा रहे भ्रमों से सावधान रह उनका निराकरण करेंगे। 'वेद' के प्रचार और प्रसार का यह भी एक आवश्यक अंग है।

"उस सर्वाहुत यज्ञ से ही ऋक् और साम उत्पन्न हुए; और उसीसे छदांसी (अथर्ववेद के छन्द) और यजुर्वेद का भी प्रजनन हुआ है :—

तस्माद् यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत

ऋग्वेद १०।९०।९

भारी संख्या में मंगाएँ

गायत्री मन्त्र (बड़ा) पत्ती लगा

५०) सैकड़ा। ४००) हजार

**

गायत्री मन्त्र [छोटा]

बिना पत्ती लगा—२००) हजार
पत्ती लगा—३००) हजार

दोनों बढ़िया आर्ट पेपर पर

घर-घर में गायत्री मन्त्र पहुँचाकर पुण्य कमाएँ

दयानन्द-संस्थान नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है)

□ वृक्षों में □ जीव है

डॉ० सु० ब० काले
(वैद्यनाथ कॉलेज परली वैजनाथ)

आर्य जनता में इस विषय में बहुत दिनों से चर्चा, वादविवाद होते आ रहे हैं! और अपनी अपनी विचारधाराओं को प्रकट करने के लिए लेख भी लिखे हैं। अतः इस विषय पर सभी प्रकार के लेख आर्य जनता ने पढ़ लिए हैं! स्वामी दर्शनानन्दजी महाराज वृक्षों में जीव नहीं मानते थे। पं० लेखरामजी जीव मानते थे। ऋषि दयानन्द ने इस बारे में तो कुछ अलग लिखा नहीं। दोनों ही पक्षवाले खींच-तानकर स्वामी दयानन्द के शब्दों का अर्थ लगाकर अपने पक्षों में स्वामी दयानन्द को खींचने का प्रयत्न करते हैं। स्व० पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय भी वृक्ष निर्जीव मानते थे।

आज पं० रामदयालु शास्त्री, ओमप्रकाश खतौली और ब्र० धर्मदेव आर्य-शास्त्री आदि वृक्ष, जड़, निर्जीव हैं यह मानने वाले हैं और दूसरा एक पक्ष है जिनमें श्री रामप्रसाद तिवारी, पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती आदि हैं जो वृक्ष सजीव है, यह मानते हैं।

मैंने इन सभी लोगों के लेख, पुस्तक तथा उक्तियाँ पढ़ ली हैं। मैं तो यह कहने का प्रयास नहीं करूँगा कि मैं कोई शास्त्रार्थी हूँ। लेकिन मेरी जो भी पढ़ाई हुई है उसके साथ मुझे खेद से यह कहना पड़ रहा है कि हमारे सभी शास्त्रार्थ महा-रथी लोगों ने विषय को निर्णय में निकालने के लिए चुनौती तो दी पर लेख में जो उक्तियाँ दीं वह सब-कुछ अलग ढंग की और सब हिंसा, अहिंसा, पाप, पुण्य पर आधारित हैं। आर्य जनता अहिंसा में विश्वास रखती है। मांसाहार का निषेध करती है क्योंकि मांसाहार में हिंसा होती है और पाप लगता है इसलिए मांसाहार त्याज्य, निषिद्ध है।

जो लोग मांस खाते है, वे लोग भी फिर प्रश्न पूछते हैं कि वनस्पति खाना, उसको तोड़ना पाप नहीं क्या? हिंसा नहीं क्या? अब इससे बचने के लिए हरएक ने अपनी अपनी युक्ति चलाई। कोई कहता वृक्ष जड़ निर्जीव हैं, इसलिए पाप नहीं लगता। कोई कहता है, वृक्षों में जीव सुप्तावस्था में है इसलिए पाप नहीं लगता। मैं तो अल्पज्ञ हूँ पर आप इस विषय में जो भी लेख आये हैं—खोलकर पढ़कर देखिए सभी में वोही है। "वृक्ष जड़ है" यह पुस्तक ओमप्रकाश शास्त्री की भी पढ़कर देखी तो वहाँ भी वही उक्ती चलाई गई है! "हम क्या खायें—घास या मांस" इस पुस्तक में गंगाप्रसाद उपाध्याय ने भी वही बताने का प्रयास किया है कि वृक्ष जड़ हैं और उसको खाने से पाप नहीं लगता। जो लोग शास्त्रार्थ की बात करते हैं वे ऐसा विषयान्तर कैसे करते हैं यही समझ में नहीं आता। आप सब लोग खुले विचार से सोचें तो पता चलेगा कि विषय क्या है?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वृक्ष—वनस्पती सजीव हैं या निर्जीव ?

यह विषय स्वतंत्रता से विचार करना होगा। इसको हल करते समय सभी लोगों ने दूसरे विषय, जो लाके आर्य जनता के सामने खड़े किये हैं—वे बिल्कुल अलग हैं इससे इस विषय में कुछ संबंध है ही नहीं। उदाहरणार्थ—(१) वृक्ष खाना पाप है या पुण्य—यह बिलकुल अलग विषय है।

(२) वृक्ष, फल, कंद मूल आदि के काटने से हिंसा होती है या नहीं, यह भी बिलकुल अलग विषय है। (३) तीसरा विषय है—हम घास खाएँ या मांस ? इसका भी वृक्ष सजीव है या निर्जीव से कुछ संबंध नहीं लेकिन आपने, सभी विद्वान् लोगों ने इसको क्लिष्ट करके रखा है और आज यही बात विज्ञान विरुद्ध हो के बैठ रही है।

इससे भी और शोर मचाया है "स्थावर", "जड़", "चेतन" शब्दों ने। जगह जगह पर स्थावर शब्द निर्जीव समझा गया है। जड़ शब्द का भी निर्जीव ही अर्थ हो गया है। हरएक शब्द वैशिष्टपूर्ण है और उसका अर्थ संदर्भानुसार लिया गया है। "चेतन" का अर्थ घूमने फिरने वाले न लेते हुए—स्वयं बिना किसी दूसरे के सहारे चलते हैं एक ओर, दूसरे जो दूसरों के सहारे चलते हैं, ऐसे अलग होते हैं। "स्थावर" का अर्थ जो स्थित हैं, एक जगह बैठे हैं—यह है। फिर इसमें भी सजीव निर्जीव दोनों आ सकते हैं। जड़ का भी अर्थ कुछ अलग ढंग से लिया गया है।

वृक्षों में भी जीव है या नहीं इस बारे में बाकी तीन विषय पूरी तरह से भूलकर हमें यह सोचना पड़ेगा कि वनस्पति क्या है ? उसकी व्याख्या क्या है ? उसका क्षेत्र क्या है ? उसके गुण धर्म क्या हैं ?

फिर सजीव के लक्षण क्या हैं ? सजीव किसको कहते हैं ? मनुष्य व्याघ्रादि सजीव हैं या और कुछ हैं ? आज विज्ञान के युग में वनस्पति और प्राणी-जगत् का अभ्यास बहुत हो गया है और इससे पता चलता है कि प्राणी-जगत् में मनुष्य सर्वश्रेष्ठ है जिसमें शरीर इन्द्रियों के साथ है। व्याघ्र, गाय, घोड़ा, बैल आदि सभी सजीव हैं यह भी पता चलता है। लेकिन प्राणियों में बहुत प्राणी ऐसे हैं जिनके पास न आंख न कान हैं, न नाक है फिर भी सब कुछ व्यवहार करते हैं। उदाहरण—Amoeba, Hydra, Coelentreta.

यह विश्व वैसे दो भागों में बांटा जाता है—सजीव और निर्जीव।

(१) सजीव—शरीर, इन्द्रिय, आत्मा आदि मूल होते हैं और प्रजोत्पादन श्वासोश्वास, बढ़ना आदि चीजें दिखाई देती हैं।

(२) निर्जीव—शरीर, इंद्रिय, आत्मा रहित होते हैं और प्रायः जड़ होते हैं—

सजीव में दो प्रकार हैं—जिसमें (१) वनस्पति और (२) प्राणी आते हैं। वनस्पति प्रायः एक जगह स्थित होते हैं इसलिए उन्हें स्थावर भी कहा गया है। प्राणी साधारणतः इधर-उधर घूमने वाले हैं इसलिए उनको प्रायः चेतन कहते हैं।

मैं तो वनस्पति में जाग्रत सजीवना है यह बताने का प्रयास करूँगा।

शरीर का होना

सब गड़बड़ को छोड़कर आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाय तो सजीव की व्याख्या शरीर, इन्द्रिय, आत्मा सहित होती है। आध्यात्मिक दृष्टि में भी हम लोग

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अक्सर मनुष्य जाति का स्वानुभव ही लेते हैं। आज प्राणी जाति में और वनस्पति जाति में बहुत ही अभ्यास हुआ है। खाली, स्वामी दर्शनानन्द क्या लिखते हैं, स्वामी दयानन्द क्या लिखते हैं। इस पर बात खत्म नहीं होती तो जड़वादी और आध्यात्मवादी दोनों का भी अभ्यास करके विचार देना होगा। अब तक खाली अध्यात्मवादियों ने अपनी बातों से उत्तर दिया और जगदीशचन्द्र बोस को जड़वादी कहकर छोड़ दिये। यहाँ हमें (१) शरीर, (२) इन्द्रिय, (३) आत्मा के बारे में सोचना पड़ेगा।

शास्त्रकार के मतानुसार शरीर की व्याख्या यह है—

(१) "चेष्टेन्द्रियार्थाश्रयः शरीरम्।"

(२) "भोगापवर्गार्थाश्रयः शरीरम्।"

इसी व्याख्यानुसार शरीर की व्याख्या इन्द्रिय अर्थ से आश्रित शरीर होता है। इन्द्रिय यहाँ तो ५ कर्मेन्द्रिय, ५ ज्ञानेन्द्रिय मनुष्य के शरीर में हैं। और ११वाँ मन है। अब सवाल यह आता है कि यही सब इन्द्रिय सभी प्राणियों में होते हैं क्या? जो नीचे दर्जे के प्राणी हैं उनमें ना कान रहते हैं ना नाक, ना आँखें, तो भी ज्ञान लेने का कार्य कुछ और अवयव से इन्द्रियों का अर्थ पूर्ण करते हैं। इस पर आप भरोसा नहीं करोगे, लेकिन प्राणी-जगत् में Amoeba, Hydra, Coelentrates, Sponges, Snales आदि कितने ही प्राणी हैं। हम उनको प्राणी कहते हैं, सजीव मानते हैं। क्योंकि इंद्रियों से जो ज्ञान लेते हैं वह काम त्वचा या अन्य अवयवों से किया जाता है। इसका मतलब इन्द्रियों में खाली कान, आँख, नाक ही नहीं लेना चाहिए पर उसका काम होता है या नहीं यह देखना चाहिए। Amoeba में इन्द्रिय नहीं होते हुए भी, उसका एकदेशी शरीर मानते हैं, क्योंकि वह चेष्टा करता है खाता है, पीता है, प्रजोत्पादन करता है। श्वासोच्छ्वास करता है इत्यादि।

वैसा ही वनस्पति में शरीर है इसमें सन्देह नहीं वो भी पेशीयुक्त है। उनकी इन्द्रिय अलग हैं, आप कान, आँख, मुंह आदि में देखोगे तो बात जमेगी नहीं पर वह चेष्टा करता है या नहीं यह बात महत्व की है। और उसके साथ बाह्य विषयों को ग्रहण करती है। जमीन से पानी लेना, सूर्य से प्रकाश लेना, उससे अन्न पैदा करना, संवेदनशील रहना आदि सभी काम उनमें किये जाते हैं। जड़, खोड़, पत्ते, फूल आदि अलग-अलग अवयव हैं और अलग-अलग काम करते हैं।

वनस्पति में भी कुछ बहुत छोटे, Microscopic, Chlamydomonas, Volvox, Pandorina, Endorina आदि पानी में इधर-उधर घूमते रहते हैं। वैसा ही Spirogyra का है। वो भोग भी लेते है। उनका मूल भी पंचमहाभूत है उनमें प्रजोत्पादन शक्ति भी है।

यह शरीर बढ़ता भी है घटता भी है। वनस्पति को भी रोग होते हैं। इसमें आप लोग भरोसा नहीं करोगे। लेकिन गेहूँ के पत्तों में Rust बोल के रोग होता है, उससे गेहूँ के बीज बहुत बारीक होते हैं। कहीं-कहीं रोगों से सूजन आ जाती है। आदि सर्व बातों से वनस्पति में शरीर होता है यह सिद्ध हुआ। यह शरीर जब सब काम कर रहा है तब उसको सुप्तावस्था मानना भी गलत है। सुप्तावस्था आती है मगर हर वक्त नहीं। बीज, कंद सुषुप्तावस्था में होते हैं। वनस्पति में जीव सुषुप्तावस्था में नहीं जाग्रतावस्था में है। क्योंकि सुषुप्तावस्था में खाना-पीना,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रजोत्पादन आदि नहीं होते पर वृक्षों में प्रजोत्पादन होता है। कुछ महानुभावों को यह भी पता नहीं है कि वृक्षों में भी लिंग होते हैं। वो तो खाली साहित्यिक लिंग ले के गेंहू का गेंहू रह गया, मटर का मटर रह गया। मटरी नहीं हुई यहाँ तक लिखकर मजाक उड़ाया करते हैं। वनस्पति में प्रजोत्पादन के लिंग, दोनों एक ही में रहते हैं या एक नर और दूसरा मादा, कुछ वनस्पति में दोनों लिंग अलग-अलग होते हैं वैसा तो प्राणियों में भी है। Earthworm में दोनों लिंग एक ही प्राणी में हैं। आज H4 कपास का Crossing अच्छी तरह से नर मादा का प्रमाण दे सकता है।

उसी तरह से शरीर है यह सिद्ध कर सकते हैं। वैसा खाली शरीर को कुछ अर्थ नहीं।

वनस्पति में प्राण से भी अलग कुछ है

कुछ लोगों के अनुसार वनस्पति में जो भी कार्य हो रहा है वह सब प्राण से हो रहा है। आत्मा से नहीं, ऐसा दावा है। उनका कहना है कि प्राण और अपान सभी सजीव और निर्जीव में होता है और परमात्मा के आश्रय से कार्य करता है। वैसा प्राण तो ऑक्सीजन को कहते हैं पर उसका forri बदलकर शरीर में आता है। पर मुझे एक बात समझ में नहीं आती कि पत्थर में भी प्राण होना चाहिए और परमात्मा भी। फिर वह क्यों प्रजोत्पादन नहीं करता? वह क्यों बाह्य संवेदना को ग्रहण नहीं करता? वह क्यों पानी शोषण नहीं करता? इसका मतलब यही है कि जब पत्थर खाता नहीं, पीता नहीं। वनस्पती खाती पीती है, प्रजोत्पादन करती हैं तो उसमें प्राण से भी और कुछ है यह स्पष्ट है। कुछ लोग रेल के इंजिन का उदाहरण देते हैं कि वह भी कोयला खाता है पानी पीता है। तो फिर उसको भी सजीव मानना है क्या? अजब बात है, वह ग्रहण करता है क्या? प्रजोत्पादन करता है क्या? खाके घटता बढ़ता है क्या? जब वो खुद नैसर्गिक है क्या? Self Controlled है क्या? इससे पता चलता है कि वह निर्जीव है उसको दुसरे से चालू करना चाहिए—दूसरे से बंद करना चाहिए। इतना दोनों में अंतर है।

तो इसका अर्थ यह हुआ कि जब शरीर खुद होके सब व्यवहार कर रहा हो तो उसमें प्राण से भी अतिरिक्त कुछ और है। और वो है आत्मा।

आत्मा का होना

आज तक न किसी ने आत्मा बताया है न देखा है पर उसका अस्तित्व मालूम हो जाता है। शास्त्रकारों ने आत्मा के लिंग बताते हुए कहा है कि—

"इच्छाद्वेष प्रयत्न सुख-दुख-ज्ञानायात्मनो लिङ्गम।"

इच्छा-द्वेष, प्रयत्न सुख, दुख आदि आत्मा के लिंग या परिचायक हैं। यह सब बातें सभी प्राणियों में मौजूद हैं। हरएक के व्यक्त करने की भाषा अलग हो सकती है। वैसा ही वनस्पति में भी यह सब चीजें है। लेकिन देखने के लिए हमें दृष्टि चाहिए।

हर वनस्पति की जीने की और बढ़ने की इच्छा होती है। उसकी पूर्णता के लिए प्रयत्न करते हैं। इसीलिए तो जमीन में पड़ा बीज भी उसकी जड़ पानी की ओर भेजता है। पत्ते प्रकाश की ओर भेजता है। जंगलों में यही प्रयत्न से द्वेष भी बढ़ता जाता है Competition भी दिखाई देती हैं। अच्छी सभी आवश्यक चीजें हो तो वे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अच्छे मालूम होते हैं, नहीं तो रोग-पीड़ित होते हैं। कैसे तो रहते है। पानी मिला तो खिलते हैं नहीं तो सूखते हैं। सूखना दुःख का ही प्रतीक है और खिलना सुख का। पानी में रहनेवाली वनस्पति पानी के बाहर नहीं जा सकती, मर जाती है। यह इंजिन और पत्थर में प्रतीत नहीं होता। रोग होना और उसका बुरा असर होना यह भी दुख ही है।

एक वनस्पति दूसरे वनस्पति के साथ ईर्ष्या करती है। वह भी खाने-पीने और सूर्यप्रकाश के लिए। कुछ-कुछ वनस्पतियाँ तो एक दूसरे को बढ़ने ही नहीं देतीं।

इससे तात्पर्य यही हुआ की वनस्पति में भी आत्मा ल लग देखने को मिलते हैं।

कुछ लोगों का कहना है कि आत्मा के लक्षण अलग हैं और परिभाषा अलग है। अर्थात् शास्त्रकारों की दृष्टि में।

"ज्ञानाधिकरण आत्मा" अर्थात् ज्ञान का अधिक आधार आत्मा है। या वह

"कर्तुम-कर्तुमन्या कुर्तुम समर्थः" अर्थात् करना या न करना अथवा उलटा करने वाली आत्मा ऐसी व्याख्या की गयी है।

यहाँ भी वनस्पति में करना, न करना उलटा करना सभी दिखाई देता है। जड़ पानी की ओर ही बढ़ती है, पत्ते सूर्यप्रकाश की ओर ही। और जड़ जमीन में बढ़ते समय अगर पत्थर आता है तो दूसरी बाजू से चली जाती है कभी-कभी उलटा भी करते ।कुछ में अनाज जमा करना, खतम करना, और जमा न करना। प्रजोत्पादन काम करना इत्यादि सब काम दिखाई देते हैं। Chlamydomonas, Desmids, Pandorina, Endorina, Spirogyra, Oscillatoria आदि को सौम्य प्रकाश दिये तो प्रकाश की ओर आते हैं। और तीव्र प्रकाश दिये तो दूर जाते हैं। क्या यह करना नहीं करना, नहीं है ? कुछ वगैरा घूमकाले में सुप्तावस्था में जाते है और वर्षा होते ही उगते हैं। क्या यह करना न करना, नहीं है ?

और यह सब करने के पीछे कुछ कारण है वह इच्छा है। नहीं तो और कुछ निर्जीव उदाहरण देकर लोग चक्कर में लाते हैं।

वनस्पति के जड़ को पत्थर के बीच में आने का ज्ञान होना। प्रकाश की सौम्यता और तीव्रता का ज्ञान होना। सूर्यास्त और सूर्योदय का ज्ञान होना यह सब चीजें आत्मा के ही लक्षण बताते हैं।

सूर्यफूल के बारे में, सूरज जैसा दिखाई देता है इसलिए सूर्यफूल कहना ठीक है पर वह सूर्य की तरफ मुख करता है या नहीं यह भी तो देखो। उसमें यह करने की क्षमता है। मैंने स्वयं देख लिया है। कुछ फूल केवल दिन में खिलते हैं तो कुछ केवल रात में खिलते हैं। कली से फूल बनना आदि सभी सजीव के या आत्मा के लक्षण बताते हैं। अगर यह आत्मा के लक्षण नहीं तो फिर यह सब किसी के निर्जीव में होना चाहिए पर ऐसा नहीं है।

अतः इससे स्पष्ट हुआ कि वनस्पति में आत्मा है। यह आत्मा कुछ लोगों की दृष्टि से सुप्तावस्था में है ऐसा माना गया है। पर वह भी पाप-पुण्य के डर से ही है। सुप्तावस्था में प्रजोत्पादन नहीं हो सकता पर वनस्पति प्रजोत्पादन करती है। मतलब वनस्पति में आत्मा जागृत-अवस्था में है और कभी-कभी वह सुप्तावस्था में भी चली जाती है। बीज अदरक, आलू, आदि, खाली सुप्तावस्था में जीव मानना गलत है

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्योंकि सुप्तावस्था में प्रजोत्पादन नहीं होता, पर वनस्पति तो वह करती है। और हमेशा ही सुप्तावस्था में है तो जागृत कब रहता है और बाकी के काम कब करता ? इसीलिए कुछ उत्तर नहीं मिलेगा। इसलिए आत्मा वनस्पति में कभी जागृत रहता है तो कभी सुप्तावस्था में

अब तक हम वनस्पति में प्राण, आत्मा तथा शरीर है यह सिद्ध किये हैं।

आगे कुछ लोगों के प्रश्न का उत्तर देंगे—

(१) वनस्पति में आत्मा है तो एक या अनेक हैं।

हरेक वनस्पति में एक ही आत्मा है पर कुछ लोग युक्ति चलाने का प्रयास करते हैं। आत्मा एक है तो फांदी काटकर लगाने से आत्मा फाँदी में गया या पहिले वनस्पति में रह गया ? यह एक अजब पक्ष आता है। प्राणियों के बच्चे होते हैं तो बच्चों में आत्मा कहाँ से आयी ? यही पक्ष पहिले पक्ष का उत्तर दे सकता है। आत्मा का होना देना तो जीवात्मा के अधीन नहीं।

वनस्पति में तीन प्रकार से प्रजोत्पादन होता है। (i) Vegetative—यहाँ शरीर के भाग से नवीन वनस्पति तैयार हो जाता है। उदाहरण गन्ना, गुलाब आदि ऐसा प्रजोत्पादन प्राणियों में भी होता है। जैसे कि—Planaria, Hydra, Liver-pluck आदि। एक को काटने से दो हो जाते हैं और दो के चार होते है उसे Regeneration कहते हैं।

(ii) Asexual—इसमें रेणु से उत्पत्ति होती है। यह वनस्पति और प्राणी दोनों में होता है।

(iii) Sexual—या सलिंग उत्पत्ति। इसमें हमारे सभी अध्यात्मवादी अज्ञान में हैं। पर वनस्पति में लिंग होते हैं। एक नर और दूसरा मादा। दोनों भी एक ही फूल में रहते हैं या अलग-अलग भी होते हैं। प्राणियों में भी ऐसा होता है—दोनों लिंग एक प्राणी में या अलग-अलग प्राणी में होते हैं। प्राणियों में भी सभी में प्रसूति नहीं होती। हमारे बहुत सारे अध्यात्मवादियों को यह पता नहीं Frog—मेंढक में गर्भधारणा पानी में होती है। वो भी उसको सजीव मानते हैं। और भी बहुत से प्राणी में पानी में गर्भधारणा होती है। वैसे ही गेहूँ, ज्वार, मक्का, आम, आदि में गर्भधारण अन्दर होती है और बाद में बीज तथा फल बनते हैं।

(२) एक से अनेक बीज बनते हैं तो एक ही आत्मा सभी में कैसे जाती है ?

यह भी अजब पक्ष है इसका उत्तर मैंने दिया है कि प्रजोत्पादन में आत्मा का देना जीवात्मा के हाथ में नहीं, खाली क्रिया करना उनका काम है।

(३) आत्मा छिलके में या धान में है ?

मुर्गी के अंडे की आत्मा उस अंडे के कवच में है या गर्भ में है ? यही इसका उत्तर है

(४) अमरवेल, एक वनस्पति दूसरे वनस्पति में जीती है।

इसलिए यहाँ दोनों मे अलग-अलग आत्मा रहते हैं। या एक ही ? यहाँ दो वनस्पति में अलग-अलग आत्मा रहती है। जैसा मनुष्य के कुछ रोगों में कीड़े होते हैं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और कीड़े की और मनुष्य की आत्मा एक नहीं होती तो दोनों अलग-अलग होते हैं पर कुछ कारणों से एक दूसरे के शरीर पर आधारित रहता है।

यह सब बातें प्रयोग से सिद्ध कर सकते हैं। और सभी अध्यात्मवादी यहाँ तक मानते हैं पर उनके सामने यह पक्ष खड़ा होता है कि अगर समझो वनस्पति में जीव है यह माना जाए तो उन्हें खाने का पाप लगेगा या नहीं? हिंसा होगी या नहीं? इसका उत्तर अलग है और वह भी दे सकते हैं। पर उसका उत्तर वनस्पति निर्जीव है यह नहीं है। वैसा समझना अलग है और होना अलग है। कहीं-कहीं तो उचित अर्थ निकालने का प्रयास किया गया है। वैदिक हिंसा हिंसा नहीं होती। वेद में वृक्ष योनी माना गया है।

परोऽपेहि मनस्पाप किमशस्तानी शंससि।
परेहि न त्वा कामये वृक्षां वनानि संचर॥
गृहेष-गोषु मे मनः॥ अथर्व ६।४५।१

हे मानसिक पाप दूर हट जा।…तू वृक्षों और वनों में संचार कर।

अस्थुः वृक्षा उर्ध्वप्नाः॥ अथर्व ६।४४।१

वृक्ष एक स्थान में स्थिर रहते है उपर की ओर बढ़ते हैं इससे स्पष्ट है कि वृक्षों में जीव है।

फिर कभी पाप-पुण्य, हिंसा-अहिंसा घास खाना या माँस खाना? इस पर अलग विचार करेंगे।

सुख का मार्ग

सुख का मार्ग

बता सकता है आर्यसमाज

ट्रैक्ट १५) सैकड़ा। १००) हजार

मँगाइए और बताइए सभी को सुख का मार्ग

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार की
औषधियाँ प्रयोग करें

★ गुरुकुल कासारि ★

खाँसी की अपूर्व गुणकारी औषधि

उपयोग—किसी भी कारण से हुई खांसी, नजला, जुकाम आदि में लाभदायक है।
सेवन विधि—दिन में तीन बार छोटी चम्मच लेकर उंगली से चाटें।

आंखों के अनेक रोगों के लिए
संसार प्रसिद्ध

भीमसेनी सुरमा

च्यवनप्राश

उत्तम स्वादिष्ट रसायन
शरीर को बलिष्ठ और कान्तिमय बनाता है।

शारीरिक क्षीणता एवं फेफड़ों के लिए प्रसिद्ध
आयुर्वेद रसायन

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

पो० गुरुकुल कांगड़ी [सहारनपुर]
शाखा कार्यालय—चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—निर्भय हाथरसी

हिन्दी की बिन्दी

हर भाषा आशा है, अभिलाषायें ठगती हैं।
बोली बोली की गर्वीली गोली दगती हैं।।
'हिन्दी' माँ है, शेष सभी उस माँ की बहिने हैं–
माँ हो चाहे मौसी, हमको प्यारी लगती हैं।।

बन्दों में जब छल छन्दों के फन्दे पड़ते हैं।
दुर्मतियों के, दुर्मुखियों के दम्भ उमड़ते हैं।।
भाषायें बहिनें आपस में कभी नहीं लड़तीं—
माँ-मौसी कब लड़तीं? उनके बेटे लड़ते हैं।।

हंसकर कहता हूँ मैं चाहे रोकर कहता हूँ।
शक्ति शारदा माँ की, शब्द संजोकर कहता हूँ।।
भेद-भाव के निर्माताओ कान खोलकर सुन लो–
जो कुछ भी कहता हूँ निर्भय होकर कहता हूँ।।

घर में एक बड़ी 'माँ' है, उसको भी जीने दो।
सम्बन्धों के, पैबन्दों को हमको सीने दो।।
सागर, सरिता, ताल, तलैय्या, पनघट, घट वालो
कुछ भी पियो, साथ में गंगाजल भी पीने दो।।

सुख-सम्पत्ति से चाहे वह बड़भागिन होती है।
राग भरी चाहे जितनी अनुरागिन होती है।।
पाँव महावर, हाथन मेंहदी, माथे पर बिन्दी—
इतना सब कुछ हो, तब कहीं सुहागिन होती है।।

पूरब-पश्चिम की मेंहदी को मन से प्यार करें।
पर-दक्षिणी महावर को सादर स्वीकार करें।।
भाषाओं के अंगराग से अंग रंग कर माँ का—
'हिन्दी' की बिन्दी देकर पूरा शृङ्गार करें।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सुन्दर फरनीचर का प्रगतिशील नाम

डिलाईट

वर्षों के अनुभव और कार्यकुशलता के कारण आज डिलाईट की अलमारियां और फरनीचर सारे भारत में प्रसिद्ध हैं क्योंकि यह देखने में सुन्दर, मजबूत, टिकाऊ और पक्के रंगों में उपलब्ध हैं। दुकान हो या घर, विवाह हो या कोई शुभ अवसर, यह सब की शोभा बढ़ाता है।

आप भी आज डिलाईट फरनीचर खरीद कर अपने घर, आफिस व दुकान की शोभा बढ़ावें और आनन्द पावें।

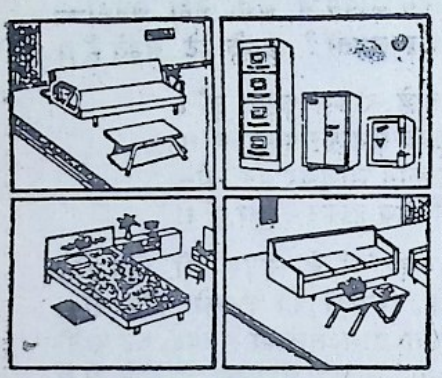

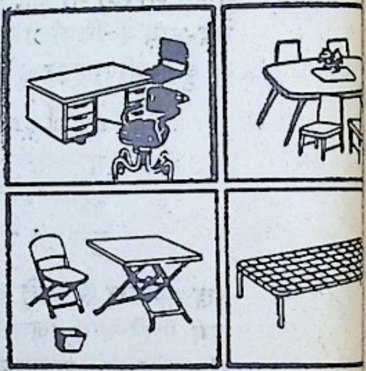

डिलाईट सेफ वर्क्स

कतुब रोड, दिल्ली-६. फोन 511380

विक्रेता

१. काटेज स्टोर, २० विनय नगर मार्कीट, नई दिल्ली।
२. काश्मीर क्राकरी हाऊस, लक्कड़ बाजार, लुधियाना।
३. मित्तल ब्रादर्स, सिरकी बाजार, भटिण्डा। ४. निहालचन्द गोपालदास अबोहर
५. महेन्द्रा ब्रादर्स, कोर्ट रोड, मोगा।
६. जैम सेल्स कार्पोरेशन, सेक्टर ७-सी दु० नं० ३० मध्य मार्ग, चण्डीगढ़।
७. हरयाणा आयरन एण्ड स्टील इण्डस्ट्रीज, बाजार हिसारिया, सिरसा।
८. लीला इलैक्ट्रिक कं०, ७० कोतवाली रोड, श्री गंगानगर (राज०)।
९. राणा इण्डस्ट्रीज, लाडपुरा बाजार, कोटा (राज०)
१०. आदर्श इलैक्ट्रिक एण्ड जनरल सप्लायर्ज, नैका ओली, नीमच (म० प्र०)।
११. ओवरसीज ट्रेड एजेन्सीज, केसर गंज, अजमेर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज शताब्दी पर

एक ऐतिहासिक प्रकाशन

विद्वान, साधक और विचारक

डा० स्वामी सत्यप्रकाश जी

की

महत्वपूर्ण कृति

Dayananda's Out line of Vedic Philosophy

पृष्ठ २५० : रायल साइज : कपड़ की
सुन्दर जिल्द और मूल्य—१५)

किन्तु ३१ मार्च १९७५ तक

१००) की १० प्रति : २००) की २५ प्रति
३००) की ५० प्रति और ६००) की १०० प्रति
दी जाएंगी।

अपना आदेश आज ही भेजिए

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—कृष्णमोहन

अपने मुन्ने की ओर ध्यान दें

वर्तमान समय इतना संघर्षमय है कि आप अपने मुन्ने की ओर कम ध्यान दे पाते हैं। किन्तु आपको यह चिन्ता हमेशा लगी रहती होगी कि मेरा मुन्ना बड़ा होकर महान बने। उसके स्वास्थ्य की भी आपको बहुत चिन्ता रहती है। यदि तनिक भी तबियत खराब हुई, तो तुरन्त डाक्टर से सम्पर्क स्थापित करती हैं।

आपका बच्चा महान् बने, इसकी ओर थोड़ी सतर्कता रखनी तो जरूरी है। अक्सर आप अपने मुन्ने से "इस कार्य को ऐसे करो...... वैसे करो, यहाँ जाओ... वहाँ न जाओ, आदि कह कर आदेश देती हैं। एवं उसकी भूलों की कटु आलोचना करती हैं, जो सर्वथा अमनोवैज्ञानिक ढंग है। बालकों के ही सामने दूसरों से उसकी शिकायत करना कि वह बिल्कुल पढ़ता नहीं, खूब खेलता है। इसकी बुद्धि में तो कुछ घँसता ही नहीं, आदि वाक्यों को बार-बार दोहराने से बालक में हीनता की भावना आ जाती है। कभी-कभी यही हीनता अरुचि और लापरवाही का रूप ग्रहण कर लेती है, जिससे बालक के स्वस्थ विकास की दिशा में बाधा पड़ती है। जरूरी तो यह है कि बालक की आयु, पारिवारिक परिवेश एवं उसकी सामाजिक आवश्यकताओं आदि की कसौटी पर यह परखा जाए कि वह क्या और किस रूप में कार्य कर रहा है। अर्थात् उसके सहज विकास का स्वरूप क्या है? तदुपरांत उस स्वरूप को विकसित करने में आपको यथेष्ट योग देना चाहिए। इस प्रकार अपने बच्चों को महान् बनाने की दिशा में पहले पड़ाव पर आप पहुँच जाएगी।

यदि शरारत चरम सीमा पर पहुँच जाए तो उन्हें डाटने-फटकारने के स्थान पर उनका किसी दूसरी महत्त्वपूर्ण बात या प्रशंसा की ओर ध्यान आकृष्ट करके वातावरण में सरलता लाने की चेष्टा करनी चाहिए।

मनोरंजक, पाठ्य सामग्री भी आवश्यक

आपने कदाचित् इस ओर ध्यान दिया हो कि आपका मुन्ना पाठ्यक्रम (कोर्स) की पुस्तकें पढ़ते-पढ़ते ऊब गया है। उसको मनोरंजन की सामग्री पढ़ने के लिए उपलब्ध होनी चाहिए जिसे पढ़कर वह आनन्दित हो सके। दिन भर का ऊबा आपका मुन्ना सायंकाल विद्यालय से घर आता है तो स्वस्थ मनोरंजन के अभाव में वह इधर-उधर के सस्ते खेलों से अपना मनोरंजन करता है, परिणामतः उसका मानसिक स्तर पतनोन्मुख हो जाता है। इस कमी की पूर्ति के लिए आधुनिक खिलौनों के साथ ही पुस्तकालय एवं पुस्तक विक्रेताओं के यहाँ से अपने मुन्ने के लिए विविध विषयों पर सुरुचिपूर्ण ढंग से लिखी गई कहानियों, कविताओं, पहेलियों, हँसाइयों एवं विभिन्न दिशाओं में कीर्तिमान स्थापित करने वाले व्यक्तियों की जीवन-गाथाएँ पढ़ने के लिए देनी चाहिएं। इससे आपका मुन्ना अध्ययन की ओर उन्मुख होगा तथा विविध जानकारियों से अपने दिमाग को विकसित कर सकेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सर्वांगीण विकास

इन्हीं पुस्तकों के माध्यम से किसी विशेष दिशा में सुरुचि पैदा होने से आप का मुन्ना एक महान् वैज्ञानिक, खिलाड़ी, समाज सेवक एवं साहित्यकार भी बन सकता है। अन्य खर्चों में से कटौती करके आप इस कार्य को सुगमतासहित कर सकती हैं। बच्चों के शारीरिक विकास के लिए आप उसे एक गिलास शुद्ध दूध देने के लिए उत्सुक रहती हैं, किन्तु उससे भी आवश्यक है कि उसके मानसिक विकास के लिए आप एक मास में कम से कम अच्छी पुस्तकों में से उसकी इच्छानुसार अर्थात् उसकी मन पसन्द की दो-तीन पुस्तकें अवश्य मँगवाइये। फिर आप देखेंगी कि स्कूल से मुन्ना सीधा घर आएगा, क्योंकि वह जानता है कि घर में उसे बढ़िया से बढ़िया पुस्तकें पढ़नी हैं, या समझ में न आने वाली बातों पर पिताजी से प्रश्न पूछना है, अथवा उस प्रसंग की सूक्ष्म बातों पर अधिकाधिक जानकारी लेकर जिज्ञासा शांत करनी है। इस प्रकार पुस्तकों के माध्यम से उसका मानसिक, नैतिक, सांस्कृतिक एवं चारित्रिक विकास होगा। बाल्य-काल से ही सद्विचारों, सद्भावनाओं और सद्प्रवृत्तियों के प्रभाव से उसकी किशोरावस्था एवं युवावस्था सुन्दर से सुन्दर रूप में विकसित हो सकेगी।

उपयोगी पत्रिकाएँ

पुस्तकों की कमी आप बालोपयोगी मासिक पत्रिकाओं से भी पूर्ण कर सकती हैं। किन्तु यह ध्यान रखें कि उसमें जो कुछ हो, उससे आपके मुन्ने का मनोरंजन के साथ ज्ञान भी बढ़े। केवल कुछ इने-गिने नेताओं की जीवनी न होकर जीवन के विविध क्षेत्रों में सुप्रसिद्ध लोगों की भी गाथाएँ हों। अन्धविश्वास एवं असत्य बातों पर कुछ भी आधारित न हो। विज्ञान की कुछ बातों पर चर्चा भी जरूरी है!

परिवर्तन परिलक्षित होना

आप विश्वास रखें कि कुछ ही दिनों में आप अनुभव करने लगेंगी कि आपके मुन्ने का आचार-विचार पूर्णतः बदल गया है। वह अब अपनी बाल-बुद्धि के अनुसार जो कार्य कर रहा है, उसे बड़े एवं प्रतिभाशाली लोग भी नहीं कर पाते हैं। आप अपने मुन्ने को उपदेश देने के लिए जो सदैव लालायित रहती थीं, उसे उसने कक्षाओं के माध्यम से समझ लिया है। ऐसा करने से आप देखेंगीं कि मुन्ने के पिता जी का सिरदर्द भी कम हो गया है। कार्यालय अथवा दुकान से वापस आने के बाद उन्हें बालकों को डाटना-डपटना नहीं पड़ता है। जब उन्हें यह विदित होगा कि उनका मुन्ना नेक बन रहा है, अच्छी आदतें डाल रहा है, तो वे फूले न समायेंगे। इस प्रकार घर में सुख एवं शांति रहने से आपके मुन्ने की व्यक्तित्व और अधिक निखार पा सकेगा। यदि इस प्रकार आप मुन्ने का महान् बनायेंगे तो देश को महान् बनाने में हाथ बँटाएँगी।

६ से १२ अप्रैल तक अपने
क्षेत्र में आर्यसमाज शताब्दी
मनाने की तैयारी करें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज शताब्दी के लिए महत्वपूर्ण सुझाव

आगामी वर्ष हम आर्यसमाज शताब्दी समारोह मनाने जा रहे हैं। इस सम्बन्ध में मैं अपने कुछ सुझाव व विचार प्रत्येक वैदिक धर्मावलम्बी व अपने नेताओं व कर्णधारों के सामने आप के पत्र 'जनज्ञान' के माध्यम से पहुँचना चाहता हूँ। आशा है पत्र को प्रकाशित कर सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। इन सुझावों को क्रियान्वित करने की दिशा में यदि कुछ प्रयास किया गया तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूंगा।

शताब्दी समारोह को रोचक, आकर्षक तथा उसके प्रभाव को स्थायी बनाने के लिये निम्न कार्यों पर विचार किया जा सकता है—

(१) आर्य समाज से सम्बन्धित डोक्यूमेंटरी फिल्में तैयार कराई जायें तथा पूरे वर्ष समस्त चलचित्रों में उनका प्रदर्शन कराने का प्रबन्ध हो।

(२) आकाशवाणी से वेद की शिक्षा पर वार्ता प्रसारित कराने की दिशा में प्रभावशाली पग उठाये जायें तथा प्रतिदिन प्रसारित होने वाली प्रार्थना में वेद-मंत्रों के चयन में आर्यसमाज के विद्वानों का हाथ हो।

(३) सन्ध्या व दैनिक यज्ञ के रिकार्ड तैयार कराये जायें जिससे सब स्थानों में उनके द्वारा उच्चारण में तथा समय आदि में एकरूपता, समानता आ सके। एकरूपता व समानता को स्थापित रखने के लिये यह आदेश हो कि मंत्र नियत हों, सामूहिक यज्ञों में मंत्र कम अधिक न किये जायें।

(४) सुन्दर, आकर्षक, संगीतमय भजन, कोरस आदि के रिकार्ड प्रचुर मात्रा में तैयार कराये जायें।

(५) सीलोन से वैदिक धर्म के प्रचार के लिए प्रबन्ध हेतु आवश्यक कार्यवाही की दिशा में विचार हो।

(६) सब समाजों में अच्छे उपदेशक वक्ता नहीं मिलते, अतः विभिन्न विषयों पर एक-एक घन्टे के सुप्रसिद्ध विद्वानों के प्रवचनों के रिकार्ड तैयार कराये जायें, जिससे ग्राम-ग्राम में प्रचार के समय उनका प्रयोग किया जा सके।

(७) प्रचारार्थ सुन्दर ढ़ंग से प्रश्नोत्तर रूप में भी रिकार्ड तैयार कराये जा सकते हैं तथा विभिन्न विषयों को ट्रेक्टों द्वारा अपनी विशेषता बताते हुये, प्रकाशित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करा कर विशेष अवसरों पर बंटवाया जाये ।

(८) हम शताब्दी मनाने जा रहे हैं, अतः इस अवसर पर निम्न आयोजन द्वारा शताब्दि के प्रभाव को स्थिर बनाने के लिए निम्न कार्यक्रमों को उसमें स्थान दिया जा सकता है ।

(अ) वैदिक धर्म में दीक्षित करने का कार्यक्रम ।

(ब) वानप्रस्थ व संन्यास ग्रहण करने का कार्यक्रम ।

(स) गुण कर्म स्वभाव के आधार पर अन्तर्जातीय विवाहों का सामूहिक कार्यक्रम ।

(द) नवयुवकों द्वारा अविवाहित रह कर धर्म प्रचार का व्रत लेना, तथा देश विदेश में फैल कर कर्मनिष्ठ बन कर धर्म प्रचार करना । सभा को उनके जीवन यापन की उचित व्यवस्था करानी चाहिये ।

(य) समस्त प्रान्तों में प्रचार मण्डलियों की स्थापना करके वहाँ की भाषा में प्रचार करना ।

हम चूंकि शताब्दी मना रहे हैं अतः कम से कम प्रत्येक वर्ग में यह संख्या १०० तो होनी ही चाहिये ।

(९) लोगों का योग के प्रति विशेष आकर्षण रहता है, अतः प्रशिक्षण देकर ऐसे व्यक्ति तैयार किये जायें जो जनता के सामने योग का व्यवहारिक पक्ष प्रस्तुत कर सकें, उन्हें योगाभ्यास सिखा सकें तथा धूर्तों के चंगुल से उनकी रक्षा कर सकें ।

(१०) महिलाएं विशेष रूप से आगे आयें और महिलाओं में जागृति उत्पन्न करने के लिये अपना योग दान दें । वे महिलाएं जो पारिवारिक उत्तरदायित्व से विमुक्त हो चुकी हैं और साधना जिनके जीवन का अंग बन चुका है, विभिन्न समाजों में ठहर-ठहर कर प्रचार करें ।

(११) चारों वेदों के मंत्रों को सस्वर रिकार्ड या टेप रिकार्ड कराये जायें, ताकि उन्हें याद करने के लिये शुद्ध उच्चारण के लिये, तथा सत्सगों, उत्सव व विशेष अवसरों पर उपयोग में लाया जा सके ।

(१२) वेदों के अतिरिक्त अन्य वैदिक साहित्य जो बड़े तार्किक ढ़ंग से प्रभावशाली ढ़ंग से तथा वैज्ञानिक ढ़ंग से लिखा हुआ है उसको अन्य भारतीय भाषाओं में तथा संसार की ५-६ प्रमुख भाषाओं में अनुदित करा कर उसके प्रचार का प्रबन्ध हो, जिससे उसको पढ़ने वाले व्यक्ति वैदिकधर्म की सत्यता को अपने धर्म से मिलान कर सकें ।

(१३) भारत में प्रचलित विभिन्न मत-मतान्तरों की पोपपीला से समस्त लोगों को अवगत कराना, तथा उनके फंसाने वाले तौर तरीकों से जनसाधारण को जागरूक करना ।

चूंकि हमारा प्रचार कार्य सभायें व समाजें करती हैं, और यदि वे ही अपने दायित्व के प्रति उदासीन हो जायें तो हमारा कर्त्तव्य है कि उसके कारणों की जांच कर उन्हें दूर करने का प्रयत्न करें । आज सभाएं व समाजें आज से ५०-६० वर्ष पूर्व की सभायें व समाजें नहीं है । इसी कारण इनके फैलाव के साथ-साथ हम संकुचित होते जा रहे हैं, हमारा प्रभाव बढ़ने के स्थान पर घट रहा है । अतः समाजों व सभाओं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के आन्तरिक सुधार के लिये निम्न विचार प्रस्तुत करता हूँ। आशा है स्वार्थरहित होकर सभी अधिकारीगण इन पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे।

(१) सबसे पूर्व हमें अपने कालेजों, स्कूलों की ओर ध्यान देना चाहिये, इनके कारण समाज के कार्य शिथिल हो गये हैं, सदस्यों में आचार हीनता आ गई है और समाज में अवांछित तत्वों ने घुसपैठ कर ली है। समाजों का निर्वाचन, नये सदस्यों का बनना केवल उसकी संस्थाओं पर आधिपत्य प्राप्त करने तक सीमित हो गया है। इस स्थिति में यदि समस्त कालेज, स्कूल तथा अन्य संस्थाएँ एक पृथक ट्रस्ट बना कर उसके सुपुर्द कर दी जाएँ। इस पद्धति द्वारा दोनों का कल्याण होगा। स्कूल आदि भी ठीक हो जायेंगे तथा समाजें भी शुद्ध रूप से प्रचार कार्य में लग सकेंगी। कोई कालेज, स्कूल आर्य समाज के अन्दर बिल्कुल न लगें।

(२) आर्यसमाज प्रत्यक्ष रूप से राजनीति में न पड़े। समाजों व सभाओं के अधिकारी केवल वे ही व्यक्ति चुने जायँ जो सीधे किसी भी राजनैतिक संस्था से सम्बन्धित न हों अन्यथा वे अपने-अपने स्तर पर स्वार्थ सिद्धि के लिये समाजों व सभाओं के साधनों का उपयोग अपनी पार्टी के लिये करते हैं। ऐसे व्यक्ति केवल साधारण सदस्य रहें और समाज के कार्य में आर्य बन कर योगदान करें। एक राजनैतिक व्यक्ति आज के युग में यम-नियम का पालन नहीं करता, उसका जीवन साधक का जीवन नहीं होता, अतः उस व्यक्ति का किसी सभा अथवा समाज का अधिकारी बन जाने पर सम्बन्धित संस्था पर आक्षेप होने लगते हैं।

(३) नियमों में परिवर्तन करके आज के अनुरूप बनाया जाये, पूर्णरूपेण निर्वाचन पद्धति को हटा कर सलैक्शन के बाद इलैक्शन हो। जो व्यक्ति कर्मनिष्ठ सिद्धान्तों पर (मन, वचन, कर्म से) चलने वाले हों, नियमों का पालन करते हों, साधक का जीवन व्यतीत करने वाले हों उनमें से ही निर्वाचन किया जाये, इस पद्धति के अपनाने से संस्था शुद्ध आर्य संस्था बन सकेगी और हम अपने नारे को संसार को आर्य बनाओ, सफल बनाने की दिशा में अग्रसर होंगे।

(४) स्वार्थ की दृष्टि से कोई भी व्यक्ति आर्यसमाज का सदस्य न बनाया जावे। सदस्य बनाते समय व किसी व्यक्ति को अधिकारी चुनते समय विशेष ध्यान रखा जाये कि वह पूर्ण व्यसन रहित हो। यदि कोई व्यसनी है तो उसे किसी भी स्थिति मे न चुना जाये चाहे वह कितना ही प्रतिष्ठित, धन सम्पन्न व्यक्ति भले ही हो। जब हम सम्पन्नता व अन्य आधार पर किसी को चुन लेते हैं तो फिर क्यों वह व्यक्ति व्यसन को त्यागेगा और समाज से डरेगा ?

वर्णाश्रम व्यवस्था अपने में संकुचित व शिथिल होती जा रही है यह आवश्यक है उसे प्रगति दी जाए। इसके लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज तथा अन्य नेताओं के अनुरूप हमारे अधिकारी गण व कर्णधार अपना उदाहरण प्रस्तुत कर इनका मार्ग प्रशस्त करें।

अंत में मेरी विनम्र प्रार्थना है कि हमारे अधिकारीगण व कर्णधार शांति व धैर्य एवं गम्भीरता से विचारें और अपने कार्य कलापों से हम सभी का मार्ग दर्शन करें ताकि हमें भी साहस मिले और हम आगे बढ़ें।

यदि हम व हमारे अधिकारी वास्तव में संन्यास व वानप्रस्थ न लें तो कम से कम समाजों व सभाओं से तो ५०-५५ वर्ष की आयु में स्थान छोड़ दें और नवयुवकों को आगे लाकर उन्हें अपने अनुभव से लाभान्वित करें। हमारी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समाजों व सभाओं में निर्वाचन उग्र रूप धारण करता जा रहा है, इसके लिए तोड़ फोड़ होने लगी है क्या धार्मिक क्षेत्र में इस प्रकार की गतिविधियां उपयुक्त हैं।

हमें प्रचार करना चाहिए, ऋषि ऋण ऊपर चढ़ा है। भारत के पूर्वी प्रान्तों में हमें जाने का साहस नहीं हो रहा है और वहाँ पर देश, धर्म व जाति विरोधी कार्यवाहियाँ हो रही हैं। बड़े-बड़े नगरों में सम्मेलनों का आयोजन हो रहा है, भाषण होते हैं, प्रस्ताव पास होते हैं। प्रस्तावों को क्रियान्वित कराने की शक्ति हममें नहीं है। यदि हमारे अन्दर धर्म और देश प्रेम है तो हमें पूर्वांचल में जाना होगा, वहाँ अपनी योजनाओं को क्रियान्वित करने के लिए शक्ति संग्रहीत कर विद्रोही तत्वों, से देश धर्म व जाति की रक्षा करनी होगी। आर्यसमाज में मिशनरी भावना के कार्यकर्ता तैयार करके आगे बढ़ना होगा। केवल राजधानी में बैठकर कुछ नहीं होगा। ग्रामीण क्षेत्रों को भी अपने कार्य क्षेत्र में नहीं ला पा रहे हैं। आजकल कोई उपदेशक बनने को तैयार नहीं होता, इसका मुख्य कारण हमारा अपने कर्तव्यों का पालन न करना ही है। गुरुकुल आदि तक में राजनीति व कूटनीति के अड्डे बनते जा रहे हैं जिनके कारण वहाँ के आचार्य व स्नातक तक आर्य भावना से ओत प्रोत नहीं हो पाते।

मुझे आशा है इन बातों को पढ़कर उपेक्षित न किया जाएगा, यदि तथ्य है तो उन्हें स्वीकारा जाए।

सधन्यवाद।

भवदीय,

आर्यसमाज रुड़की (सहारनपुर)

सत्य प्रकाश गुप्त

आओ तुम भी हँसो, और हम भी हँसे

एक थे लाला जी। सर्दी के मौसम में बड़ी देर तक सोते थे। एक दिन कुछ जल्दी ही उनकी आँख खुल गई। उन्होंने नौकर को पुकारा 'अरे घन्नू ! द्वार खोल कर देख जरा, सूरज निकला है या नहीं ?"

नौकर बाहर जाकर तुरन्त ही लौट आया और बोला "लाला जी अभी तो बहुत अन्धेरा है।"

लालाजी बिगड़ उठे और बोले "अरे ! बुद्धू, कुछ दिमाग से काम भी ले, अगर अन्धेरा है तो लालटेन जलाकर क्यों नहीं देख आता।

× × × ×

टी. टी. ने यात्री से पूछा—"जनाब टिकट दिखाइए !"

यात्री ने जेबें टटोली और बोला "ऐसा लगता है कि मेरा टिकट कहीं खो गया है।"

टी-टी.—जनाब यह तो बड़ा पुराना बहाना है।

"अच्छा श्रीमान् ! यह पुराना है तो कोई नया अब आप ही बता दीजिए।" यात्री ने तपाक से उत्तर दिया।

× × × ×

ग्राहक : आज के तुम्हारे समोसे अच्छे नहीं, क्या बात है ? कल तो बड़े अच्छे थे।

दुकानदार : श्रीमान् जी ! आप भी कैसी बात करते हैं ? ये कल वाले समोसे ही तो हैं।

× × × ×

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कल्याणकारी प्रार्थना

अपने कल्याण और अपनी आत्म-शुद्धि के लिए नीचे लिखी प्रार्थना का नित्य प्रातः तथा सायंकाल पाठ करें और लाभ उठावें।

गायत्री मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमही धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

हे प्राणदाता, दुःख-विनाशक, सुख-स्वरूप परमात्मन् आप सकल जगदुत्पादक, सर्व श्रेष्ठ, पाप-विनाशक, और दिव्यगुणों के भंडार हैं। हम आपका ध्यान करते हैं आप हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित कीजिये ।।

असतो मा सद्गमय—
तमसो मा ज्योतिर्गमय—
मृत्योर्मा मा अमृतं गमय—

मुझे असत् से सत् की ओर ले चल-अंधकार से प्रकाश की ओर ले चल, मृत्यु से अमृत की ओर ले चल ।।

प्रार्थना—ओ३म् विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव ।।

अर्थ—हे सकल जगत् के उत्पत्ति कर्ता समग्र ऐश्वर्य युक्त, शुद्ध स्वरूप, सब सुखों के दाता, परमेश्वर! कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिये और जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव पदार्थ हैं वह सब हम को प्राप्त कराइये ।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देव ।।

अर्थ—भगवन्! आप ही हमारे माता पिता हैं। आप ही हमारे बन्धु और सखा हैं। स्वामिन् आप ही हमारी विद्या तथा धन हैं। हे नाथ! आप ही मेरे सर्वस्व हैं और आप ही मेरे पूजनीय उपास्यदेव हैं। आपके स्थान में किसी अन्य का भूलकर भी मैं कभी पूजन न करूँ। हे भगवान्! मुझे अपना आनन्दमय और सबसे अधिक कल्याणमय स्वरूप दिखा, मेरे पास आपके देने के लिये कुछ भी नहीं है जो कुछ है वह सब आप का ही दिया हुआ है। अतः हे प्रभु! मैं अपना सर्वस्व आपके समर्पण करता हूँ और वार वार नमस्कार करता हूँ ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभु कृपा करो हमारी प्रवृत्ति धर्म की ओर हो, हम पापों से सदा बचे रहें ताकि पाप हमारे प्रिय भोगों का अपहरण न कर सकें ।।

हे परमात्मन् ! आपके सिवाय हमारा कल्याणकारक इस संसार में कोई नहीं है। हम को केवल आप पर सब प्रकार का भरोसा है सो आप ही पूरा करेंगे, हम लोग तो आपकी ही शरण हैं, जैसे आपकी इच्छा हो वैसा हमारे लिये आप कीजिये परन्तु हम आपकी सन्तान आपकी कृपा से उत्तम सुख को प्राप्त हों।

हे महाराजाधिराज ! जो मैंने मन से, वाणी से और कर्म से, अज्ञान व प्रमाद से पाप किया हो किंवा करने को हो, उस मेरे पाप को दूर कर और ज्ञानपूर्वक पाप करने से भी मुझ को रोक दे जिससे मैं शुद्ध होकर आपकी सेवा में स्थिर होऊँ।

विनय सुनो हे नाथ जी। दीनबन्धु भगवान्।
जो आए तुम्हारी शरण, उसका हो कल्याण।
हाथ जोड़ विनती करें, सुनिये दीनदयाल।
तुम लग हमरी दौड़ है, तुम हो हो रछपाल ।।
वेद ज्ञान के अधिष्ठाता परम प्रभु कल्याण करें ।।
ओं शान्ति शान्ति शान्ति

भजन

सदा ओम् मुख से उचारे चला जा—सकल कष्ट अपने निवारे चला जा।
मनुष्य जनम मिलता है खुशकिसमती से—उसे नेकियों से सँवारे चला जा ।।
करेगा हरि तेरी आशा की पूर्ति—तू सीधा उसी के द्वारे चला जा ।।
अगर धर्म रक्षा में आवे मुसीबत—तू हँस हँस कि प्यारे सहारे चला जा ।।

□ —भोला राम आर्य
सहारनपुर

१ अप्रैल से १२ अप्रैल १९७५ तक

अपने क्षेत्र का हर कोना

स्वामी दयानन्द के रंगीन चित्रों से भर दीजिए

लागत ३५) सैकड़ा
प्रचार के लिए २००) हजार

मंगाइए और लगाइए

दयानन्द संस्थान नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज शताब्दी पर अमूल्य उपहार

दयानन्द-यजुर्वेद भाष्य भास्कर

[व्याख्याता : पं० सुदर्शनदेव जी आचार्य, एम० ए०]

ऋषि मन्त्रार्थद्रष्टा होते हैं अतः उनका भाष्य ही प्रामाणिक तथा दोषरहित होता है। ऋषिभाष्य क्रमशः केवल महर्षि दयानन्द का ही भाष्य है। महर्षिभाष्य कुछ कारणों से प्रायः सभी को समझ में नहीं आता था। वे सब कठिनाइयाँ इस व्याख्या के द्वारा दूर कर दी गई हैं। अतः कथाओं और व्याख्यानों के लिए यह अति उपयोगी बन गया है।

- पूर्व महर्षिभाष्य में अन्वय सहित पदार्थ न होने से पाठक मन्त्रार्थ को हृदयङ्गम नहीं कर पाते थे। इसमें अन्वयसहित पदार्थ करके इस बाधा को दूर किया गया है।
- महर्षि का सम्पूर्ण संस्कृत भाष्य अक्षुण्ण रखा गया है।
- महर्षि के संस्कृतभाष्य का अभी तक प्राप्त भाषानुवाद अशुद्ध और धाराप्रवाह में नहीं है। परन्तु इसमें संस्कृत का भाषानुवाद शुद्ध, सरल एवं मुहावरेदार है।
- विभिन्न विशेष स्थलों की सरल व्याख्या की गई है।

विशेष रियायत

१६५० बड़े आकार के पृष्ठों में मोटे, चिकने बढ़िया कागज पर सुन्दर छपायी। **चारों भागों का मूल्य १२०) प्रचारार्थ ६०)** में पूरी कपड़े की आकर्षक जिल्द।

दयानंद-यजुर्वेदभाष्य-भाषानुवाद

(यजुर्वेद का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य)

'दयानन्द-यजुर्वेदभाष्य-भास्कर' हिन्दी भाष्य

दो भागों का मूल्य ५० रु०, **प्रचारार्थ २५ रु०।**

प्राप्ति स्थान
दूरभाष—२६८३६०

आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट
२ एफ, कमला नगर, दिल्ली–७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आखिर रहस्य क्या है ?

हलवाई की दुकान पर भारी भीड़ थी। एक साथ था ग्राहकों का जमघटा। एक के बाद-एक लोग मिठाई की फरमाइश करते और हलवाई ग्राहक द्वारा माँगी हुई मिठाई देता जाता और पैसे या रुपए थामता जाता। इसी बीच एक ग्राहक ने एक अठन्नी हलवाई की ओर बढ़ाई; दो लड्डू माँगे। किन्तु हलवाई ने अठन्नी हाथ में ली और इस भीड़भाड़ के बावजूद भी उसे दो बार उलटा पलटा और व्याख्या करते हुए कहा, "भइया यह तो खोटी है।

किन्तु उसी समय दो तीन और ग्राहकों ने मिठाई ली और पैसे थमाए। उसमें कई ग्राहकों ने अठन्नियाँ और चवन्नियाँ भी दीं। किन्तु दुकानदार बिना देखे हुए ही, उन्हें गल्ले में डालता गया।

एक व्यक्ति इस दृश्य को देख रहा था।

उसने इस दृश्य पर मन ही मन आश्चर्य का अनुभव किया। उसकी उत्कंठा बढ़ी कि यह भी अजीब दुकानदार है कि जो एक ग्राहक द्वारा दिए गए सिक्कों को दस बार उलटता पलटता है, किन्तु कई के द्वारा दिए गए सिक्कों को बिना देखे ही गल्ले में फेंकता जाता हे।

वह खड़ा हो गया और प्रतीक्षा करने लगा कि भीड़ कुछ घट जाए तो वह अपनी जिज्ञासा को हलवाई को पूछकर ही शांत करे।

थोड़ा समय बीत गया और ग्राहक भी अतएव दो ही रह गए। तब वह हलवाई से बोला "लालाजी। कृपया यह तो बताइए कि एक ग्राहक द्वारा दी गई अठन्नी को तो अपने चार बार उलट पलटकर देखा किन्तु दूसरे ग्राहकों के द्वारा दिए गए सिक्कों को बिना देखे भाले ही आप गल्ले में ड़ालते रहे। आप यह तो बताइए कि इसका क्या कारण है ?

हलवाई ने उत्तर दिया भाई साहब ! ऐसा करने का कारण यह है कि जो ग्राहक खोटा सिक्का लाता है वह जानता है कि सिक्का कैसा है ? अतएव वह चीज लेने से पहले ही सिक्का दुकानदार को देने की कोशिश करता है। क्योंकि उसके मन की शंका ही उससे ऐसा कराती है। इसके स्थान पर जो सही सिक्का लाता है, ऐसी किसी प्रकार की शंका अपने मन में नहीं होती। अतएव वह पहले चीज प्राप्त करता है और बाद में पैसे देता है।

"इसी कारण जो चीज लिए बिना ही पैसे पकड़ा देता है, उसके बारे में मुझे शंका होती है और मैं उसके द्वारा दिए गए सिक्के को भली प्रकार लौट बदलकर देख लेता हूँ। और जो चीज लेने के बाद पैसे देता है, उसके द्वारा दी गई राशि को बिना देखे ही गल्ले में डाल लेता हूँ।"

प्रश्न करने वाले की जिज्ञासा का शमन हो गया और उसने रहस्य जान लिया।

□

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महर्षि दयानन्द का तिरंगा चित्र : २००) हजार मंगाकर
अपने क्षेत्र के हर कोने में लगाएं ! भारी संख्या में ट्रैक्ट बांटिए
और कुछ ऐसा कीजिए कि आर्य समाज अमर रहे" का स्वर सर्वत्र गूँजे।

वादे की गठड़ी

एक चूहा था।

चूहे हमेशा भूखे रहते हैं, सो वह चूहा भी भूखा था। अपने लिए भोजन खोजता हुआ वह इधर से उधर टपटपाता फिरता था। चारों ओर खोजता, लेकिन खाने के लायक कहीं कुछ नहीं। यों दूकानों में खाने-पीने की बहुत-सी चीजें थीं, लेकिन उसके पास खरीदने को पैसे नहीं थे। तमाम छान मारा, लेकिन खाने के लायक उसे कोई चीज नहीं मिली।

तब उसने देखा कि घूरे पर एक बहुत बड़ी गठरी पड़ी है। बाप रे बाप! इतनी बड़ी गठरी कि उसमें तीन मंजिल और चार मंजिल की इमारत समा जाये। इतनी बड़ी गठरी में खाने-पीने की न जाने कितनी चीजें पड़ी होंगी। चूहा उछलकर उस गठरी पर चढ़ गया और उसके ऊपर-ऊपर दौड़ता रहा, फिर मगन होकर नाचने लगा। उसके बाद उसने भोजन की प्राप्ति के लिए भगवान् की प्रार्थना की और उन्हें धन्यवाद दिया। वह अपने पैने दांतों से गठरी को कुतरने लगा। कुतर रहा है, कुतर रहा है और कुतरता ही जाता है। सारी गठरी खत्म हो गयी, मगर खाने की कोई चीज नहीं मिली। खाने की चीज तो दूर रही, उसे गठरी में हवा तक नहीं मिली कि जरा उस हवा में सांस तो ले सके। चूहा क्रोध से जल उठा। भला ऐसी भी गठरी होती है कि उसमें कुछ बँधा ही नहीं हो! यह साफ चार-सौ-बीसी है, सरासर घोखा है। उसके जी में आया कि वह कोतवाली में चला जाये और इस बात की रिपोर्ट कर दे। मगर फिर खयाल आया कि थाना तो बिल्लियों के अधिकार में है। वहाँ मेरी कौन सुनेगा?

तब वह एक सम्पादक जी के पास पहुँचा जिनकी मेज के नीचे पड़ी टोकरी में वह अनेकानेक स्वादिष्ट-कहानियां, रसीली कविताएँ और विद्वत्तापूर्ण निबन्ध पाता रहता था और खाता रहता था। उसने जाकर सम्पादकजी से कहा, "नमस्ते।" सम्पादक जी, आजकल बड़ा फरेब है, बहुत घोखा है। मैंने बहुत बड़ी गठरी देखी। इतनी बड़ी गठरी कि उसमें तीन और चार मंजिल की इमारत समा जाये। मगर उसमें कुछ भी नहीं था, हवा तक नहीं थी।

सम्पादक जी सुनकर हँसने लगे। हँसते हुए बोले, "अरे भाई, तुम्हें भी घोखा हो गया। वह किसी विधान सभा या पार्लमेंट के सदस्य के वादे की गठरी थी जिसे उसने चुनाव जीतने के बाद फैंक दिया होगा।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पाँच उँगलियाँ हाथ की !

प्राय: लोग यही कहते हैं कि किसी के भी हाथ की पांचों उंगलियां बराबर नहीं होतीं।

ऐसा सुना होगा तुमने भी जरूर। परन्तु ऐसा कहा क्यों जाता है ? यह तुम सोचते अवश्य ही होगे। हम तुम्हें बताते हैं कि हाथ की पाँचों उंगलियां बराबर कैसे नहीं होतीं और तुम्हें हाथ की कौन-सी उंगली बनना चाहिए। यही है वर्णन इस छोटी-सी कहानी में।

पहली उंगली को कहा जाता है कन उंगली या छोटी उँगली। वह कहती है "भूख लगी है, भूख लगी। खानी है हमने रोटी।

तभी बोल उठी दूसरी उँगली "भूख लगी पर घर में आटा नहीं।"

तभी बोल पड़ी बीच की अर्थात् बड़ी उँगली "आटा नहीं तो उधार ले आओ।"

इतने में चौथी बोली "किन्तु इस मँहगाई के जमाने में उधार देगा भी कौन ?"

पाँचवीं उँगली अर्थात् अंगूठा जो था अब तक मौन और बोला "देता कौन ? उधार दूँगा मैं।"

शायद इस छोटी-सी कहानी से नन्हें भइया, नन्हीं बहनों! तुम्हें पता चल गया होगा कि दुनिया में कितनी तरह के लोग हैं। इसीलिए तो सब कहते हैं कि हाथ की पाँचों उँगलियाँ समान नहीं होती।

पर अब जरा यह तो बताओ कि तुम्हें कौन-सी उँगली बनना है।

अच्छा तुम नहीं बताते तो मैं ही बताती हूँ कि तुम्हें कौन-सी उँगली बनना चाहिए। तुम्हें बनना है तो अंगूठा बना जो सभी को देता है किसी से लेता कुछ भी नहीं और जिसके बिना है सब कुछ बेकार।

यदि तुम पाँचवीं उँगली अर्थात् अंगूठे जैसा बन गए तो दुनियाँ तुम्हारा लोहा मान लेगी। और तुम्हें भारत के सच्चे बच्चे अच्छे बच्चे के रूप में जान लेगी।

—कु० ऋचा

बच्चों! क्या तुमने ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र पढ़ा है ? यदि नहीं तो आज ही माता-पिता से मांग कर पढ़ो!

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदों में अश्व शब्द के अर्थ

—श्री रामशरण वशिष्ट

वेद के पाठकों को मन्त्रों का अर्थ करते समय वेदमन्त्रों के अर्थ ठीक से जानने की तकनीक को भी जानना चाहिए। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इस विषय में हमारा मार्गदर्शन किया है। यदि उसके अनुसार हम वेदमन्त्रों के अर्थ करेंगे तो वेदज्ञान भी हमें उत्तम रूप में दृष्टिगोचर होगा और पता चलेगा कि मध्यान्तर काल में पाश्चात्य विद्वानों ने कैसे अर्थ के अनर्थ किए हैं।

वेदों में अश्व शब्द कई मन्त्रों में आता है, परन्तु इसके अर्थ केवल घोड़ा नहीं। पाश्चात्य विद्वानों ने तो जहाँ यह शब्द देखा वहाँ ही इसके अर्थ घोड़ा कर दिये। और इसलिए अश्वमेघ के अर्थ यज्ञों में घोड़े का वध करना करते रहे। पर इस शब्द के अर्थ प्रकरण के अनुसार राष्ट्र व सूर्य, सूर्य की रश्मियाँ भी होते हैं।

श० ब्रा० (२-८-५) मे लिखा है—"राष्ट्र वा अश्वमेधः। वीर्य वा अश्वः।"

(ऋग् १-१६३-९, १०) में (यजु० २९-२०) में "हिरण्यशृंङ्गोऽयो अस्य-पादा—वा दिव्यासो अत्याः मश्वाः" आते हैं। जिससे स्पष्ट है कि यहाँ अश्व सूर्य का वाचक है और उसकी चमकती सुनहरी किरणें हंसों की डार की न्यांई द्युलोक से आती हैं।

इसी प्रकार ऋग् २-३५-६ में सूर्य का वाचक है।

मन्त्र यह है—

अश्वस्यात्र जनिमास्य च स्वर्दु हो रिषः संपृचः पाहि सूरीन्।
आमासु पूर्षु परो अप्रमृष्यं नारातयो वि नशन्नानृतानि॥

ऋग् १०-९२-८ और ऋग् ८-५९-७ में अश्व सूर्य की किरणों का वाचक है। हरित शब्द भी सूर्य का वाचक है।

अथर्व वेद १३-१-२४ में भी किरणों के अर्थ में आया है।

ऋग् १०-९२-८ में पाठ इस प्रकार है—

भीमस्य वृष्णो जठरादमिश्वसो दिवेदिवे सहुरिः स्तन्नवाधितः॥

यह भी इसके अर्थ किरणें हैं।

परन्तु ऋग् ७-१-१२ में अग्नि की लाट को अश्व कहा है। यह मन्त्र इस प्रकार है—

यमश्वी नित्यमुपयाति यज्ञं प्रजावन्तं स्वपत्यं क्षयं नः।
स्वजन्मना शेषसा तावृधानम्॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋग् १-६४-६ में इसके अर्थ मेघ हैं जो वर्षा करता है। यहाँ पर शब्द वाजिन का आता है जो घोड़े का वाचक भी है।

वेद में अश्व के लिए कई शब्द आते हैं जैसे कि हरित, अर्वर, वाजिन। यदि हम अश्व शब्द के "Root meanings" भी देखें तो यह शब्द आशु धातु से बना है जिसका अर्थ शीघ्रगामी है। कोश में भी इस शब्द के अर्थ यही बताये हैं। यास्काचार्य ने इसके अर्थ निरुक्त में अश्व क्षेमते शीघ्रगामी किये हैं।

अश्व शब्द के और भी कई अर्थ हैं। (श० ब्रा० में ८-८-२७) में लिखा है "वज्रो वै अश्वः"। वीर्यं वः अश्वः। अग्निर्वा अश्वः। और (२-१-४) में राष्ट्र वा अश्वः। बृहदारण्यक उपनिषद् में अश्व के अर्थ (१-१-१) में ईश्वर का विराट जगत् किये हैं।

कई टीकाकारों ने मेध्यस्य अश्वः के अर्थ यज्ञ का घोड़ा किये हैं। यह उनकी भूल है। मेघ धातु का अर्थ "मेघा-हिंसा का संगम" है!

महाभारत में अश्वमेध का वर्णन करके लिखा है कि घोड़ों के मेले होते हैं जिनमें घोड़ों के करतब व दौड़ आदि होते हैं। (महाभारत) (प्रदर्शिणी)।

यजुर्वेद (२३-१७) से प्रतीत होता है कि अग्नि, वायु व सूर्य को यज्ञ के पशु बताया है।

यजु (३१-१६) "यज्ञेन यज्ञमयजन्त" देवाः के अर्थ करते हुए निरुक्त में (१२-४५) यास्काचार्य ने लिखा है कि देवताओं ने अग्नि से अग्नि यज्ञ किया।

वेदों में जहाँ कहीं पशु याग का वर्णन प्रतीत होता है यहाँ इन्हीं आधिदैविक यज्ञों का वर्णन है। इसी प्रकार ऋ० १-१६३ में सूर्य को अश्व कहा है। इसका संकेत हमें स्वयं इसके मन्त्रों से मिलता है। इनसे स्पष्ट है कि इन मन्त्रों में किसी दैनिक यज्ञ का संकेत है जिसको न जानकर घोड़े के वध से यज्ञ करने के अर्थ अज्ञानता से किये जाते हैं।

तैत्तिरीय संहिता (५-७-५२) में असावरित्योऽश्व मेघः। अर्थात् सूर्य का यज्ञ ही अश्वमेघ है।

कई वेद मन्त्रों में अश्व शब्द घोड़े के लिए ही आया है। यजुर्वेद में बहुत मन्त्र आते हैं जिनमें वरों में घोड़ों का पालना, उनका लाभ, गाड़ी खींचने, हल चलाने, सवारी करने, युद्ध में शत्रु का नाश करने में प्रयोग किये जाने का वर्णन है। उनके बल का, उनके शीघ्रगामी होने का, उनको सिधारने का भी वर्णन आता है और यह भी आता है कि घोडों को सजाते हैं, सुन्दर वस्त्र उसके ऊपर डालते हैं। घोड़ों के मांस खाने का निषेध भी आता है और घोड़ों के वध से यज्ञ करने का भी निषेध है। (अथर्व ७-५-५) घोड़े की ३४ प्रकार की चाल का वर्णन (यजु० २५-४१) यहाँ तक कि घोड़े को मालिश करने, नहलाने, बाँधने, लगाम डालने, चाबुक मारने आदि कई बातों का वर्णन यजुर्वेद के २५ तथा २९वें अध्याय में आता है। विस्तार के डर से हम मन्त्रों को नहीं दे रहे।

वेद के पाठकों को मन्त्रों का अर्थ करते समव वेद मन्त्रों के अर्थ ठीक जानने की तकनीक को जानना चाहिये। स्वामी दयानन्दजी ने इस विषय में हमें मार्ग प्रदर्शन किया है। यदि उसके अनुसार हम वेद मन्त्रों के अर्थ करेंगे तो वेदज्ञान का हमें उत्तम रूप दिखाई देगा। और पता चलेगा कि मध्यान्तर काल में पाश्चात्य विद्वानों ने कैसे अर्थ के अनर्थ किये हैं?

□

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

खाओ फल – पाओ बल

★ सत्यपाल

स्वस्थ शरीर ही स्वस्थ मन का आश्रयस्थल है निर्बल व्यक्ति न सही दिशा में चिन्तन ही करपाता है और न ही वह जीवन समर में आड़े आने वाली समस्याओं से जूझ सकता है। रोग जब किसी व्यक्ति को आ घेरते हैं तो उनसे छुटकारा पाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार उपचार कराता है। वह विभिन्न उपचार पद्धतियों का सहारा लेता है। किन्तु यदि यह कहा जाए कि फल खाइए और रोगों को भगाइए तो अनेक लोगों को बात अटपटी सी लगेगी। क्योंकि उनकी मान्यता है कि औषधि उपचार के साथ ही फल भी रोग के निदान और स्वास्थ्य प्रदान करने में सहायक सिद्ध हो पाते हैं।

इतना ही नहीं अपितु जब फलों की चर्चा होती है तो सामान्यत: ध्यान सेब और अंगूर सरीखे फलों की ओर ही ध्यान जाता है। कई लोगों को तो यह कहने में भी संकोच नहीं होता कि 'भइया फल खाना तो रईसों का चोचला है। परन्तु तनिक गम्भीरता सहित विचार करें तो स्पष्ट हो जायेगा कि बात ऐसी नहीं। प्रकृति षट् ऋतुओं में प्रत्येक देश और प्रदेश में एक एक फल अवश्य ही ऐसा पैदा करती है, जिसे महलों से लेकर झोंपड़ियों तक में निवास करने वाले सभी खा सकते हैं और शरीर के लिए आवश्यक पोषक आहार पा सकते हैं।

स्वास्थ्य रक्षा में योग

फलाहार स्वास्थ्य की दृष्टि से कितना उपयुक्त है उसके संबंध में पाकशास्त्रियों का कथन है कि यदि मनुष्य को पूर्णत: स्वस्थ रहना है तो व्यक्ति के नित्य के भोजन में ५०-७५ ग्राम फलों का आहार आवश्यक है। शरीर के विकास और स्वास्थ्य की रक्षार्थ अधिकांश लवण और विटामिनों का स्रोत फल तथा सब्जियाँ ही हैं। शरीर के लिए जो प्रोटीन, स्वेत सार, खनिज एवम लवण तथा विटामिन जरूरी हैं वे फलों से काफी मात्रा तक सरलता सहित प्राप्त हो जाते हैं और संतुलित भोजन में भी इन फलों को भारी महत्त्व प्राप्त है।

रोग निवारण और फल

रोगों के निवारण में फल महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनमें ऐसा करने की अचूक शक्ति विद्यमान है। इनके सेवन से खून के तेजावी प्रभाव का निवारण ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाता है एवं रक्त शोधन भी होता है। ऐसे लोग जो कि फलों का सेवन नहीं कर पाते गठिया, वातरोग, चर्मरोग आदि, अनेक रोगों के शिकार हो जाते हैं। उनके पाचन संस्थान में फलों के लवण एवं आर्मेनिक एसिड का रूप क्षारीय रूप धारण कर लेता है। फलों से प्राप्त फास्फोरस तथा पोटैशियम लवण रक्तकोष निर्माण में आवश्यक होते हैं और मानव शरीर की आंतरिक क्रियाओं के सुचारू संचालन की दृष्टि से ऐसा होना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त खनिज लवणों के भी ये नितांत महत्वपूर्ण स्रोत हैं। उनकी न्यूनता से पाचन क्रिया में गड़बड़ी पैदा होती है। विटामिन 'सी' अथवा साइट्रिन जिसकी कमी से त्वचा के नीचे रक्तस्राव का रोग हो जाता है। सेव, संतरा, नींबू इत्यादि फलों में भी काफी मात्रा में पाए जाते हैं।

फलों से अनेक रोगों का भी निवारण होता है। इस सम्बन्ध में नारंगी, पपीता आदि का विशेष महत्त्व है। संक्षेप में यहाँ कतिपय फलों की विभिन्न रोगों के निवारण की क्षमता का वर्णन प्रस्तुत है।

(१) नारंगी—यह ऐसा फल है जो ब्रांकाइटिस, मन्दाग्नि और कार्य में अरुचि आदि रोगों के निवारण में प्रभावी सिद्ध हो सकता है। इसके रस का उपयोग इन रोगों के निवारणार्थ किया जा सकता है तो फल का उपयोग हो सकता है। औसत व्यक्ति को ४-५ नारंगी के फल ही काफी हैं। रोग की अवस्था में तो इसकी विशेष उपयोगिता है।

(२) केला—धातु पात, पतले दस्त, नपुंसकता, स्वेतसार, आदि रोगों के निवारण में काफी सहयोगी सिद्ध हो सकता है। धातुपात के रोग में भोजन के बाद शहद के साथ ४-५ केले खाना लाभदायक है। पतले दस्तों कब्ज के निवारण में केले का खजूर के साथ उपयोग मुफीद साबित होता है और नियम पूर्वक केले के व्यवहार से नपुंसकता सरीखे रोग का भी निवारण हो जाता है। श्वेतसार के रोग से मुक्ति पाने में प्रतिदिन एक केला नियम पूर्वक इस्तेमाल करना उपयोगी है।

(३) पपीता—यह तिल्ली के बढ़ने, कब्ज व चेहरे की सिकुड़न के रोग के निवारण का कारगर उपचार है। तिल्ली के बढ़ने की स्थिति में प्रतिदिन कच्चे पपीते के गूदे को नमक के साथ प्रयोग में लाने से लाभ होता है तो कब्ज को दूर करने में २-३ पके फल उपयोगी सिद्ध होते हैं।

(४) आम—कई रोगों की अचूक औषधि है। नींद न आने के रोग के निवारण में यह सहायक है तो गुर्दे की बीमारी, कब्ज, स्वास्थ्य की कमजोरी और नपुंसकता आदि—रोगों से छुटकारा पाने में भी इसका इस्तेमाल काफी सहायक सिद्ध होता है।

इसके उपयोग की विधि यह है कि नींद न आने के रोगी को आम के रस को गो दुग्ध के साथ दिया जाए। कब्ज के लिए बीजू आम नितांत उपयुक्त है तो आम का लगातार उपयोग स्वास्थ्य को सुधारने में अपना कमाल दिखाता है।

(५) शरीफा—यह तो इतना रोगनाशक फल है कि तपेदिक के रोगी को भी इसका उपयोग करने से लाभ होता है और कब्ज के निवारण में भी यह सहायक है।

(६) अमरूद—कुकुर खाँसी, कब्ज आदि के निवारणार्थ यह फल बड़ा उपयोगी है। पके अमरूद को गर्म बालू में भूनकर उपयोग करने से बीमारी दूर हो जाती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भोजन के उपरांत यदि अमरूद के फल का उपयोग किया जाए तो कब्ज दूर होकर पाचन शक्ति ठीक हो जाती है।

एक नींबू—अनेक रोगों की दवा

नींबू तो एक ऐसा फल है कि जो कई रोगों के निदान में कारगर और चमत्कारी भूमिका निभाता है। सिर दर्द हो तो एक कप चाय (बिना दूध की) के साथ एक नींबू का रस डालकर उपयोग करने से सिर दर्द और अपाचन से मुक्ति मिल जाती है। नींबू का रस यदि नीम की पत्ती के अर्क से धोने के बाद लगाया जाए तो खुजली से छुटकारा मिल जाता है।

एक नींबू को भीगे हुए खद्दर के कपड़े से लपेट कर ऊपर से मिट्टी लपेट दी जाए और फिर उसे अग्नि में पकाकर नींबू के रस को तनिक गर्म ही पिया जाए तो इससे मुंह आने, पायरिया, मुंह के महकने और टोंसिल आदि शरीर के रोगों में काफी लाभ पहुँचाता है।

आँवला—यह एक ऐसा फल है कि जो नाक से रक्तस्राव को रोकने में बड़ी प्रभावी भूमिका निभाता है। इसका उपाय यह है कि आँवला को ग्राइन्डर में पीस कर, उसका रस निकाल कर नाक में बूंद-बूंद टपकाया जाए।

आँवले के मुरब्बे व जेली का उपयोग दिल के कई रोगों और पेट रोग में लाभदायक सिद्ध होता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि फलाहार अनेक रोगों के निवारण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। फलों से प्राप्त होने वाली प्रोटीन से हमारे शरीर की कोशिकाओं का निर्माण होता है। जिनसे माँसपेशियां और रक्त ग्रन्थियां आदि की रचना होती है। इससे लाभप्रद सूक्ष्म जीवाणु और हारमोन्स की उत्पत्ति होती है तथा शरीर को आंतरिक क्रियाओं को सुव्यवस्थित रखते हैं तथा ये ऐसे जीवाणु का सृजन करते हैं जो रोगों व संक्रामक रोगों से शरीर को बचाते हैं। शरीर को शक्ति भी देते हैं। फलों से शरीर को ऐसी शक्ति प्राप्त होती है कि जो शरीर को सक्रियता प्रदान करती है।

इनसे प्राप्त कैल्शियम व लवण अस्थियों व दाँतों को पुष्ट करता है। इनसे प्राप्त विटामिन शरीर की रक्षा में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं।

★

माँ ने अपने छोटे बच्चे को अपनी उंगली पर पट्टी बाँधते हुए देखा तो पूछ उठी : "क्या हुआ मुन्नू ?"

"उंगली में हथौड़ी लग गई है।"

"लेकिन तुम्हारे रोने की आवाज तो मुझे सुनाई नहीं दी।"

"हाँ, मैं समझा था कि आप घर में नहीं हैं।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—नरेन्द्रकान्त हापुड़

भारत में जलपोत और नौसेना

आज के आणविक युग में भी नौसेनाओं का अपना महत्त्व है। नौसैनिक अवश्य ही अनेक बार विश्व इतिहास के गति चक्र को मोड़कर रख चुका है। विश्वविजय का स्वप्न अपनी आँखों में संजोए एक के बाद एक स्थान पर अपनी विजय पताका गाड़ता हुआ महाप्रतापी नैपोलियन बोनापार्ट यदि किसी कारण परास्त हुआ तो उसका एकमात्र आधार यही था कि अंग्रेजों की नौसेना फ्राँस के जहाजी बेड़े की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली और सुसंगठित भी थी। जिसके कारण नैपोलियन को अपनी विश्वविजय की कामना को हृदयतल में संजोए ही संसार से विदा होना पड़ा।

आज भारत भी अपनी नौसेनाओं के विकास पर पर्याप्त बल दे रहा है। यद्यपि भारत में नौसेना रखने का ज्ञान अत्यन्त प्राचीन काल से भारतीय शासकों को था। फिर प्रकृति ने भी भारत की रचना करते हुए उसे कुछ ऐसी स्थिति प्रतिदान स्वरूप प्रदान कर दी है, जिससे इतिहास के सुदूर अतीत में दृष्टि गड़ाते ही हमारी आँखों के समक्ष वह भव्य दृश्य उपस्थित हो जाता है जब भारत के वीर नाविक महासागर की उताल तरंगों पर अपने जलयानों को छोड़कर सागर के तूफानों से टक्कर लेते हुए आगे बढ़े थे। उन्होंने जावा (यवद्वीप) सुमात्रा, बोर्नियो ही नहीं अपितु विगत अतीत के पाताल और आज के अमरीका के तटों तक जाकर आर्य संस्कृति और हिन्दू सभ्यता की पुनीत पताका फहराई थी।

हमारे देश में ५ हजार मील तक फैला हुआ सुदूर सागर तट विद्यमान है, जिसमें कई स्थान प्रकृति पुरुष ने ही ऐसी काँट छाँट के साथ बनाए हैं कि जिनमें प्रकृति प्रदत्त बड़े बड़े बन्दरगाह स्थित है। मीलों तक फैले लम्बे चौड़े कई प्रदेश भी हमें प्रकृति ने प्रदान किए हैं। जिनसे प्राचीनकाल से ही बड़े बड़े जहाजों (जलयानों) के निर्माण का कार्य लिया जाता रहा है। इस कारण यदि अधिक पहले नहीं तो भी लगभग १००० ईस्वी ५९ से ही भारतीय नौकाएँ और जहाज महोदधि की लहरों पर नर्तन करते हुए विदेशों में प्रचुर सामग्रियों से लदकर गए हैं। दुर्भाग्य से हिन्दुओं में ऐतिहासिक अनुभूति के अभाव के कारण ही हम अपनी इस प्राचीनतम कला का विस्मरण कर बैठे हैं। किन्तु अभी भी कुछ अप्रत्यक्ष साक्षियां हैं जो हमारे पूर्वजों की इस कला और ज्ञान के प्रमाण प्रस्तुत करती हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्राचीन पुस्तकों में उल्लेख

प्राचीन पुस्तकों में वर्णित भारतीय नाविकों की कहानियाँ तथा क्षत्रिय राजकुमारों द्वारा द्वीपों और महाद्वीपों की यात्रा के वृत्तान्त इस बात का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं कि वे पूर्वी समुद्र को पार कर विदेशों में पहुँचे थे। हमारे देश की पुस्तकों में ही नहीं अपितु चीन के प्राचीन साहित्य तथा दक्षिणी पूर्वी एशिया के साहित्य में भी इन क्षत्रिय राजकुमारों तथा भारतीय व्यापारियों की सुदूर सागर यात्राओं की कहानियों का सविस्तार वर्णन और उल्लेख हुआ है।

इस संबंध में सर्वप्रथम लिखित विस्तृत विवरण एक यूनानी नाविक द्वारा लिखित पुस्तक से उपलब्ध होता है। जिसने इस पुस्तक की रचना ईसा की मृत्यु के पश्चात् प्रथम शताब्दी में की थी। यह यूनानी नाविक स्वयं भी लाल सागर से भारत की यात्रा पर आया था। उसने अपनी पुस्तक में सिन्धु नदी के मुहाने से लेकर गंगा के मुहाने तक का उल्लेख किया है। यही नहीं उसने यह भी लिखा है कि भारत में बनाए गए जलयान अरब और फारस तक ही नहीं अपितु पश्चिमी अफ्रीका के तटों पर आते जाते थे। उसके अतिरिक्त इस यूनानी नाविक का यह भी कथन है कि भारतीय जलयान बर्मा, मलय द्वीप इत्यादि भी जाते थे। जिन पर भारतीय वस्तुएँ इन सुदूर देशों में ले जायी जाती थी।

प्राचीन बन्दरगाह भड़ौच

इसने अपने विवरण में लिखा है कि उस समय भड़ौच भारत का प्रमुखतम बन्दरगाह था, जहाँ सैकड़ों नौकाएँ एवं बड़े जलयान खड़े रहते थे। यहाँ से ताँबे और चंदन की लकड़ी तथा आबनूस एवं हाथीदाँत से भरे हुए जहाज अरब और फारस के बन्दरगाह तक भेजे जाते थे।

फाहियान द्वारा उल्लेख

भारतीय नौसेना के सम्बन्ध में दूसरा लिखित उल्लेख एक चीनी बौद्ध भिक्षु फाहियान द्वारा लिखित लेखों से भी उपलब्ध होता है जो पाँचवी शताब्दी ईस्वी में भारत यात्रा पर आया था। यह भारत में पर्याप्त काल तक रहा तथा लौटते समय ताम्रलुक स्थान से एक जहाज में बैठकर अपने देश वापस लौटा। मार्ग में उसे कई विपत्तियों का सामना करना पड़ा और प्रमाणित बाधाओं, तूफानों और अंधड़ों को झेलने के पश्चात् ९० दिन के उपरान्त वह और उसके साथ जहाज में बैठे अन्य २०० यात्री यवद्वीप (जावा) पहुँचे।

उसने अपनी इस यात्रा के मध्य आए हुए तूफान के प्रबल आघात से बचाने के लिए यद्यपि और सारी सामग्री सागर की अगाध लहरों को अर्पित कर दी किन्तु इतनी बाधाओं और आँकड़ों के बावजूद भी उसने अविलोकितेश्वर (बुद्ध) की प्रतिमाओं और बौद्ध धर्म के ग्रन्थों को बचा लिया, जिनकी खोज में वह भारत आया था। वर्षों तक गौतम की इस जन्मभूमि में मीलों तक पर्यटन किया था। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि उस समय यद्यपि सागर यात्रा बड़ी भयानक थी, किन्तु फिर भी भारतीय पोत, बाधाओं, समुद्री तूफानों और आँकड़ों को लाँघते पार करते विदेशों में अपनी वस्तुओं को ले जाते थे।

मैगस्थनीज द्वारा नौसेना का उल्लेख

किन्तु ईसा के जन्म ग्रहण करने से भी प्रायः ३०० वर्ष पूर्व भारत के महानतम् मौर्य सम्राट् चन्द्रगुप्त के राजदरबार में उपस्थित होने वाले यूनानी राजदूत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
मैगस्थनीज ने भी अपने लेखों में लिखा है कि भारत के इस महान सम्राट् की सेना का विभाजन ६ भागों में किया गया था। जिनमें से एक नौसेना का विभाग भी था। जिसके पास बड़े सशक्त और भारी भारवाहक जलयान थे। जिनकी सहायता से सुदूर देशों से व्यापार चलता था। इसके अतिरिक्त सामुद्रिक युद्ध के लिए भी सम्राट् ने बड़े बड़े युद्धोपयोगी जलयानों का निर्माण कराया था।

अर्थशास्त्र में उल्लेख

कौटिल्य (चाणक्य) ने भी सुप्रसिद्ध ग्रन्थ अर्थशास्त्र में जलयानों के लिए एक अलग अधिकारी की नियुक्ति का वर्णन किया है। स्मरणीय है कि आर्य चाणक्य चन्द्रगुप्त मौर्य के केवल प्रधानमंत्री ही नहीं अपितु भारत के एक महानतम और प्राचीनतम राजनैतिक विचारक और तत्ववेत्ता भी थे। जिन्होंने भारतीय राजनीति के मूल सिद्धान्तों और व्यवस्थाओं का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपने इस ग्रन्थ में लिखा है कि जलयानों के किसी एक का यह कर्त्तव्य था कि वह जलयानों से सम्बन्धित लेखे जोखे का पूर्ण विवरण रखें। इसके अतिरिक्त उस समय ऐसे जहाज भी थे, जिनमें यात्रियों से किराया लेकर उन्हें समुद्र पार के देशों को भेजा जाया करता था।

अर्थशास्त्र में आर्य चाणक्य ने एक स्थान पर उल्लेख किया है कि यदि शत्रु पक्ष का कोई जलयान अपने देश के समुद्रों में प्रविष्ट हो जाए तो उसको नष्ट कर दिया जाना चाहिए।

चोल सम्राटों की नौसेना

मौर्य कुल अवतंश महाराज चन्द्रगुप्त के शासनकाल के १३०० वर्ष उपरान्त एक अन्य भारतीय राजवंश का उल्लेख करना भी आवश्यक प्रतीत होता है। जिसने अपने राजत्व काल में पूर्ण विकसित जहाजी बेड़े एवं नौसेना का गठन किया था।

यह राजवंश था दक्षिण भारत का चोलवंश। उसने बंगाल की खाड़ी (गंगा-सागर) से होती हुई अपनी नौसेनाएँ जावा एवं सुमात्रा तथा अन्य समीपस्थ द्वीपों में चोलवंश की विजय पताका फहराने हेतु भेजी थी।

इंडोनेशिया के शैलेन्द्र सम्राट्

इसके अतिरिक्त ११ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में आर्यवंशी सम्राट् शैलेन्द्र इंडोनेशिया के शासक थे। इनके राज्य की सीमाएँ डच साम्राज्य तक विस्तृत थी। इन आर्य राजाओं के बंगाल के राजवंश और मद्रास के चोल शासकों से भी मैत्री पूर्ण सम्बन्ध स्थापित थे। किन्तु इसके उपरान्त कतिपय अज्ञात कारणों से चोलवंशी शासकों से उनकी ठन गई। जिसके फलस्वरूप चोलवंशी शासकों ने शैलेन्द्र राजाओं को पराभूत और पराजित कर उनसे सुमात्रा, जावा और मलय श्रृंखला के अन्य द्वीप छीन लिए। किन्तु फिर भी इन सारे द्वीपों पर शैलेन्द्र राजाओं की न सही चोलवंशी हिन्दू सम्राटों की विजय वैजयन्ती ही फहराती रही और इसका आधार उनकी नौसेना ही बनी।

शिवाजी क [illegible]सेना

यह तो सुदूर अतीत की बात है किन्तु मुगल साम्राज्य की जड़ें खोखली कर देने वाले शिवाजी ने ही, जिन्हें खाफी खाँ ने 'पहाड़ी चूहा' कहा था, किन्तु जो वस्तुतः सह्याद्रि पर्वतमाला के सिंह सपूत थे, अपनी सेनाओं में नौसेनाओं का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अलग गठन कर महान राजनीतिवेत्ता आर्य चाणक्य के पदचिन्हों का अनुकरण किया था। इस प्रकार हम देखते हैं कि नौसेना का प्रादुर्भाव भारत में अतीत के धुंधले पृष्ठों से लेकर स्वाधीनता सूर्य की धवल रश्मियों तक में ज्यों का त्यों पढ़ा जा सकता है।

यह एक अकाट्य सत्य है जो इतिहास की कसौटी पर खरा उतरा है कि भारत ने सुदूर अतीत से लेकर मध्य युग तक ही नहीं अपितु मुगलों की पताका जिस समय भारत में फहरा रही थी उस समय भी जलयान निर्माण के महत् कार्य को कभी दृष्टि से ओझल नहीं होने दिया।

वस्तुतः अंग्रेजी शासनकाल में योजनाबद्ध ढंग से नौसैनिक उद्योग की हत्या की गई—

★

संस्कृत भारतीय दर्शन की अपूर्व निधि

श्री कमलापति त्रिपाठी

(केन्द्रीय नौवहन व परिवहन मंत्री)

देववाणी संस्कृत एक परिष्कृत भाषा है। यह अनेक भारतीय एवं योरोपीय भाषाओं की जननी है। आज हमारे देश के सामने राष्ट्रभाषा हिन्दी की शब्दावलि की जो आवश्यकता है, यह संस्कृत भाषा के माध्यम से ही पूरी हो सकती है।

संस्कृत भाषा भारतीय विचार, सभ्यता, संस्कृति और भारतीय दर्शन की अपूर्व निधि है। संस्कृत भाषा ही सारे भारत को एक सूत्र में बांधे हुए है। हमारे आध्यात्म- ज्ञान का भंडार संस्कृत भाषा में है और इसी के कारण आज विश्व में भारत का अपूर्व सम्मान है। आज विश्व का मानव शांति की खोज में भारतीय संस्कृति की ओर आकर्षित हो रहा है। भारतीय संस्कृति का सच्चा स्वरूप समझने के लिए संस्कृत भाषा का ज्ञान अपेक्षित है। भारतवासी ही संस्कृत भाषा के द्वारा विश्व को शान्ति का ज्ञान दे सकते हैं।

संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों में अनेक आविष्कारों का बीज रूप में वर्णन है। हमारे विद्यार्थी विज्ञान के साथ-साथ संस्कृत का ज्ञान प्राप्त करके, नवीन आविष्कारों के द्वारा भारत को एक समुन्नत राष्ट्र बना सकते हैं।

□

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विदेशी ईसाई मिशनरी : एक खतरा

—हीरालाल शर्मा

ईसाई मत व उसके प्रचार-प्रसार में लगे विदेशी ईसाई मिशनरियों के बारे में हम हिन्दुओं के मन में बड़ा अज्ञान व गलत धारणाएँ फैली हुई हैं। सैंकड़ों वर्षों से ये हमारे देश में हैं। भारत व विश्व की वर्तमान राजनीतिक, धार्मिक व आर्थिक उथल पुथल में इनके गहरे हाथ को प्रत्यक्ष देखकर भी हमने अभी तक इन्हें अच्छी तरह से नहीं पहिचाना है। हमारा यह अज्ञान केवल हिन्दू धर्म व हिन्दुस्थान के लिये ही नहीं, बल्कि समूची मानवता के लिये बहुत महँगा व अत्यन्त हानिप्रद सिद्ध हो रहा है। हम जितनी जल्दी ईसाइयत को व ईसाई मत-प्रचारकों को उनके असली रूप में पहिचानें, उतना अच्छा हो।

आम जनता की यह धारणा है कि विदेशी ईसाई मिशनरी केवल स्कूल, दवाखाने, अनाथालय आदि चलाकर निष्काम सेवा में लगे रहते हैं। पर वास्तव में बात ऐसी नहीं। उनका यह सेवा कार्य पूर्ण रूप से दिखावटी होता है। उनका प्रमुख कार्य राजनीतिक ही होता है जिसे वे मानव-सेवा के बहाने करते हैं।

इन मिशनरियों को सेवा व परमार्थ के अग्रदूत समझना अज्ञान की पराकाष्ठा व एक भारी राष्ट्रघाती भूल होगी। ये मिशनरी वास्तव में विदेशी साम्राज्यवाद की सेना के एक महत्त्वपूर्ण अंग ही हैं। किसी भी राष्ट्र को जीतने, उस पर अधिकार जमाये रखने, उस देश का सब तरह से शोषण कर वहाँ की सभ्यता को पूरी तरह से नष्ट करने के कार्य में सेना व राजनीतिज्ञों से भी अधिक महत्व के कार्य ये मिशनरी करते हैं। विश्व-इतिहास के रक्त-रंजित-पृष्ठ इस कटु सत्य के साक्षी हैं कि दैवी साम्राज्य का प्रचार करते-करते सांसारिक साम्राज्यों की स्थापना इन मिशनरियों ने की है। दुखी मानवता की सेवा का पाखंड रचने वाले ये पादरी एक हाथ में बाइबल व दूसरे में गुलामी की जंजीरें व सर्वनाश का हलाहल लेकर चलते हैं। साम्राज्यवाद के इतिहास के पृष्ठ इस बात के साक्षी हैं कि बाइबल के पीछे बंदूक व उनके देश का झंडा बराबर चलता आया है।

कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—गोवा में जेवियर और अलबुकर्क नाम के दो पादरी सर्वप्रथम आये। उन्होंने पुर्तगालियों के लिए वहाँ अनुकूल वातावरण तैयार किया, उन्हें बुलाया व पुर्तगाली शासन को दृढ़ किया। फ्रांसीसी मिशनरी गिगनियन डी० बी० हेम हिन्दचीन पहुँचा और फ्रांस के शासक सोलहवें लुई व हिन्दचीन के शासक में समझौता कराने में सफल हो गया। इस समझौते के कारण फ्रांसीसियों ने वहाँ पैर जमाये और १८५८ में वहाँ अपना अधिकार कर लिया।

केवल मिशनरियों के ही कार्य से आस्ट्रेलिया, फिजी, दक्षिण और मध्य अफ्रीका, सीरालोयन, ब्रह्मदेश, व गिनी आदि देशों में ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ें जमीं। इन स्थानों में व्यापारिक या राजनैतिक नियंत्रण होने से बहुत पहिले मिशनरियों के अड्डे वहाँ बन गये थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जून १९३० में टाइम्स ने लिखा था—'…अंग्रेजी राज्य की स्थापना के बहुत पहिले से इन मिशनरियों का भरोसा किया जाता रहा है। फिजी व न्यूगिनी में अंग्रेजी झंडा फहराने से पूर्व फिजी में मेथोडिस्ट मिशनरी व न्यूगिनी में लंदन मिशनरी सोसायटी के मिशनरी कार्य करते थे। जब इन क्षेत्रों पर कब्जा किया गया तो इन मिशनरियों की उपयोगिता बहुत लाभप्रद सिद्ध हुई।

कुछ वर्ष पूर्व अफ्रीका के एक प्रमुख काले हब्शी नेता ने कहा था—'ईसाई मिशनरी जब हमारे देश में आए थे तब उनके हाथ में बाइबल थी और हमारे हाथ में हमारी भूमि थी, थोड़े वर्ष बाद हमारे हाथ में उनकी बाइबल आ गई व हमारी भूमि उनके हाथों में पहुँच गई।'

ईसाई मिशनरी विदेशी साम्राज्यवाद की सेना के एक महत्त्वपूर्ण अंग होते हैं। सेना के आगे चलने वाली सपरमैना के समान उनका कार्य होता है। सेवा का पाखंड रचकर उस देश की जनता में अपने व अपने देश के प्रति सहानुभूति का वातावरण तैयार कर देते हैं। उस देश के निवासियों में फूट व अन्य बुराइयों को पैदा कर उस राष्ट्र को निर्बल कर वहाँ की सभ्यता व संस्कृति को पूर्णतया नष्ट कर देते हैं। शान्ति व मानवता के अग्रदूत कहने के बदले उन्हें अशान्ति व दानवता के प्रचारक कहना ही सच्ची वास्तविकता है।

भारत के भूतपूर्व वायसराय लार्ड कर्जन ने सन १८९३ में लिखा था—'इस तथ्य को नजरअंदाज करना असम्भव है कि अंग्रेज मिशनरी जिस देश में भी जाते हैं, वे वहाँ राजनीतिक अशान्ति व उस देश के राष्ट्रीय तत्वों के विरुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्रों का कारण बन जाते हैं।'

लार्ड कर्जन के कथन की सत्यता भारत में सहज ही देखी जा सकती है। आज भारत में जितनी राष्ट्रविरोधी हलचलें चल रही हैं उनके मूल में ईसाई मिशनरियों का प्रमुख हाथ रहा है। भारत विरोधी कार्यों व हिन्दुत्व का नाश करने वाले कार्यों में बड़ी चतुराई से वे अपना पूर्ण सहयोग देते आये हैं।

मिशनरियों द्वारा स्थापित स्कूल, दवाखाने, अनाथालय आदि तो अज्ञान, असहाय व गरीब जनता को फंसाकर ईसाई बनाने के लिए ही हैं। इन साधनों के द्वारा ईसाइयत का प्रचार कर जनता की सहानुभूति जीतने का कार्य किया जाता है। इनके साथ ही कर्ज व नौकरी देने व अच्छे जीवन का प्रलोभन देने आदि हथकंडों द्वारा लोगों को ईसाई बनाया जाता है और जब धर्मांतर किये ईसाइयों की संख्या व शक्ति बढ़ जाती है, तब ये ही स्कूल, दवाखाने व ईसाई मिशनरी उस देश की स्वतन्त्रता व संस्कृति को नष्ट करने के लिये टाइम बम का काम करते हैं। ईसाई मिशनरियों के इस रूप का दर्शन आज की राजस्थान, मध्य प्रदेश, मद्रास, त्रावन्कोर व नागालैंड में सहज ही स्पष्टतया किया जा सकता है।

यूरोप के ईसाई साम्राज्यवाद के अग्रदूत बनकर भारत में विदेशी साम्राज्य का मार्ग बनाने के लिए ईसाई मिशनरी विदेशी दासता आने के बहुत पहिले यहाँ आ गये थे। उन्होंने छल, कपट, ढोंग आदि से व भारत की सहिष्णुता का पूर्ण लाभ उठाकर अज्ञान व असहाय लोगों को बड़ी संख्या में ईसाई बनाया। ये धर्मांतरित ईसाई हिन्दू व हिन्दुस्थान के पूर्ण विरोधी बन गए थे। विदेशी साम्राज्य के ये प्रबल प्रशंसक व समर्थक भी थे। सन् १८५७ के स्वातंत्र्य समर में धर्मांतरित ईसाइयों ने भारत के विरोध में खुले रूप में कार्य किया था।

इस सफलता के बाद इनकी गतिविधियों में और तेजी आ गई। अंग्रेज सरकार ने इन्हें पूर्ण संरक्षण व सहयोग दिया। देश के कुछ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूभाग

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

केवल इन मिशनरियों के लिए सुरक्षित छोड़ दिए गए। मिशनरियों के कारण ये भूभाग आज भारत के लिए गहरी चिन्ता का कारण बन गए हैं। नागालैंड व उसकी भीषण समस्या इन मिशनरियों की ही देन है। नागालैंड को स्वतंत्र राज्य घोषित करने की मांग इन मिशनरियों के सहयोग से धर्मांतरित ईसाइयों द्वारा की जा रही है।

नागालैंड के समान भारत में ईसाई बहुसंख्यक अनेक प्रदेशों का निर्माण कर वहाँ स्वतंत्र ईसाइस्तानों की स्थापना करना मिशनरियों का लक्ष्य है। हिन्दू धर्म व सभ्यता को नष्ट करने के कार्य में भी वे पूरी शक्ति से लगे हैं। हिन्दू धर्म व हिन्दुओं के देवी देवताओं को बुरा व हेय बताने का कार्य भी वे वर्षों से खुले आम कर रहे हैं।

अंग्रेजों के समय में उनके इन दूतों व गुप्तचरों को उनका पूर्ण सहयोग मिलना स्वाभाविक ही था, पर देश की स्वतंत्रता के बाद धर्मनिरपेक्ष नीति, भारत के संविधान द्वारा प्रदत्त धार्मिक प्रचार की स्वतंत्रता तथा ईसाइयों से की गई राजनैतिक सौदेबाजी की राष्ट्रघाती नीति के कारण ईसाई मिशनरियों की भारी सेना ने अपार धन व साधनों के द्वारा भारत पर जो आक्रमण किया, उसके अत्यन्त गंभीर परिणाम हमारे सामने आने लगे हैं।

भारत में अंग्रेजी राज्य के समय से कई गुने विदेशी पादरी व उनका जाल आज स्वतंत्र भारत में दिखाई दे रहा है। उनके कार्य कई गुने बढ़ गये हैं और परिणामस्वरूप धर्म परिवर्तन व भारत-द्रोह के आन्दोलन भी उतने ही अधिक मात्रा में बढ़ गये हैं। स्पष्ट है यह स्थिति कांग्रेस की सत्ता-लोलुपता व अपने विदेश प्रेम की राष्ट्रघाती व अदूरदर्शी नीति के कारण पैदा हुई है! भारत की सुरक्षा की दृष्टि से इस नीति में अविलम्ब पूर्ण परिवर्तन होना आवश्यक है। शासन को चाहिये कि भारत की स्वतंत्रता व सभ्यता का सर्वनाश करने वाले विदेशी साम्राज्यवाद के इन दूतों की सारी सम्पत्ति जब्त कर उनके द्वारा संचालित समस्त स्कूल-दवाखानों को अपने अधिकार में कर उनका पूर्ण राष्ट्रीयकरण कर मिशनरियों को बीन-बीनकर अविलम्ब देश के बाहर निकाल दे।

इस देश की स्वतंत्रता की व हिन्दू सभ्यता की सुरक्षा अत्यन्त आवश्यक है। इन्हें बचाने के लिए अन्य कार्यों के सिवा इन मिशनरियो को तुरन्त देश निकाला देना अत्यन्त आवश्यक है। ईसाई मिशनरियों को भारत से निकालना आज का प्रमुख राष्ट्र कार्य है।

हमारी परम प्रिय मातृभूमि की स्वतन्त्रता ही नहीं, हमारी महान सभ्यता, हमारे मंदिर, हमारे तीर्थ, हमारे धर्मग्रथ, साधु-संत, हमारा श्रेष्ठ साहित्य, हमारी महान कलाएँ आदि सब पर ईसाइयत का सर्वनाशी संकट छा गया है। इस संकट को दूर करना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है। भारत को ईसाई मिशनरी विहीन करने के परम महत्वपूर्ण राष्ट्रकार्य में देश की सारी तरुणाई, समस्त संस्थाओं व साधु संतों आदि को कमर कसकर मैदान में उतर पड़ना चाहिये।

आइए विदेशी ईसाई मिशनरियों को उनके असली रूप में हम देखें। सफेद वस्त्रों में छिपे उनके काले व घृणित उद्देश्यों को पहिचानें! उनकी चिकनी चुपड़ी बातों व सेवा कार्यों की आड़ मे चल रहे उनके सर्वनाशी लक्ष्यों को पहिचानें। इस महादेश को मिशनरियों के क्रूर व सर्वनाशी पंजे से मुक्ति दिलायें। आइये, हम इन्हें अपने गाँव से, तहसील से, जिले से व देश से निकाल बाहर करने के कार्य में तुरन्त संलग्न हों। यही आज इस महादेश की सच्ची सेवा है।

★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्येन्द्र

धर्मवीर हकीकतराय

बात कई सौ साल पुरानी है। भारत में मुगलों का राज्य था। उन्हीं दिनों स्यालकोट नगर (जो अब पाकिस्तान में है) में श्री भागमल के कुलदीपक के रूप में एक बालक जन्मा। उसे माता पिता ने नाम दिया हकीकतराय।

अपनी आयु के अन्य बालकों के साथ हकीकतराय भी पढ़ने जाने लगे पाठशाला में। उन दिनों राजकाज में चलती थी फारसी भाषा और जिन विद्यालयों में यह पठन का सिलसिला चलता था, उन्हें कहा जाता था मकतब।

पढ़ने में बहुत ही तेज थे हकीकतराय। कक्षा में मौलवी साहब कोई भी प्रश्न पूछते तो हकीकतराय उत्तर देने में सभी छात्रों से आगे होते। परिणाम यह हुआ कि कक्षा के अन्य छात्र जो प्रायः इस्लाम मतावलम्बी थे, उनसे डाह करने लगे। वे इस अवसर की खोज में रहते थे कि कभी दांव लगे तो हकीकत पर प्रहार करें। किन्तु उनकी चलती एक न थी।

एक दिन जब मौलवी साहब किसी कार्यवश कक्षा से बाहर चले गये तो कक्षा के ऐसे छात्रों ने जो कि हकीकतराय से डाह करते थे उन्हें पढ़ते हुए देखकर छेड़ना आरम्भ कर दिया। पढ़ने में तल्लीन हकीकतराय ने जब इन छात्रों को ऐसा करने से मना किया तो वे अभद्रता पर उतर आये। उन्होंने हिन्दू धर्म और पूर्वजों के लिए अपशब्दों का प्रयोग कर अपनी मानसिक भड़ास निकाली।

बालक हकीकत काफी समय से इस सारे व्यवहार को नितांत हो धैर्य सहित सहन कर रहा था किन्तु अब उसके धैर्य का बाँध भी टूट गया। इस पर भी आर्यत्व के सिद्धान्तों के प्रति अनुरक्त वीर बालक ने बड़े ही संयम का परिचय देते हुए उपद्रवी छात्रों से केवल इतना ही कहा "यदि मैं भी तुम्हारे श्रद्धास्पदजनों के प्रति ऐसी ही अभद्र शब्दावलि का प्रयोग करूँ तो भला कैसा लगेगा तुम्हें ?"

हकीकत के मुख से यह शब्द निकलते ही विधर्मी छात्र उस पर टूट तो पड़े ही साथ ही मौलवी महोदय के कक्षा में लौट आने पर उनसे हकीकत के विरुद्ध यह शिकायत भी की कि उसने इस्लाम की तौहीन (अपमान) की है।

उनके इस आरोप में कोई सार तो न था किन्तु वे दिन ही मजहबी उन्माद के थे। अतएव बात बढ़ती गई और अन्ततः यह मामला काजी की अदालत तक पहुँचा।

सारे मामले की सुनवाई का नाटक पूर्ण हुआ और फिर आ गई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

फैसले की घड़ी। फैसला कुछ नया नहीं था उन दिनों के लिए और वह यह कि हकीकतराय हिन्दू धर्म को त्यागकर इस्लाम धर्म की दीक्षा ले ले तो उसे क्षमादान दिया जा सकता है, अन्यथा उसे मृत्यु दण्ड सहना होगा।

× × ×

इस कठोर दण्ड को सुनकर बालक हकीकत के पिता भागमल घबरा गये तो माता का हृदय भी रो उठा। उन दोनों ने हकीकत को इस बात के लिए मनाने का प्रयास किया कि वह धर्म त्याग कर प्राणदान प्राप्त कर लें। किन्तु वीरव्रती बालक अपने संकल्प पर डटा रहा और उसने अपने माता-पिता को सम्बोधित करते हुए कहा "क्या आप अपने ही उपदेशों के विरुद्ध मुझ से आचरण कराना चाहते हैं। आप ही ने मुझे सिखाया है कि आत्मा अमर है और शरीर नश्वर है। आप ही मुझे सिखाते रहे हैं आर्य धर्म के वे तत्व जिनसे यह स्पष्ट है कि आत्मा को न शस्त्र छेद पाता है और न ही अग्नि जला पाती है। फिर आप लोग इतने विचलित क्यों हो उठे हैं। मुझे आशीर्वाद प्रदान कीजिये कि मैं हँसते-हँसते स्वधर्म के लिए अपने प्राण समर्पित कर सकूं।"

अन्ततः धर्मनिष्ठा के समक्ष पुत्र प्रेम हार गया और हकीकत की दृढ़ता के समक्ष उनके माता पिता भी प्रभावित हुए बिना न रहे।

+ × ×

मृत्युदण्ड की घड़ी समीप थी। बधिक बालक हकीकत को वध स्थल पर लाए। इस बाल वीर के मुखमण्डल पर उभर रही कांति ने इन जल्लादों का भी कलेजा हिला दिया। उनके हाथ भी एक बार तो कांप उठे। किन्तु शान्त गम्भीर बालवीर हकीकत मुस्कराया और बोला "तुम निसंकोच अपना काम करो। मैं तो उस सुनहरे क्षण की प्रतीक्षा में ही हूं कि जब मेरी यह नश्वर काया स्वधर्म के काम आ जाएगी।

बधिक ने खड्ग उठाया और हकीकतराय पर प्रहार कर दिया। उसका सिर धड़ से अलग हो गया। उसकी नश्वर काया अनश्वर वीरत्व में परिणत होकर युगों-युगों के लिए श्रद्धा और आस्था का प्रतीक बन गयी।

उसने सिर तो दे दिया किन्तु सार न दिया। जिस दिन बालवीर हकीकतराय को प्राण दण्ड दिया गया था, वह दिन बसन्त का था। अनेकों पुष्प अपनी नवीन आभा के साथ धरती के आंचल को धानी कर रहे थे किन्तु उसी दिन आज से कई सौ वर्ष पूर्व एक फूल सदा के लिए टहनी से झड़ गया।

उसकी बलिदानी गाथा के समक्ष धर्म स्वातन्त्र्य और स्वधर्मनिष्ठा के प्रति अनुरक्त कोटि-कोटि जन सदा मस्तक झुकाते रहेंगे और उसकी बलिदानी गाथा को गाते रहेंगे।

रक्षा के हित धर्म की अपने प्राण गँवाए
हर्ष सहित बोले सभी, धन्य हकीकत राय ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदभाष्य प्रकाशन

यज्ञ में आहुति देने वाले दानी

१. पं० लाल जी शिवगुलाम—नेटाल	३९६.२०
२. श्री राजकुमार आर्य—हिसार	३००.००
३. श्रीमती लाजवन्ती सपरा—गाजियाबाद	२००.००
४. श्री रमेशचन्द्र चोपड़ा—फैजाबाद	१२१.००
५. श्री ध० रा० तोष्णीवाल—मुंबई	७०.००
६. श्री रामनायक सिंह—दिल्ली	१११.००
७. गुप्त दान—गाजियाबाद	५३.००
८. श्री रामदेव जी आर्य—खुदागंज	४६.००
९. एस० सी० तलवाड़—नई दिल्ली	४१.००
१०. श्री विजेन्द्रकुमार जी—गाजियाबाद	३१.००
११. श्री राजेन्द्रजी कोषाधिकारी—सुल्तानपुर	३०.००
१२. श्रीमति शालिनी देवी—मोताला	२३.००
१३. श्री सच्चिदानन्द जी—देहरादून	१६.००
१४. श्री छोटेलाल आर्य—हरदोई	६.००
१५ श्री शालिग्राम दुबे—रायसैन	७.००
१६. श्री सत्यनारायण जी—उन्नाव	४.००

१००१.०० देने वाले महानुभाव

१. श्रीमती सावित्री देवी कौड़ा—ज्वालापुर
२. श्रीमती आज्ञावती जी—अमृतसर
३. श्री कान्ता बेन—बम्बई
४. श्री रमेशचन्द्र जी चौपड़ा—फैजाबाद
५. श्री रामचरण शर्मा व श्रीमती लीलावती गाजियाबाद
६. श्री धर्मपाल सत्यपाल भाटिया—गांधीनगर

५०१.०० की आहुती देने वाले

१. श्रीमती ठाकरी बाई—करनाल
२. श्री जगन्नाथ गुप्त एण्ड कं०—कानपुर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३. श्रीमती राज सूरी—नई दिल्ली
४. श्री हरि नारायण महरोत्रा—रुड़की
५. श्री नौबत राय—जालन्धर
६. श्री पं० विद्यानन्द जी महोपदेशक—वाराणसी
७. श्री शत्रुघ्न गुप्ता—रांची
८. श्री रघुनाथसिंह—नैटाल

१०१.०० की आहुति देने वाले

१. श्री पूर्णचन्द वेदप्रकाश—आगरा २. श्री चमनलाल जी—दिल्ली ३. श्री रामजीदास कश्यप—शिमला ४. श्री पूरणमल जी—बम्बई ५. श्री चरणदास—पटियाला ६. श्री एम० शाह—बम्बई ७. श्री वेदमित्र त्रिपाठी—शमसाबाद ८. श्री रामप्रसाद लक्ष्मी प्रसाद—गढ़वा।

५०) की आहुति देने वाले

१. श्री कृष्णप्रसाद जायसवाल—इलाहाबाद २. श्री रामदेव चावला—शाहदरा ३. श्री राजाराम—फिजी ४. श्री लालचन्द—बम्बई ५. श्री जगदेवलाल—गिरिडीह।

५१) की आहुति देने वाले

१. श्रीमती दयावन्ती—दिल्ली २. डा० सुमेधा विद्यालंकार—दिल्ली ३. श्री मंगलराम—सूरसागर (जोधपुर) ४. श्री इन्द्रदत्त—अमृतसर ५ गुप्त दान—हापुड़ ६. श्री राजबहादुर—अलीगंज ७. श्री चन्द्रप्रकाश—हांसी ८. श्री अवधेश कुमार—बाराबंकी ९. श्री नन्दलाल सोनी—भोपाल १०. श्रीमति सुशीला गुप्ता—हरदोई।

२५) की आहुति देने वाले

१. श्री इन्द्रकुमार बिरमानी—दिल्ली २. श्री राधाकृष्ण—सिहोर ३. श्री हरिकिशन—सूरसागर ४. श्री गणेश नारायण शर्मा—चौमू ५. श्री वासराम आर्य—सहारनपुर ६. श्री नरेन्द्रसिंह वर्मा—मेरठ ७. श्री गोपालकृष्ण गुप्त—अम्बाला ८. श्री दुल्लूराम आर्य—इलाहाबाद ९.श्री एच०सिंह—वाराणसी १० श्री चूनी भाई आर्य—बड़ौदा ११. डा० त्रिलोकीनाथ गुप्त—लखनऊ १२. श्री आर० के० शुक्ल—पिपलानी १३. श्री भीमसिंह—बिजनौर १४. श्री मुरलीधर—धुलिया १५. सुश्री बाला रानी—बुढ़ाना १६. श्री केशव बहादुरसिंह गगहा १७. श्री लखनसिंह—बिल्टीगढ़ १८. श्री रामस्वरूप रामकुमार—बदायूं १९. श्री वैद्य भगवानदास—फतेहाबाद २०. श्री परसराम—आगरा २१. भारतीय पुस्तक भण्डार—उदयपुर २२. श्री कौशल किशोरमणि त्रिपाठी—कदम कुआं २३. श्री सच्चिदानन्द—Khuju २४. श्री रामनारायणप्रसाद—नाथनगर २५. श्री मोहनलाल देवकृष्णन—कुटियाना २६. श्री रामनारायण बालकृष्ण—शोलापुर २७. श्री शिवनन्द प्रसाद—बाढ़ २८. श्री हरिदास नारायण—औरंगाबाद २९. श्री रामजी मालवीय—बीना ३०. श्री व्यं० तेरकर—देगलूर ३१. श्री मदनलाल बवेजा—जयपुर।

२१) की आहुति देने वाले

१. श्री रामकृष्ण अशोक कुमार—गरवना २ श्री लानचन्द भारद्वाज—ज्वालापुर ३. श्री मामचन्द गुप्ता—सहारनपुर ४. श्री गिजराज अग्रवाल—बम्बई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५. श्री ओमप्रकाश सत्यप्रकाश—सनडीला ६. श्री सोहनलाल अग्रवाल—जबलपुर ७. प्रो० राजेन्द्र प्रसाद—जबलपुर ८. श्री जी० आर० अजेश्वर—अरबाम ९. श्री बृजलाल—बम्बई १० श्री हरीश छाबड़ा—त्रिवेकानन्द नगर ११. श्री उमाशंकर भारद्वाज—छिबरामऊ १२. श्री जगदम्बा गुप्ता—चण्डीगढ़ १३. श्री दामोदरदास रतनलाल—मेरठ १४. श्री इन्द्रप्रकाश यादव—खैरथल मण्डी १५. श्री नरेन्द्रजी—हापुड़ १६. श्रीनिवास गुप्ता—दिल्ली १८. यूनायटेड फोटो स्टूडियो—मन्दसौर।

२०) की आहुति देने वाले

१. श्री शिवनाथसिंह—बिजनौर २. श्री मेजर सुखीजा—पूना ३. श्री प्रधानाचार्य रा० मा० विद्यालय–मारवाड़ ४. श्री जीतसिंह—बाधाई खुर्द।

१५) की आहुति देने वाले

१. श्री प्रेमचन्द्र–गंगानगर २. श्री रामकुमार शर्मा—यमुनानगर ३. श्री रामगोपाल गर्ग–तलेडा ४. श्री बी० पी० बाडोला—कोटद्वार ५. श्री वैद्य पृथ्वीसिंह—सहारनपुर ६. श्री एन० सुगन्धीबाई—कलकत्ता ७. श्री शम्भूदयाल—हरदोई ८. श्री मोतीलाल साहू—चम्पारन ९. श्री शिवनारायण–नागौर

११) की आहुति देने वाले

१. बृजमोहन स्याल—ज्वालापुर २. श्री बेणीप्रसाद जिज्ञासू—कनखल ३. श्री रामलाल शास्त्री–दिल्ली ४. श्री पी० के० सेठी–दिल्ली ५. श्री एस० के० लूथरा–दिल्ली ६. श्री कमलसिंह त्यागी–वाराणसी ७. श्री शिवप्रसाद गुप्ता–हाथरस ८. श्री सत्यनारायण रोहतगी—दिल्ली ९. श्री ईश्वरदेव—दिल्ली १०. श्री विजयसिंह—दिल्ली ११. मा० गुरचरणदास–दिल्ली १२. श्री सत्यदेव विद्यालंकार—दिल्ली १३. श्री ओमप्रकाश–दिल्ली १४. श्री रामबदनसिंह—दिल्ली १५. आर्य समाज–बीकानेर १६. श्री दलजीतसिंह–फीना १७. श्री बनारसी सिंह—दिल्ली १८. श्री जी० आर० सेठी–कुंडली १९. श्री शीला देवी–दिल्ली २०. श्री बाबूराम टेलर मास्टर—मेरठ २१. श्री एम० एस० यादव–भिवानी २२. श्री रामसनेही शुक्ल—दिल्ली २३. श्री निरंजनलाल—इलाहाबाद २४. श्री हरिहर प्रसाद सिंह—इलाहाबाद २५. श्री बच्चीसिंह पवार—नैनीताल २६. श्री शोभाराम गर्ग–मुजफ्फर नगर २७. श्री मन्त्री नागरिक परिषद्—जयपुर २८. श्री सर्वदानन्द शर्मा—झुन्झुनू २९. एटलस मोटर्स—हैदराबाद ३० श्री कृष्णसिंह–भोजपुर ३१. श्री प्रेमराम आर्य–पूना ३२. श्री नरसिंह—लातूर ३३. श्री मोतीभाई गणेश जी–सूरत ३४. श्री शादीराम सेठी—गिदड़बाहा ३५. श्री कृष्णगोपाल–कानपुर ३६. श्री उदयभान सिंह—बम्बई ३७. श्री किशनलाल शर्मा—उदयपुर ३८. श्री लक्ष्मणदास—परलीबैजनाथ ३९. श्री रामओतार—बम्बई ४०. श्री रूपनारायण—झाँसी ४१. श्री अम्बालाल आर्य मन्त्री—मन्दसौर ४२. श्री बालगोविन्द आर्य—अमौली ४३. श्री शम्भूराम आर्य–भिवानी ४४. श्री उरनारायण शर्मा—कानपुर ४५. श्री कुंज बहादुर आर्य—सिसोदा ४६. श्री बहोरीदत्त शर्मा—अलीगढ़ ४७. श्री मोतीलाल पोद्दार—शाजापुर ४८. पं० भूदेवप्रसाद शर्मा–आगरा ४९. श्री हरिशचन्द गुप्ता—पीलीभीत ५०. डा० बी० के० श्रीवास्तव—गौंडा ५१. श्री खोतीलाल—सम्बलपुर ५२. श्री हनुमान प्रसाद—पलामू ५३. श्री बनवारीलाल—रींवा ५४. श्री योगी फार्मेसी—गुरुकुल कांगड़ी ५५. मै० श्री शोभाराम लोकचन्द–पटियाली ५६. श्री हैडमास्टर छत्रपति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शिवाजी--ओमेरगा ५७. श्री शंकरराव लक्ष्मणराव-बिदर ५८. श्री गोवर्धन महेन्द्र कुमार-खैरथल मण्डी ५९. श्री डा० चन्द्रप्रकाश खन्ना-दिल्ली ६०. श्री रघुनाथसिंह -दिल्ली ६१. श्री रामकुमार रामचन्दर-जीन्दोली ६२. स्वा० ओमाश्रित जी— दिल्ली ६३. श्री खुशीराम—दिल्ली ६४. श्री विश्वामित्र गुप्ता-दिल्ली ६५. श्रीमति सुशीला वर्मा-दिल्ली ६६. श्री स्वदेश कालड़ा-दिल्ली ६७. श्री सुरेशकुमार त्रिपाठी -किरन्दुल ६८. श्री रोशनलाल—दिल्ली ६९. श्रीमति सरोज दुआ-साउट एक्स्टेंशन ७०. श्री मेहरचन्द—दिल्ली ७१. श्री सुखदलाल दीनानाथ-दिल्ली ७२. श्री राजकरण वर्मा—दिल्ली ७३. श्री गोपालदास—दिल्ली ७४. श्री विद्याधर देशराज—सम्भल ७५. श्री सतनारायण अग्रवाल--भिलाईनगर ७६. श्री जगन्नाथ--गोरखपुर ७७. श्री योगेशचन्द गोयल--रेणुकूट ७८ श्री कृष्णकुमार आर्य—नीलोखेड़ी ७९. श्री सोहनलाल--गाजियाबाद ८०. श्रीमति पदमा तलवाड़—दिल्ली ८१. श्रीमति शान्ति भाटिया--दिल्ली ८२. श्री ठाकुर पराजली--काठमाण्डू ८३. श्री जे० डी० गुप्ता--दिल्ली ८४. पं० क्षमादत्त--दिल्ली ८५. श्री ला० भजनलाल आर्य— फीरोजपुर झिरका ८६. श्री शिवदयाल--फिरोजपुर झिरका ८७. श्री नीतराम— फिरोजपुर झिरका ८८. श्री शिवचरणदास—फिरोजपुर झिरका ८९. श्री रमेशचन्द्र —फिरोजपुर झिरका ९०. श्री हरिप्रसाद--फिरोजपुर झिरका ९१. ला० नन्दलाल —फिरोजपुर झिरका ९२. मा० ओमप्रकाश—फिरोजपुर झिरका ९३. ला० जैनत प्रसाद—फिरोजपुर झिरका ९४. ला० शुगनचन्द—फिरोजपुर झिरका ९५. श्री कालूराम माली-भोगपुर ९६-श्री अमरनाथ भाटिया--नई दिल्ली।

१०) की आहुति देने वाले

१. श्रीमती शकुन्तला-गाजियाबाद २. श्री अशोक—दिल्ली ३. श्री योगेन्द्र नाथ अवस्थी--दिल्ली ४. श्री रामेश्वरानन्द--दिल्ली ५. श्री एल० एन० मिश्रा-- रायसेन ६. श्री मूलवर्द्धन-रतनगढ़ ७. श्री वेदकुमारी-अलबर ८. श्री रामसरनप्रसाद -मिदनापुर ९. श्री रामचन्द गंग—रोहतक १०. श्री रामेश्वर दयाल-गाजियाबाद ११.श्री माता प्रसाद—हरदोई १२.श्री मनोहरलाल—दिल्ली १३. श्री कन्हैयालाल— गोरखपुर १४. श्री करतारसिंह पाल- १५. श्री भगवानदास खण्डेलवाल —गुड़गांव १६. श्री ब्रह्मानन्द—सहारनपुर १७. श्री ईश्वरसिंह--नांगल १८. श्री डी० एस० आसमवार—रामनगर १९. श्री अमरनाथ-अमरोहा २०. श्री उमरावदत्त मिश्र-झाँसी २१. श्री रामकृष्ण गिन्नौर—इन्दौर २२. श्री सोहनलाल—धरीयाबाद २३. श्रीमती कौशल्या ग्रोवर—पूना २४. श्री दामोदरदास—कुटेसरा २५. पं० राजगोपाल—उमराई २६. श्री रुद्रदत्त शुक्ल-कानपुर २७. श्री हुकमसिंह त्रिलोक सिंह—कुटेसरा २८. मन्नूलाल चौरासिया—नागपुर २९. श्री छगनलाल—उदयपुर ३०. श्री इन्द्रमनसिंह-भाटागांव ३१. श्री गयास ट्रेडर्स—बम्बई ३२. श्री अचलसिंह त्यागी—दहगवां ३३. श्री फतेहबहादुर सिंह-परिनगर ३४. श्री भंवरलाल--कोटा ३५. श्री वैद्यमानसिंह आर्य—सन्तुधार ३६. श्री फिरंगी मिस्त्री—इलाहाबाद ३७. श्री चन्द्रराम आर्य-इलाहाबाद ३८. श्री ए० आर० साहू आचार्य—वालोद ३९. श्री मोहतड़मल ईश्वरचन्द—ढिकाना ४०. श्री भोलाराम आर्य—रामनगर ४१. श्री मंहगाराम--वाराणसी ४२. श्री जगन्नाथ ग्रोवर—कोटद्वार ४३. श्री सन्त प्रयाग नारायणदास—भागलपुर ४४. श्री सूर्यकान्त—मुधोल ४५. श्री बलरामसिंह— आजमगढ़ ४६. श्री आनन्द प्रकाश—पीलीभीत ४७. श्री महाशय बालकराम गोंची— बल्लभगढ़ ४८. श्री शरनसिंह—लखनऊ ४९. श्री नवलकिशोर बावेजा—जयपुर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५) की आहुति देने वाले

१. श्री ज्ञानी पिण्डीदास–अमृतसर २. श्री जयनारायण–सूरसागर ३. श्रीमति
लीलादेवी–दिल्ली ४. श्री बद्रीप्रसाद किशोरीलाल–खैरथल ५. श्री हर्षवर्धन मिन्टू
नई दिल्ली ६. श्री चुन्नीलाल–कांठ ७. श्री अतरसिंह आर्य—रिवाड़ी खेड़ा ८. श्री
गोधनसिंह–काकम ९. श्री सत्यवीरसिंह–मुजफ्फर नगर १०. श्री लक्ष्मणदास—बांटा
११. श्री वृजनन्द शरण—हसनपुर १२. श्री गिरधारीलाल—किशनगढ़ १३. श्री
रूनराम—बौंगला १४. श्री जे० र० पाटिल—जलगांव १५. श्री अशोक कुमार—
जम्मूतवी १६ श्री बाबूराम शर्मा–कानपुर १६. श्री एन० एल० निर्दोष–रिवाड़ी १८.
श्रीकृष्णलाल एडवोकेट–सहारनपुर १९. हरिश्चन्द्र नैण वकील–गंगानगर २०. श्री
गोस्वामी भवर—नागौर २१. श्री हकीम जगदीश गुप्ता—खेड़ा अफगान २२. श्री
आर० एच० ओझा–गांधीनगर २३. श्री भरतसिंह–पन्ना २४. श्री कर्मचन्द बन्टा—
यमुनानगर २५. श्री रामविलास प्रसाद—अम्बिकापुर २६. श्री बालगोविन्द—
अलीगढ़ २६. श्री शीशराम आर्य—नोगांवखाल २८. श्री कन्हैयालाल सैनी–माधोपुर
२९ श्री भरतसिंह—नहटौर ३०. श्री रामवचन यादव–फैजाबाद ३१. श्री शिवनन्द
प्रसाद—पेशोर ३२ श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य—नागपुर ३३. श्री रामशरण त्यागी—
कुटेसरा ३४. श्री धर्मसिंह आर्य—हरदोई ३५. श्री बृजनन्दत त्रिवेदी—उन्नाव ३६.
श्री भीमसिंह–पालायन ३७. श्री अमरचन्द—मथुरा ३८. श्री रामकृष्ण राठी—
जावला ३९. श्री सिद्धिनन्दन मिश्र—वाराणसी ४०. श्री डी० एस० रावत–हल्द्वानी
४१. श्री श्यामनन्दन ठाकुर—हाजीपुर ४२. श्री शिवबचन दुबे—गाजियाबाद ४३.
श्री हंसराम अध्यापक—पीलीभीत ४४. श्री होरीलाल सागर—पीलीभीत ४५. श्री
रामराज आर्य—ओबरा ४६. श्री वेंकट रेड्डी–महबूबनगर ४७. श्री सत्यार्थ प्रकाश
—वाराणसी ४८. श्री रामभरोसेसिंह—ग्वालियर ४९. श्री केशरीसिंह—ढाढाबुजर्ग
५०. श्री हरिप्रसाद आर्य—वस्ती ५१. श्री श्री बाबूलाल योगी—सिसोद ५२. श्री
बेनी माधव—सुभाषनगर ५३. श्री सोमप्रकाश सिंह—रिवाडी ५४. श्री बद्रीमणि
त्रिपाठी–बैतालपुर ५५. श्री बाबूलाल–गुना ५६. श्री रामदास—बहराइच ५७. श्री
विरेन्द्र पालसिंह—दिल्ली ५८. श्री नरेन्द्रपाल सिंह ५९. श्रीमति शन्नो देवी—साउथ
एक्सटेंशन ६०. श्रीमति सीतादेवी—साउथ एक्स्टेंशन ६१. श्रीमती सरला देवी—
साउथ एक्स्टेंशन ६२. श्री मन्त्री आर्य समाज—उभानी ६३. श्री टी० एन०
श्रीवास्तव–दिल्ली ६४. श्री गोविन्दसिंह—मेरठ ६५. श्री के० वी विद्यासागर—अन्ध-
रीरगंज ६६. श्री पाँचूराम मोतीराम—वाराणसी ६७. श्री गयाप्रसाद—सोनापुर ६८.
श्री अयोध्याप्रसाद पटेल—इलाहाबाद ६९. श्री नगारी शंकरराव—हैदराबाद
७०. श्री रामगीर गोस्वामी—आलकी ७१. श्री सीताराम—पिपली ७२. श्री
ओमप्रकाश आर्य—अमरोहा ७३. श्री पन्नालाल—चौहटन ७४. श्री जीवनलाल—
अकोला ७५. श्री सोमनाथ कपिल—हिसार ७६. श्री जयकृष्ण भारद्वाज—विदिशा
७७. श्री जयप्रकाश वर्मा—साँची ७८. श्री गुजराती बाबा—दिल्ली ७९. श्री
रामकिशन—राठौर ८०. श्री सत्यप्रकाश शर्मा—पगनेश्वर ८१. श्री पं० वीरव्रत
शास्त्री—दिल्ली।

२) की आहुति देने वाले

१. श्री कुंज विहारीलाल—वृन्दावन २. श्री रामनिवास—भिवानी ३. श्री
गणपतसिंह आर्य—मुजफ्फरनगर ६. श्री शंकरसिंह—गुना ७. श्री रामस्वरूप सैनी
—रिवाड़ी ८. श्री श्यामलाल हलवाई—रामपुरा ९. श्री रमेशचन्द्र गुप्ता—बम्बई
१०. श्री बलवन्तसिंह—गुड़गांव।

सभी दान दाताओं का हार्दिक धन्यवाद—

विनीता

राकेश रानी—मन्त्री

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज की जन्म-शताब्दी मनाई जा रही है।

१९७५ ई० हमारा शताब्दी वर्ष है। पश्चात्

'सत्यार्थ प्रकाश' और फिर निर्माण शताब्दी आयेगी।

बड़ी तैयारियां हो रही हैं। बहुत कुछ होगा। होना भी चाहिए। जीवन का चिह्न कर्मण्यता ही है।

कुछ विशेष करने के लिए आग्रहपूर्वक निवेदन

१–वर्ण व्यवस्था, अन्तर्जातीय विवाह और स्पर्शास्पर्श के विषय में अन्तिम निर्णय किया जाय।

२–नाम के साथ आर्य, भारतीय, जन्म-स्थान या मात्र माता का नाम लिखा जाये। जन्म-जाति और 'हिन्दू' शब्द का उल्लेख सर्वथा निषिद्ध हो।

३–सामूहिक संस्कारों (मुख्यतः विवाह) का प्रचलन किया जाय।

४–प्रत्येक नगर में आर्य स्थान—कालोनी, बसाई जाएं और समाज-मन्दिर अवश्य हों।

५–मन्दिर, मात्र समाज मन्दिर हों। रईस की कोठी, वकील का दफ्तर, स्कूल-पाठशाला, व्यायामशाला, विवाह मण्डप आदि कदापि नहीं। डिजाइन लगभग एक जैसे हों, जो दूसरों से भिन्न और दूर से पहचाने जा सकें। शिखर, कलश, ध्वज, यज्ञवेदी अवश्य हों। उद्घोष के लिये शंखध्वनि ही की जाय।

६–सभी का प्रवेश-दीक्षा एक समान हो। एक प्रतिज्ञा हो। शिखा, सूत्र अनिवार्य हों। मांस, मदिरा जुआ त्याज्य हों।

७–पुरोहित-आचार्य, पुरोहित ही हों। क्लर्क या भजनीक 'नौकर' नहीं।

८–संस्थाओं के नाम 'एंग्लो' नहीं, मात्र 'वैदिक' हों।

९–परिवारों में कम से कम एक, गुरुकुलवासी और प्रचारक-भिक्षुक अवश्य हो।

१०–शिक्षा का माध्यम संस्कृत-हिन्दी ही है, अंग्रेजी नहीं, धर्म-शिक्षा अनिवार्य हो।

११–सभी पार्टीबन्दी, ट्रस्टीशिप, अदालती मुकदमे आदि सर्वथा समाप्त करें।

१२–धर्म सभा, विद्या सभा और न्याय सभा की स्थापना की जाय।

१३–उपदेश कम, आत्म-चिन्तन, निरीक्षण, कर्त्तव्य परायणता पर अधिक ध्यान दिया जाय।

१४–उच्चकोटि के मासिक, साप्ताहिक और दैनिक पत्र प्रकाशित किये जायें।

१५–विद्वत परिषद-अनुसन्धान मंडल स्थापित हो।

१६–सभी सदस्य, नियमित रूप से अपनी आय काशतांश, समाज को भेंट किया करें; जो उनके सदाचार, ईमानदारी की कसौटी है।

१७–टंकारा में ऋषि का जन्म-स्थान और अजमेर में निर्वाण-स्थान जैन और ईसाई तथा मुसलमानों के कब्जे में हैं। कितनी लज्जा की बात है। वर्षों से अपील छप रही हैं फिर भी टंकारा ट्रस्ट, परोपकारिणी सभा, सार्वदेशिक और प्रतिनिधि सभायें अब तक इन ऐतिहासिक स्थानों को खरीद नहीं सकीं। पैसे की कमी नहीं है। कमी है श्रद्धा और उत्साह की, स्मारक का महत्त्व और उसकी रक्षा-उपयोगिता समझने की। इसको मूर्ति पूजा, अन्ध-विश्वास, समझने वालों की भी गिनती की जा सकती है जो सदा कुतर्कों का बोझ सिर पर उठाए फिरते हैं।

यह कार्य हैं जो इस वर्ष में अवश्य ही होने चाहियें, किये जाने चाहियें। स्थिर निधियां जमा करना सभी पापों की जड़ रही है, अब भी है और आगे भी रहेंगी।

—द्वारका प्रसाद

बम्बई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह पूरे बल से मनाइए

× × ×

चैत्र सुदी १ सम्वत् २०३२ तदनुसार १२ अप्रैल, १९७५ को आर्यसमाज की स्थापना हुए सौ वर्ष पूरे हो जाएंगे। यह अभूतपूर्व अवसर हम सब के जीवन में पहली बार आया है। इसलिए प्रत्येक आर्यसमाजी और आर्यसमाज से सहानुभूति रखने वाले व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि इस अवसर पर सन्नद्ध होकर "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" की दिशा में अग्रसर हों। समस्त आर्यजन मिलकर शताब्दी समारोह ऐसे आन-बान-शान से मनाएँ कि आर्यसमाज के संगठन और अनुशासन की सब पर सुन्दर छाप पड़े।

- ☐ ६ अप्रैल, १९७५ से चैत्र शुक्ला प्रतिपदा सं० २०३२ वि० तदनुसार १२ अप्रैल, १९७५ तक भारत एवं विदेशों की समस्त आर्यसमाजों में यजुर्वेद-परायण यज्ञ किया जाय और यज्ञ की पूर्णाहुति १२ अप्रैल, १९७५ को आर्यसमाज स्थापना शताब्दी के दिन प्रातःकाल ठीक ९-०० बजे (अपने-अपने देश के समयानुसार) की जाय। प्रतिदिन सायंकाल किसी विद्वान का वेदोपदेश एवं आर्यसमाज की उपलब्धियों पर व्याख्यान कराया जाय।
- ☐ १२ अप्रैल, १९७५ को मध्यान्होत्तर १ से ५ बजे तक शोभायात्रा प्रभावशाली आकर्षक तथा भव्य रूप में निकाली जाय और यह शोभायात्रा अन्त में सार्वजनिक सभा में परिणित हो।
- ☐ १२ अप्रैल, १९७५ को सायंकाल सार्वजनिक सभा का आयोजन किया जाय जिस में आर्य विद्वानों, सम्मानित नेताओं एवं अन्य मतों के विद्वानों को भी निमन्त्रित करके उनके भाषणों का प्रबन्ध किया जाय।
- ☐ आर्यसमाज मन्दिरों, स्कूल, गुरुकुल, कालेज और अन्य संस्थानों आदि के भवनों पर दीपमाला का आयोजन किया जाय। ओ३म् ध्वज समाज मन्दिरों के अतिरिक्त प्रत्येक आर्यसमाजी सभासद् के घर पर लहराया जाय।
- ☐ दीपमाला के अतिरिक्त समाज मन्दिरों को फूलों, पत्तों तथा ओ३म् पताकाओं से आकर्षक रूप से अलंकृत किया जाये।
- ☐ वैदिक साहित्य तथा सत्यार्थप्रकाश के वितरण की विशेष व्यवस्था की जाय।
- ☐ स्थानीय समाचारपत्रों पत्रिकाओं में १२ अप्रैल, १९७५ को हिन्दी अंग्रेजी तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओं में विद्वानों से लेख लिखवाकर प्रकाशित करवाने का प्रबन्ध किया जाय। आर्यसमाजी समाचार-पत्रों के विशेषांक निकलवायें।

रामगोपाल
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली-१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज शताब्दी मनाने हेतु आर्यसमाजों को आवश्यक सुझाव

१. शताब्दी वर्ष में पड़ने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिन (१२ फरवरी) एवं इस वर्ष के शिवरात्रि (दयानन्द बोधोत्सव) पर्व को शताब्दी के पूर्व रूप में विशेष उत्साह एवं समारोहपूर्वक मनाया जाए।

२. चैत्र सुदि प्रतिपदा १२ अप्रैल १९७५ से चैत्र सुदी पञ्चमी १६ अप्रैल १९७५ तक प्रत्येक गृह, समाज, ग्राम और नगर में सोत्साह दीपमाला करके तथा विशेष यज्ञ और प्रवचनों एवं कथाओं का आयोजन करके मनाया जाए।

३. विशाल सार्वजनिक सभाएँ करके महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के सन्देश को आबाल, वृद्ध सभी तक पहुँचाया जाए।

४ भारत सरकार, प्रधानमन्त्री और राष्ट्रपति को पत्र लिखे जाएं कि १२ अप्रैल १९७५ को सार्वजनिक अवकाश रखा जाए।

५. सभी समाचार पत्रों से सम्पर्क स्थापित कर उस दिन विशेषांक निकलवाने का प्रयत्न किया जाए।

६. ग्रामों और नगरों में ६ से १२ अप्रैल तक प्रभात फेरियाँ निकाली जाएँ।

७. सभी क्षेत्रों में आकाशवाणी के अधिकारियों से सम्पर्क स्थापित कर उस दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज के सम्बन्ध में विशेष वार्ताएँ प्रसारित कराई जाएँ।

८. अपना धन अपने ही क्षेत्र में प्रचार के लिए व्यय करें।

९. आर्यसमाज की सभी शिक्षण संस्थाओं में आर्यसमाज स्थापना शब्तादी के सम्बन्ध में भाषण एवं वादविवाद प्रतियोगिताएँ कराई जाएँ।

१०. पुरस्कार में ऋषि दयानन्द एवं आर्यसमाज का साहित्य वितरित करें।

११. शताब्दी वर्ष में आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द साहित्य के प्रचार-प्रसार की समुचित व्यवस्था की जाए। यथासम्भव प्रत्येक शिक्षक, धार्मिक पुरोहित, सामाजिक, सांस्कृतिक संस्थाओं के अधिकारियों तक आर्यसमाज का साहित्य पहुँचाने का प्रयास किया जाय।

१२. वेद, सत्यार्थकाश और ऋषि जीवनी प्रत्येक परिवार में पहुँचाने का प्रयत्न किया जाय।

१३. हम आशा करते हैं कि आर्यजनता और आर्यसमाजें आर्यसमाज की शताब्दी ऐसे ढंग से मनाएँगी कि संसार जान जाए कि वास्तव में ऋषि दयानन्द के दिव्य स्वप्नों की पूर्ति से ही शान्ति और आनन्द का साम्राज्य स्थापित किया जा सकता है। आशा, विश्वास और उमंग से उठिए और अपने क्षेत्र को आर्यसमाज मय बनाते हुए आर्यसमाज स्थापना शताब्दी मनाने की तैयारी कीजिए।

हम इस पवित्र कार्य में प्रत्येक सहयोग देंगे।

१४. अपने क्षेत्र का हर कोना प्रचार पोस्टरों, ऋषि दयानन्द के चित्रों से भर दें।

ओमानन्द सरस्वती	जगदीश विद्यार्थी	भारतेन्द्रनाथ
अध्यक्ष	संयोजक	मंत्री

सार्वभौम आर्यसमाज शताब्दी परिषद्

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाजों के नाम अत्यावश्यक परिपत्र

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ में महर्षि दयानन्द पर मिथ्या भ्रांतिपूर्ण आरोप लगाने का

दुस्साहस व घोर अपमान

सभा से पुस्तक पर प्रतिबन्ध लगाकर उसे रद्द कराने की मांग करें

मान्य मन्त्री जी ! सादर नमस्ते ।

अत्यन्त कष्ट के साथ महर्षि दयानन्द जी के भक्तों को यह सूचना देते हुए हमें हार्दिक दुःख है कि आर्यसमाज के सर्वोच्च संघठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने, जिस पर ऋषि के गौरव की रक्षा का भार था, एक ग्रन्थ 'सायण और दयानन्द के वेदभाष्यों का तुलनात्मक अध्ययन' आर्यसमाज शताब्दी के उपलक्ष्य में प्रकाशित किया है, जिसमें ऋषि दयानन्द के ऊपर अनुचित, भ्रान्त, मिथ्या आरोप लगाने की चेष्टा की गई है ।

ग्रन्थ के कुछ आपत्तिजनक उद्धरण इस प्रकार हैं—

— दयानन्द की भाष्यकारिता में सायण का भाष्य सबसे अधिक सहायक था ।
पृष्ठ २६०, पंक्ति ८

— सायण के समय में जिस प्रकार के भाष्य की आवश्यकता थी, उन्होंने ठीक वैसा ही भाष्य किया है । पृष्ठ २६१ पंक्ति २

— उनके (महर्षि दयानन्द के) भाष्य में मन्त्रों के सभी तथ्यों का पूर्णतः प्रकाशन हुआ हो यह कहा नहीं जा सकता । पृष्ठ २६१ पंक्ति ८

— (ऋषि दयानन्द के) इस व्यावहारिक भाष्य में कितनी त्रुटियां हैं एवं किस अंश तक संगत है, यह कहना कठिन है । पृष्ठ १८४ पंक्ति ८

— दयानन्द का अर्थ स्पष्ट नहीं है । पृष्ठ १३८ पंक्ति १०

— महर्षि दयानन्द पूरे मन्त्र के अर्थ को स्पष्ट नहीं कर पाए हैं ।
पृष्ठ १३८ पंक्ति १७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

— दयानन्द का पदार्थ स्पष्ट नहीं है। पृष्ठ १३९ पंक्ति २२

— मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि दयानन्द के भाष्य में भौतिक और वैज्ञानिक अर्थ स्पष्ट नहीं हो पाए हैं। पृष्ठ २६०

-- इसी प्रकार (यास्क के) ऋषि सम्बन्धी विचार भी भ्रमपूर्ण हैं। पृष्ठ २५६

-- मन्त्रार्थ में सभी शब्दों का तात्पर्य स्पष्ट न होने के कारण मन्त्र का वर्ण्य विषय बोधगम्य नहीं है। पृष्ठ १३८

आप उक्त उद्धरण पढ़ कर स्वयं निर्णय करें कि ग्रन्थ में उक्त विचार प्रकाशित कर सार्वदेशिक सभा ने कितना बड़ा और अक्षम्य अपराध किया है। जिस सायण भाष्य की धज्जियां ऋषि दयानन्द और आर्य विद्वान् उड़ाते रहे, उस सायण के भाष्य से सहायता लेने का ऋषि दयानन्द पर आरोप सार्वदेशिक सभा द्वारा लगाया जाना क्या निन्दनीय कार्य नहीं ? जिस भाष्य ने 'वेद' को बदनाम किया उस भाष्य को उस युग के अनुकूल सिद्ध करना क्या साधारण अपराध है ?

इस परिपत्र द्वारा आपसे सानुरोध निवेदन है कि **आप सभा को पत्र लिख कर मांग करें कि--**

१—उक्त ग्रन्थ को रद्द किया जाए।

२—अक्षम्य अपराध के लिए सार्वदेशिक सभा के अधिकारी आर्य जनता से क्षमा याचना करें।

हमें विश्वास है कि आप गुरुदेव ऋषि दयानन्द का अपमान सहन न करते हुए उक्त दोनों मांगें अपने आर्यसमाज से प्रधान सार्वदेशिक सभा, रामलीला, मैदान नई दिल्ली को भेजकर तुरन्त कार्यवाही की मांग करेंगे।

विनीत

—ओमानन्द सरस्वती — **—आचार्य उदयवीर शास्त्री** (सांख्य-योगतीर्थ)

—आचार्य विश्वश्रवा: 'व्यास' (भू० पू० मंत्री सार्वदेशिक धर्मार्य सभा, दिल्ली)

—आचार्य जगदीश विद्यार्थी — **—बिहारीलाल शास्त्री** (शास्त्रार्थ महारथी)

—शिवपूजन सिंह आचार्य, कानपुर

—भारतेन्द्रनाथ — **--राजेन्द्र जिज्ञासु** (प्राध्यापक डी०ए०वी० कालिज अबोहर)

--प्रो० रत्नसिंह एम० ए० (सुप्रसिद्ध दार्शनिक और व्याख्याता)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संकलन कर्ता—प्रो० रत्नसिंह एम० ए०

सायण के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द की सम्मति

सायणाचार्य अल्पबुद्धिमान् व्यक्ति

"इससे यह सिद्ध होता है कि जो सायणाचार्य और महीधरादि अल्पबुद्धि लोगों के झूठे व्याख्यानों को देख के आजकल के आर्य्यावर्त्त और यूरोपदेश के निवासी लोग जो वेदों के ऊपर अपनी २ देश भाषाओं में व्याख्यान करते हैं वे ठीक २ नहीं हैं, और उन अनर्थयुक्त व्याख्यानों के मानने से मनुष्यों को अत्यन्त दुःख प्राप्त होता है। इससे बुद्धिमानों को उन व्याख्यानों का प्रमाण करना योग्य नहीं।"

—ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका छठा संस्करण पृष्ठ ८२-८३)

"सायणाचार्य के व्याख्यान बहुत अल्पार्थ हैं—"

—(श्रीमद्दयानन्द-ग्रन्थ संग्रह पृष्ठ १६५)

"उव्वट, सायण, महीधर, रावण आदि के रचे हुए भाष्य प्राचीन भाष्यों से सर्वथा विपरीत हैं।"

—(ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन पृष्ठ ६०)

सायण द्वारा वेद में इतिहास मानना मिथ्या है।

"इससे जो सायणाचार्यादि लोगों ने अपनी २ बनाई टीकाओं में वेदों में जहाँ तहाँ इतिहास वर्णन किये हैं वे सब मिथ्या हैं :"

—(ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका—पृष्ठ ८७)

सायण का भाष्य वेदार्थ विरुद्ध एवं भ्रान्त है

"परन्तु जो रावण, उव्वट, सायण और महीधर आदि ने भाष्य बनाये हैं वे सब मूलमन्त्र और ऋषिकृत व्याख्यानों से विरुद्ध हैं। मैं वैसा भाष्य नहीं बनाता, क्योंकि उन्होंने वेदों की सत्यार्थता और अपूर्वता कुछ भी नहीं जानी।... और जो २ भाष्य उव्वट, सायण, महीधरादि ने बनाए हैं वे सब मूलार्थ और सनातन वेद व्याख्यानों से विरुद्ध हैं।

—(वही पृष्ठ ३४८)

सायण द्वारा वेदों को केवल क्रियाकाण्ड परक मानना मिथ्या है।

"देखो सायणाचार्य ने वेदों के श्रेष्ठ अर्थों को नहीं जानकर कहा है कि सब वेद क्रियाकाण्ड का ही प्रतिपादन करते हैं। यह उनकी बात मिथ्या है।"

(वही पृष्ठ ३४८)

सायण के किये अर्थ उलटे हैं।

"ऐसे ही सायणाचार्य ने और भी बहुत मन्त्रों की व्याख्याओं में शब्दों के अर्थ उलटे किये हैं।"...यह सायणाचार्य का कथन अयोग्य और पूर्वापर विरोधी होकर आगे पीछे के सम्बन्ध को तोड़ता है।"

—(वही पृष्ठ ३४६)

सायण के भाष्य में बहुत दोष हैं।

"एवमेव सायणाचार्यकृतभाष्यदोषा बहवः सन्ति।"

—(वही पृष्ठ ३४७)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य विद्वानों की सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों को फटकार

१. सुप्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी पं० बिहारीलाल जी शास्त्री बरेली के विचार

"सायण और दयानन्द के वेदभाष्यों के तुलनात्मक अध्ययन के सम्बन्ध में जो परिपत्र प्रकाशित किया है उससे मैं पूर्णतया सहमत हूँ।

इस अनर्गल पुस्तक का पूर्ण विरोध होना चाहिये और प्रकाशित करने वाले को धिक्कृत किया जाये। —**बिहारीलाल शास्त्री बरेली**

२. गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति सार्वदेशिक सभा के मन्त्री, व संस्कृत के प्रकांड पंडित श्री रघुवीरसिंह शास्त्री के विचार

आप की भेजी पुस्तक "सायण तथा दयानन्द के वेदभाष्यों का तुलनात्मक अध्ययन" पढ़ी। आप द्वारा निर्देशित आपत्तिजनक पंक्तियाँ तथा स्थल बहुत ही अनर्थपूर्ण हैं।

आर्यसमाज का कितना दुर्भाग्य है कि सार्वदेशिक सभा ने आर्यसमाज शताब्दी के उपलक्ष्य में यह ग्रन्थ प्रकाशित किया है और सभा मन्त्री जी ने प्रकाशकीय में इस ग्रन्थ को सभा के अनुसन्धान विभाग द्वारा प्रमाणित एवं अनुमोदित बताया है।

यदि आर्यसमाजेतर किसी संस्था ने यह ग्रन्थ प्रकाशित कराया होता तो तहलका मच जाता। सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों को स्थिति की गम्भीरता का अनुभव करते हुए तुरन्त भूल का परिमार्जन करना चाहिये। —रघुवीरसिंह शास्त्री

२. आर्य युवक परिषद कानपुर के अध्यक्ष श्री राकेशकुमार आर्य का पत्र

दिसम्बर मास का 'जन-ज्ञान' मिला, पढ़ा। सोचा कि धिक्कार है ऐसे पद लोलुप गद्दार दयानन्द के ठेकेदारों को, जो आज सायण की तारीफ करते हैं।

ऐसी पंक्तियां लिखते समय उंगलियां क्यों नहीं गल गयीं ? लेखनी क्यों नहीं टूट गयी ?... ये लोग आर्यसमाज में अमरबेल डाल उसे सुखाने में लगे हैं। मैं जन-ज्ञान के माध्यम से इन नेताओं से कहना चाहता हूँ कि यदि उन्होंने अपने अपराध के लिए क्षमा नहीं माँगी तो आर्यसमाज का बच्चा, बूढ़ा उन्हें माफ नहीं करेगा। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लाला रामगोपाल जी ही बताएँ कि हम

आपकी मानें या

स्वामी दयानन्द की मानें

१—आपने २६ जनवरी के सार्वदेशिक पत्र में लिखा है कि—"इस परिपत्र द्वारा सार्वदेशिक सभा पर मनमाने आरोप लगाकर आर्य जनता को पथ भ्रष्ट करने की कुचेष्टा की गयी है।"

—क्या आप मनमाने शब्द के अर्थ जानते हैं ?

—क्या इस परिपत्र में जो पंक्तियाँ उद्धृत की गयी हैं वे ग्रन्थ में नहीं हैं ?

—यदि हैं तो यह मनमाने हुए या सत्य ?

२—आप ने १९ जनवरी के अंक में लिखा कि बिना हमें सूचित किए पत्रों में लेख लिख दिये ?

क्या यह सच नहीं है कि हमने पहले मौखिक निवेदन किया। फिर दो रजिस्टर्ड पत्र लिखे, आपने भी दूसरे वक्तव्य में यह माना है।

३—लाला जी ! हम आप का आदर करते हैं, किन्तु ऋषि दयानन्द का अनादर आप की नाराजगी के डर से हम सहने को तैयार नहीं।

हमने सार्वदेशिक सभा को न बदनाम किया न उसका अनादर—**हाँ यह सर्वथा सत्य है कि सार्वदेशिक सभा ने गुरुदेव दयानन्द को बदनाम करने व उनका अनादर करने का अक्षम्य अपराध किया है।** जिसे सहना किसी भी दयानन्द भक्त के लिए सम्भव नहीं।

काश, आप भूल स्वीकार कर सभा के गौरव की रक्षा कर सकते ?

ला० रामगोपाल जी !

महर्षि दयानन्द का आदेश है कि

'असत्यमिश्रं सत्यं दूरतस्त्याज्यमिति'

असत्य से युक्त ग्रन्थस्थ सत्य को भी वैसे ही छोड़ देना चाहिए, जैसे विषयुक्त अन्न को—

(सत्यार्थ प्रकाश) तृतीय समुल्लास

लाला जी ! आप ही बताइए कि–आपकी मानें या ऋषि दयानन्द की मानें ?

—भारतेन्द्रनाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महर्षि दयानन्द का अपमान हम सहन नहीं करेंगे

अत्यन्त खेद और लज्जा का विषय है कि सार्वदेशिक सभा के अधिकारीगण अपनी अक्षम्य भूल और अपराध को स्वीकार करने के स्थान पर लम्बे-लम्बे लेख लिखकर उस ग्रन्थ का समर्थन कर रहे हैं जिसे आग में जला देना चाहिए था।

सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी ने २६ जनवरी के सार्वदेशिक पत्र में कितना अनुपम उदाहरण दिया है कि पुस्तक में ९०६२ पंक्तियाँ हैं उसमें २० पंक्तियों पर ही हमारा ध्यान क्यों गया ? ९०४२ पर क्यों नहीं गया ?

ऐसा उत्तर वही व्यक्ति दे सकता है जिसे ऋषि दयानन्द पर श्रद्धा न हो। क्या एक मन गो-दुग्ध में एक रत्ती संखिया मिल जाने पर उस गो-दुग्ध का सेवन श्री रामगोपालजी अपने प्रिय जनों को कराने का साहस कर सकते हैं ?

सीधा उत्तर है, नहीं—

इसी तरह उक्त ग्रन्थ "सायण तथा महर्षि दयानन्द के वेद भाष्यों का तुलनात्मक अध्ययन में लेखिका ने चाहे ९०४२ पंक्तियों में रामगोपाल जी के लेखानुसार स्वामी दयानन्द की कितनी प्रशंसा क्यों न लिखी हो—२० पंक्तियों में जो लिखा है वह अक्षम्य अपराध है।

सबसे बड़े अपराधी वे मन्त्री महोदय हैं जिन्होंने भूमिका में इस ग्रन्थ की प्रशंसा कर इसे छापा है।

हमारा निश्चित मत है कि उक्त ग्रन्थ सार्वदेशिक सभा को नहीं छापना चाहिए था। आर्यसमाज शताब्दी पर—इस ग्रंथ का प्रकाशन आर्यसमाज के सर्वोच्च संघठन की ओर से एक ऐसा कलंक है जिसकी कालिमा अधिकारियों को धोनी ही होगी।

हम यह भी घोषणा करना चाहते हैं कि इस विषय में आप हमें चाहे कितनी गालियाँ दें, हम पर कितने ही प्रहार करें, हम गुरुदेव दयानन्द के विरुद्ध २० पंक्तियाँ तो क्या एक शब्द भी देखने के लिए तैयार नहीं।

बड़े से बड़ा बलिदान देकर भी हम इस पाप का प्रायश्चित करने के लिए सार्वदेशिक सभा को बाध्य करेंगे।

हमें विश्वास है कि ऋषि दयानन्द के अनुयायी अभी जीवित हैं। आर्यसमाज के विद्वानों ने अभी अपनी आत्मा सभा के अधिकारियों को नहीं बेची है। इसलिए सम्पूर्ण आर्यजगत् हमारे साथ है। चुने हुए वेद के विद्वानों के हस्ताक्षरों से युक्त परिपत्र हम अगले पृष्ठों में प्रकाशित कर रहे हैं और भी अनेकों विद्वानों के पत्र अगले अंक में ज्यों-ज्यों प्राप्त होते जायेंगे प्रकाशित किये जायेंगे।

सभा के अधिकारो भलीभांति समझ लें कि इस प्रश्न को टालकर उन्होंने जनता की भावनाओं को ठेस पहुंचाई है। इस विषय में श्री वीरेन्द्र जी व डा० हरिप्रकाश जी ने हमें विश्वास दिलाया था कि सभा-प्रधान जी पुस्तक को वापस ले

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रहे हैं। किन्तु ग्रंथ वापस लेने के स्थान पर उन्होंने दो भ्रामक वक्तव्य प्रसारित किए।

उनका यह कहना सर्वथा असत्य है कि हमने उन्हें बदनाम करने के लिये लेख लिखे। हमने उन्हें पहले मौखिक रूप से कहा, टालने पर फिर दो पत्र भेजे रजिस्टर्ड, पर अपराध स्वीकार करने के स्थान पर वे हमें ही अपराधी बता रहे हैं। प्रभु या आर्यविद्वजन ही न्याय करेंगे…कि अपराधी कौन है ?

सार्वदेशिक सभा के वर्तमान अधिकारियों ने सभा को व्यक्तिगत जागीर समझ कर मनमाने ढंग से कार्य आरम्भ कर रखा है। यदि कोई सुझाव देता है तो उसे गालियां दी जाती हैं।

आर्यसमाज शताब्दी के नाम पर एकत्र धन से ऊट-पटांग पुस्तकें छापी जा रही हैं जिनसे आर्य समाज को बदनाम किया जा रहा है। क्या आर्य समाज में विद्वानों का अकाल था जो उक्त जैन छात्रा का शोध ग्रन्थ छापना आवश्यक हो गया ?

अभिमान संसार में किसी का नहीं रहा। सत्य के सम्मुख प्रलय भी हार मानती है। हम इसी सत्य के बल पर सभा के अधिकारियों को चेतावनी देना चाहते हैं कि वे तुरन्त इस ग्रन्थ को रद्द घोषित करें अन्यथा जनता के क्षो- का सामना उन्हें करना पड़ेगा। **हमें सार्वदेशिक सभा से कोई विरोध नहीं है। वह हमारी सभा है।** हमें विरोध है वर्तमान अधिकारियों की उस नीति से जिसने आर्य समाज शताब्दी के ऐतिहासिक अवसर को पार्टीबाजी की भेंट चढ़ा दिया है।

कौन खून के आंसू न रोएगा, यह देखकर कि रक्षक ही भक्षक बन बैठे हैं। शताब्दी पर क्या किया है सभा के अधिकारियों ने ? सिवाय करोड़ों की अपीलों के—

अभी समय है सावधान ! गुरुदेव दयानन्द का अपमान करने वाले ग्रंथ को रद्द कर समस्त आर्य शक्ति को केन्द्रित कर आर्य समाज का संदेश फैलाइए अन्यथा इतिहास आपको कभी क्षमा नहीं करेगा।

हमें आप जितना जी चाहे गालियां दे लीजिए हम उत्तर न देंगे। हमारे विरुद्ध अनेकों लेख आप पहले भी लिख चुके हैं। हमारा उत्तर तो हमारा कार्य स्वयं दे रहा है। हम इन मामलों में पड़कर समय व्यर्थ खोना कभी पसन्द नहीं करते। पर **देवतुल्य महान् स्वामी दयानन्द का अपमान हम किसी को भी न करने देंगे।**

—भारतेन्द्रनाथ

ध्यान से पढ़ लीजिए— प्रधान जी !

हम अपने पाठकों को सूचित करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं कि कुछ कृपालु जन हमें हर तरह की हानि पहुँचाने का प्रयत्न कर रहे हैं। प्रत्येक प्रकार की धमकियाँ दी जा रही हैं। वे सब कुछ भी कर सकते हैं। हमें विश्वास हैं कि प्रत्येक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति में दयानन्द-संस्थान को आर्य जनता का स्नेह प्राप्त होता रहेगा—और कार्य रुकेगा नहीं।

—भारतेन्द्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सभाप्रधान ला० रामगोपाल शालवाले को

शास्त्रार्थ के लिए आवाह्न

'सायण तथा दयानन्द के वेद भाष्यों का तुलनात्मक अध्ययन' नामक पुस्तक में महर्षि दयानन्द सरस्वती का घोर अपमान

पुस्तक भ्रांतियों एवं अनर्गल प्रलापों का पिटारा

सभा-प्रधान ला० रामगोपाल शालवाले की लीपा-पोती

ले० आचार्य जगदीश जी विद्यार्थी एम० ए०

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने सुश्री डा० विमला द्वारा लिखित एक पुस्तक प्रकाशित की है—'सायण तथा दयानन्द के वेदभाष्यों का तुलनात्मक अध्ययन।' इस पुस्तक के अनेक पृष्ठों पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के वेदभाष्य को अस्पष्ट लिखा है। महर्षि दयानन्द को वैज्ञानिक ज्ञान न था, ऐसा भी लिखा है। लेखिका की यह भी मान्यता है कि दयानन्द की भाष्यकारिता में सायण सबसे अधिक सहायक था। इसी प्रकार महर्षि यास्क के ऋषि सम्बन्धी विचारों को भी भ्रमपूर्ण बताया गया है। इतना ही नहीं, लेखिका ने यहां तक लिख दिया है कि सायण के युग में जिस प्रकार के भाष्य की आवश्यकता थी, उसने वैसा ही भाष्य किया। इस प्रकार की और भी अनेक मिथ्या, तथ्यहीन, भ्रांतिपूर्ण एवं अनर्गल बातें पुस्तक में हैं।

इस पुस्तक के सम्बन्ध में एक परिपत्र भी आर्यसमाजों को भेजा गया है जिसमें आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य विश्वश्रवा 'व्यास' वेदाचार्य एम० ए० भूतपूर्व मन्त्री सार्वदेशिक धर्मार्य सभा, युवक विद्वान्, लेखक और विचारक प्रो० राजेन्द्र जी जिज्ञासु एम० ए०, आर्य-साहित्य के प्रचारक एवं प्रसारक पं० भारतेन्द्रनाथ साहित्यालंकार एवं मेरे हस्ताक्षर थे, श्री ला० रामगोपाल जी ने श्री भारतेन्द्रनाथ जी पर आक्षेप करके जैसी सार्वदेशिक सभा में फूट है, वैसी ही फूट विद्वानों में भी डालने का यत्न किया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस विज्ञप्ति पर अब स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, पं० बिहारी लाल जी शास्त्री, शास्त्रार्थ महारथी, दार्शनिक विद्वान् पं० उदयवीर जी शास्त्री, प्रो० रत्नसिंह जी एम० ए० उपाचार्य महानन्द मिशन कालिज, गाजियाबाद आदि के भी हस्ताक्षर हो गये हैं।

हमारा न सार्वदेशिक सभा से कोई द्वेष है न, ला० राम गोपाल जी शालवाले से। हमारा विरोध है पुस्तक के तथ्यहीन एवं अनर्गल प्रलापों से। हम महर्षि दयानन्द सरस्वती का अपमान सहन नहीं कर सकते। श्री लाला जी का कहना है कि पुस्तक में ९०६२ पंक्तियाँ हैं जिनमें से ९०४२ ठीक हैं। लालाजी आपके ही अनुसार २० पंक्तियाँ तो आपत्तिजनक हैं ही। २० पंक्तियाँ तो बहुत हैं, आपत्तिजनक तो एक पंक्ति ही पर्याप्त है। आदरणीय लाला जी से एक प्रश्न है कि यदि एक मन हलवा या एक मन खीर में एक माशा संख्या डाल दी जाए तो क्या शेष ३९ सेर, १५ छटाँक, ४ तोला ११ माशा हलवा या खीर खाने योग्य रहेगी।

हम एक बार पुनः अपने पूर्ण सामर्थ्य एवं डिण्डिम घोष के साथ कहना चाहते हैं कि उक्त पुस्तक में महर्षि दयानन्द का घोर अपमान हुआ है। सार्वदेशिक सभा के अधिकारी अपने इस कुकृत्य के लिये जनता से क्षमा माँगें और पुस्तक की बिक्री तुरन्त बन्द करें अन्यथा हम समस्त विद्वानों की ओर से आपको सार्वजनिक रूप से शास्त्रार्थ के लिये आह्वान करते हैं। आप जब चाहें, जहां चाहें शास्त्रार्थ कर लें। आर्यजगत् के विद्वान् तो हमारे साथ सहमत हैं, जनता भी स्वयं निर्णय कर लेगी कि किसका पक्ष सत्य है!

★

शंका समाधान भेजने वाले सज्जनों से निवेदन

श्री पं० भारतेन्द्रनाथ जी साहित्यालंकार द्वारा सञ्चालित 'जनज्ञान' मासिक पत्र हरध्यान सिंह मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली-५ में प्रकाशित कराने वाले सज्जनों की शंकाओं का समाधान यथामति उसी पत्र में भेज दिया जाता है। परन्तु कुछ सज्जनों की यह इच्छा भी रहती है कि उनकी शंकाओं का उत्तर उनके निजी पते पर भेज दिया जाया करे। इस बारे में यह निवेदन है कि ऐसे सज्जन मेरे नाम पर भी अपनी शंकाओं के साथ जवाबी लिफाफा २५ पैसे टिकट वाला अवश्य भेजें। अन्यथा व्यक्तिगत उत्तर मैं नहीं भेज सकूँगा। उनको जनज्ञान में ही मेरा उत्तर पढ़ लेना चाहिये।

विनीत :
जगदेवसिंह सिद्धान्त शास्त्री
सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज देहली, पि० ११०००६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज के तपस्वी विद्वान्, वेदों के भाष्यकार विद्यामार्तण्ड श्री पं० धर्मदेवजी की महत्वपूर्ण सम्मति

डॉ बिमला की सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित "दयानन्द और सायण भाष्यों की तुलना" नामक पुस्तक में अनेक स्थल आक्षेप योग्य हैं। मैंने बम्बई में सभा मंत्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी का ध्यान भी इस ओर आकृष्ट किया था।···मैंने त्यागीजी को स्पष्ट कहा था कि इस पुस्तक में वस्तुतः अनेक भाग अत्यन्त भ्रमपूर्ण एवं आक्षेप योग्य हैं। अतः आपको यह घोषणा कर देनी चाहिए कि ऐसे स्थलों का संशोधन करा दिया जाएगा।

उनकी अपनी भूमिका को मैंने अत्यन्त आपत्तिजनक बताया था।

जिसमें उन्होंने इसे सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रमाणित और अनुमोदित (बिना उसका संशोधन किए) लिखा था।

पंडित राकेशरानीजी की टिप्पणी और आचार्य जगदीश विद्यार्थी का लेख जनज्ञान में पठनीय और ध्यान देने योग्य है—

—धर्मदेव विद्यामार्तण्ड

१–२–७५

सार्वदेशिक सभा का यह लिखना स्पष्ट असत्य है कि उन्हें पहले कोई पत्र नहीं लिखा। उन्हें दो रजिस्टर्ड पत्र लिखे गए, जिन को उन्होंने भी बाद में स्वीकार किया।

भूल को स्वीकार करने के स्थान पर अपनी हठधर्मिता से सभा के अधिकारी सभा का गौरव घटा रहे हैं। आर्य जनता का कर्त्तव्य है कि वे सगठित हो सार्वदेशिक सभा को वाधित करे इस अक्षम्य भूल का सुधार करो अन्यथा आर्य जनता यह निर्णय करने पर वाध्य होगी कि ऋषि दयानन्द का अपमान करने वाले व्यक्तियों के अधिकारी रहते उन्हे कोई सहयोग दिया जाए—

—भारतेन्द्रनाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सायण तथा दयानन्द

के
वेद भाष्यों का तुलनात्मक अध्ययन
"पर्यालोचन"

॥

लेखक

[डॉ० शिवपूजनसिंह कुशवाह एम० ए०, साहित्यालंकार, विशारद कानपुर]

सुश्री डा० विमला का "सायण तथा दयानन्द के वेदभाष्यों का तुलनात्मक अध्ययन" का शोध प्रबन्ध श्री ओमप्रकाश त्यागी सभामंत्री श्रीमती सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली द्वारा सन् १९७४ ई० में प्रकाशित हुआ है। इस शोध प्रबन्ध पर लेखिका को पटना विश्व-विद्यालय, पटना द्वारा पीएच० डी० की उपाधि प्राप्त हुई है। यह ग्रन्थ भारत मुद्रणालय, नवीन शाहदरा, दिल्ली–११००३२ में मुद्रित हुआ है। इस ग्रन्थ के प्रकाशन में सारा व्यय श्री प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास (कच्छ केसल, वी० पी० रोड) वम्बई का हुआ है।

आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् पं० वैद्यनाथ जी शास्त्री ने इस शोध प्रबन्ध का मार्ग-दर्शन किया था, परन्तु पुस्तक प्रकाशित होने के पूर्व वे सभा से पृथक् कर दिये गये। सम्भवतः उन्होंने ग्रन्थ की पांडुलिपि व प्रूफ न देखें हों जिससे इसमें कुछ सैद्धान्तिक भूलें हो गई हैं। इस समय शायद सभा में कोई वैदिक विद्वान् नहीं है, सब लाला, बाबू लोग हैं जिनको सिद्धान्त व वेदों का ज्ञान नहीं है।

अब इस ग्रन्थ की भयंकर भूलों की ओर विज्ञ पाठकों का ध्यान आकर्षित किया जाता है। जब हमारी शिरोमणि सभा ही ऐसी भयंकर भूल कर सकती है तो अन्य वैदिक विद्वान् भी स्वच्छन्द होकर वैदिक सिद्धान्त पर कुठाराघात कर सकते हैं। मुझे सभा के किसी भी व्यक्ति से व्यक्तिगत ईर्ष्या, द्वेष नहीं है, पर महर्षि दयानन्द जी पर आक्षेप होते देखना असम्भव है। अतः सभा के अधिकारी वर्ग मेरे लेख से कुछ अन्य तात्पर्य न निकाल लें, इसलिए इस सम्बन्ध में लिखना यह समुचित समझा।

'प्रकाशकीय' में सभामंत्री श्री त्यागी जी लिखते हैं—"सायण तथा दयानन्द

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के वेदभाष्यों का तुलनात्मक अध्ययन" नामक शोध ग्रन्थ (थिसिस) प्रस्तुत करते हुए बड़ी प्रसन्नता होती है।"

यदि त्यागी जी महाराज इस ग्रन्थ की पांडुलिपि स्वयं देख लेते तो उनको प्रसन्नता न होती। लेखिका को वैदिक सिद्धान्त का 'क-ख' ज्ञान है। लेखिका को इतना भी ज्ञान नहीं है कि महर्षि दयानन्द जी ने ऋग्वेद के किस मंडल, किस सूक्त व किस मंत्र तक भाष्य किया है (आगे प्रदर्शित करूँगा) उसका शोध ग्रन्थ देखकर वैदिक विद्वानों को अप्रसन्नता व दुःख होगा।

पृष्ठ ९६—"दयानन्द का अर्थ ठीक है या नहीं, यह कहना कठिन है।"

पृष्ठ १३८—"मंत्रार्थ में सभी शब्दों का तात्पर्य स्पष्ट न होने के कारण मंत्र का वर्ण्य विषय बोधगम्य नहीं है।" (दयानन्द भाष्य १।११६।६)

समीक्षा—लेखिका को यदि मंत्रार्थ समझ में न आवे तो इसमें भाष्यकर्ता का क्या दोष है ?

महर्षि दयानन्द जी का भाष्य देखिए—"(यम्) (अश्विना) जल पृथिव्याविवाशुसुखदातारौ (ददथुः) (श्वेतम्) प्रवृद्धम् (अश्वम्) अध्वव्यापिनमग्निम् (अघाश्वाय) हन्तुमयोग्याय शीघ्रं गमयित्रे (शश्वत्) निरन्तरम् (इत) एव (स्वस्ति) सुखम् (तत्) कर्म (वाम्) युवयोः (दात्रम्) दातुं योग्यम् (महि) महद्राज्यम् (कीर्त्तेन्यम्) कीर्त्तितुम् (भूत्) भवति (पैद्वः) सुखेन प्रापकः (वाजी) ज्ञानवान् (सदम्) सीदन्ति यस्मिन् याने तत् (इत्) एव (हव्यः) आदातुमर्हः (अर्यः) वणिग्जनः।"

भावार्थ—यौ सभासेनाध्यक्षौ वणिजः संरक्ष्य यानेषु स्थापयित्वा द्वीपद्वीपान्तरे प्रेषयेतां तौ श्रिया युक्तौ भूत्वा सततं सुखिनौ जायेते।"

यहां सभी शब्दों का तात्पर्य स्पष्ट है—

लेखिका को भौतिक अग्नि व विमानपरक अर्थ समझ में नहीं आया।

श्री सायण ने इस मंत्र का अर्थ इतिहासपरक किया है वह लेखिका को समझ में आ गया।

सायण की ही नकल प० रामगोविन्द त्रिवेदी वेदान्तशास्त्री ने की है।

पृष्ठ १३८ "(ऋ० १।११६।६ में) "पज्रियाय" पद सायण के मत में "अंगिरस कुल में उत्पन्न ऋषि" है, दयानन्द ने उक्त पद का अर्थ स्पष्ट नहीं किया है। "कारोतरौ" पद का अर्थ सायण ने "धर्मवेष्टित सुरा पात्र" लिखा है। दयानन्द का अर्थ स्पष्ट नहीं है।"

समीक्षा—'पज्रियाय' का सायण का अर्थ अनित्य इतिहासपरक अशुद्ध है। महर्षि दयानन्दजी "पज्रेषु पद्रेषु पदेषु भवाय। अत्र पदधातोरौणादिको रक् वर्णव्यत्ययेन दस्य जः। ततो भवार्थे घः।—पदों में प्रसिद्ध होने वाले।

'कारोतरात्' का अर्थ सायण ने 'सुरापात्र' किया है जिससे उसके मस्तिष्क में 'सुरा' की गन्ध हो।

महर्षि दयानन्द जी—"कारान् व्यवहारान् कुर्वतः शिल्पिन उ इति वितर्के तरति येन"—जिससे व्यवहारों को करते हुए शिल्पी लोग तर्क के साथ पार होते हैं उस।"

पौराणिक पं० श्रीराम आचार्य ने 'सुरा' का अर्थ जल किया है।

पृ० १३८ पर ऋ० १।११६।७ में पुनः लेखिका आक्षेप करती है—"महर्षि दयानन्द पूरे मन्त्र के अर्थ को स्पष्ट नहीं कर पाए हैं।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समीक्षा—महर्षि जी ने अपने भाष्य में पूरे मंत्र का अर्थ स्पष्ट कर दिया है फिर भी लेखिका की समझ में नहीं आता है। पूरे मंत्र का अर्थ, भावार्थ संस्कृत व आर्य भाषा दोनों में है।

'भावार्थ' को समझने का प्रयत्न करें—'जो शास्त्रवेत्ता अध्यापक, विद्वान् जिस शान्तिपूर्वक इन्द्रियों को विषयों से रोकने आदि गुणों से युक्त सज्जन विद्यार्थी के लिए शिल्प कार्य अर्थात् कारीगरी सिखाने को हाथ की चतुराईयुक्त बुद्धि उत्पन्न कराते अर्थात् सिखाते हैं वह प्रशंसायुक्त शिल्पी अर्थात् कारीगर होकर रथ आदि को बना सकता है। शिल्पीजन जिस यान अर्थात् उत्तम विमान आदि रथ में जलधर से जल सींच और नीचे आग जलाकर भाफों से उसे चलाते हैं उससे वे घोड़ों से जैसे वैसे बिजुली आदि पदार्थों से शीघ्र एक देश से दूसरे देश को जा सकते हैं।'

यान बनाने व चलाने की विद्या का निर्देश है। इससे और अधिक स्पष्टीकरण लेखिका क्या चाहती हैं?

पृष्ठ १३९ "(ऋ० १।११६।९) अन्य मंत्रों की भाँति इसका भी सायण ने ऐतिहासिक और दयानन्द ने भौतिक अर्थ किया है। दयानन्द का पदार्थ स्पष्ट नहीं है। केवल इतना ज्ञात होता है कि वे किसी प्रकार के विमान बनाने की चर्चा कर रहे हैं।"

समीक्षा—सायण का ऐतिहासिक अर्थ तो भ्रमपूर्ण है। आपको महर्षि जी का पदार्थ स्पष्ट ज्ञात नहीं होता है। आपको शायद समझ में नहीं आता है—देखिए (पदार्थ)=(परा) (अवतम्) रक्षतम् (नासत्या) अग्निवायू इव वर्तमानौ (अनुदेथाम्) प्रेरयेथाम् (उच्चाबुध्नम्) उच्चा ऊर्द्धं बुध्नमन्तरिक्षं यस्मिंस्तम् (चक्रथुः) कुरुतम् (जिह्मवारम्) जिह्मं कुटिलं वारो वरणं यस्य तम् (क्षरम) क्षरन्ति (आपः) वाष्परूपाणि जलानि (न) इव (पायनाय) पानाय (राये) धनाय (सहस्राय) असंख्याताय (तृष्यते) तृषिताय (गोतमस्य) अतिशयेन गौः स्तोता गोतमस्तस्य।"

भावार्थ—'हे (नासत्या) आग और पवन के समान वर्त्तमान सभापति और सेनाधिपति! तुम दोनों (जिह्मबारम्) जिसको टेढ़ी लगन और (उच्चाबुध्नम्) उससे जिसमें ऊँचा अन्तरिक्ष अर्थात् अवकाश उस रथ आदि को (अवतम्) रक्खो और अनेक कामों की सिद्धि (चक्रथुः) करो और उसको यथायोग्य व्यवहार में (परा, अनुदेथाम्) लगाओ जो (गोतमस्य) अतीव स्तुति करने वाले के रथ आदि पर (तृष्यते) प्यासे के लिए (पायनाय) पीने को (आपः) भाफरूप जल जैसे (क्षरन्) गिरते हैं (न) वैसे (सहस्राय) असंख्यात (राये) धन के लिए अर्थात् धन देने के लिए प्रसिद्ध होता है वैसे रथ आदि को बनाओ।"

लेखिका इससे बढ़कर क्या स्पष्टीकरण चाहती हैं?

पृष्ठ १४० (ऋ० १।११६।११) दयानन्द ने पहले के मंत्र की तरह इसमें भी गृहस्थ के नियमों का उल्लेख किया है। वैसे मंत्र का पदार्थ स्पष्ट न होने के कारण वर्ण्य विषय स्पष्ट समझ में नहीं आता।"

समीक्षा—इस मंत्र का अर्थ सायण ने अनित्य इतिहासपरक किया है जो भ्रमपूर्ण है। 'वन्दनाय' का अर्थ सायण 'वन्दन ऋषि करता है जो अशुद्ध है। सायण की ही प्रतिलिपि पं० रामगोविन्द त्रिवेदी व पं० श्रीराम आचार्य ने की है।

महर्षि जी का पदार्थ स्पष्ट है—(तत्) (वाम्) युवयोः (नरा) धर्मनेतारौ (शंस्यम्) स्तुत्यं संसिद्धिकरम् (राध्यम्) राद्धुं संसाद्धुं योग्यम् (च) धर्मादिफलम् (अभिष्टिमत्) अभीष्टानी प्रशस्तानि सुखानि विद्यन्ते यस्मिंस्तत् (नासत्या) सर्वदा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्यपालको (वरूथम्) वरणीयमुत्तमम् (यत्) (विद्वांसा) सकलविद्यावेत्तारौ (निधिमिव) (अपगूढम्) अपगतं संवरणमाच्छादनं यस्मात्तत् (उत्) (दर्शतात्) सुन्दराद्रूपात् (ऊपथुः) वपेथाम् (वन्दनाय) अभितः सत्काराहर्यापत्याय प्रशंसायै च।"

भावार्थ--इस मंत्र में उपमालंकार है। हे मनुष्यो! विद्यानिधि के परे सुख देने वाला धन कोई भी तुम मत जानो। न इस कर्म के विना चाहे हुए संतान और सुख मिल सकते हैं और न सत्यासत्य के विचार से निर्णीत ज्ञान के विना विद्या की वृद्धि होती है यह जानो।"

शायद लेखिका को 'उपमालंकार' समझ में नहीं आया है।

पृष्ठ १८४--"सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द ने ऐतिहासिक प्रणाली के स्थान पर मानवोपयोगी व्यावहारिक अर्थ किया। इस व्यावहारिक भाष्य में कितनी त्रुटियाँ हैं एवं किस अंश तक संगत है, यह कहना कठिन है।"

समीक्षा—महर्षि दयानन्द जी के भाष्य में त्रुटियाँ बतलाना अपनी मूर्खता प्रकट करना है। आज बड़े-बड़े पाश्चात्य विद्वान् महर्षि जी के भाष्य का लोहा मानने लगे हैं।

प्रो० मैक्समूलर अपने "Biographical Essays" में लिखते हैं "If any historical or geographical names occur in the Vedas, all are explained away because if taken in their natural sense, they would impart to the Vedas historical or tempered talent. To Swami Dayanand, everything contained in the Vedas was not only perfect truth, but he went one step further and by their interpretation, succeeded in persuading others that everything worth knowing even the most recent inventions of modern science were alluded to in the Vedas. Steam-engine, electricity, telegraphy and wireless monogram were shown to have been known at least in the germs to the poets of the Vedas."

अर्थात्--"स्वामी दयानन्द ने वेदों में आए हुए ऐतिहासिक तथा भौगोलिक भावों की व्याख्या (यौगिक पद्धति से) की है—क्योंकि वेदों में कोई ऐतिहासिक विवरण नहीं है। दयानन्द जी की दृष्टि में जो कुछ भी वेदों में है वह न केवल पूर्ण सत्य है अपितु उससे एक पग आगे बढ़कर ऋषि कहते हैं कि वेदों में ज्ञान के योग्य प्रत्येक वस्तु का वर्णन है। यहाँ तक कि अति नवीन आधुनिक आविष्कारों का भी (जैसे कि स्टीम एञ्जिन, बिजली, बेतार का तार आदि) प्रतिपादन वेदों में किया गया है; और कम से कम मूल बीज रूप में तो अवश्य ही उक्त वस्तुओं का वर्णन वेदों में है।"

पृष्ठ १९४-१९५—

"अग्निरत्रिं भरद्वाजं गविष्ठिरं प्रावन्नः कण्वं त्रसदस्युमाहवे।···

—(ऋ० १।१५०।५)

···दयानन्द ने उक्त मंत्र का अर्थ नहीं किया है।"

समीक्षा--पुस्तक के पृष्ठ १९४ पर ऋग्वेद का उपर्युक्त मंत्र मुद्रित है और ३ संख्या देकर पता ऋ० १।१५०।५ दिया हुआ है। यह प्रूफ संशोधन की भूल है। ऐसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ का प्रूफ संशोधन सावधानी से होना अनिवार्य था पर किसी ने ध्यान नहीं दिया और न पुस्तक में 'शुद्धिपत्र' ही दिया गया है।

वास्तव में उपर्युक्त मंत्र ऋग्वेद मण्डल १० सूक्त १५० मंत्र ५ है।

पृष्ठ २२४ से २३७ तक में लेखिका ने एक विचित्र बात लिखी है। उसने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋग्वेद मण्डल ७ सूक्त ६२ मंत्र १ से ६ तक (पृष्ठ २२४ से २२७ तक), मण्डल ७ सूक्त ६६ मंत्र १ से ८ तक (पृष्ठ २२८ से २३१ तक); मण्डल ७ सूक्त ६७ मंत्र १ से १० तक (पृष्ठ २३२ से २३७ तक) में महर्षि दयानन्द जी तथा सायण के वेद भाष्य की तुलना की है।

सभी विद्वान् जानते हैं कि महर्षि दयानन्दजी ने ऋग्वेद मण्डल ७ सूक्त ६१ मंत्र २ तक ही भाष्य किया है।

वैदिक गवेषक पं० भगवद्दतजी बी० ए० भी इसका समर्थन करते हुए लिखते हैं—"स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ऋ० ७।६१।२ ॥ तक यह भाष्य किया है।"[1]

इसके आगे श्रीमती परोपकारिणी सभा श्रद्धेय स्वामी ब्रह्ममुनिजी परिव्राजक 'विद्यामार्तण्ड' (पूर्व पं० प्रियरत्नजी आर्य) से संस्कृत व आर्य भाषा में भाष्य करवा रही है जिसका ऋ० मंत्र ७ सू० ६१ मंत्र ३ से सूक्त ६८ तक का भाष्य सन् १९७२ ई० में सभा द्वारा प्रकाशित है।

इसी प्रकार श्रीमती आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली ने भी "ऋग्वेद मण्डल ७ सूत्र ६१ से सूक्त ७० तक के सभी मंत्रों का केवल आर्य भाषा में भाष्य विद्वान् समिति द्वारा करवाकर प्रकाशित किया है। उसमें ऋ० मं० ७ सूक्त ६६ के १ से ५ मंत्र तक का अर्थ नहीं है। यह २१ अप्रैल '७४ को 'आर्य जगत्' साप्ताहिक पत्र के विशेषाङ्क के रूप में प्रकाशित है।

अतः लेखिका को दिवास्वप्न हुआ था कि महर्षि दयानन्दजी ने ऋ० मण्डल ७ सूक्त ६२, ६६ ६७ पर भाष्य किया है। सार्वदेशिक सभा के कर्णधारों ने इस भयंकर भूल को नहीं देखा ? पटना विश्वविद्यालय ने किसी वैदिक विद्वान् परीक्षक के पास यह शोध प्रबन्ध नहीं भेजा होगा अन्यथा ऐसी भयंकर भूल न होती।

पृष्ठ २६०—"दयानन्द की भाष्यकारिता में सायण भाष्य सबसे अधिक सहायक था।"

समीक्षा—लेखिका ने यहाँ भी भयंकर भूल की है। महर्षि दयानन्दजी ने तो ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ; वेदभाष्य में यत्रतत्र सायण, महीधर, उव्वट के भाष्यों की आलोचना भी की है। महर्षिजी ने सायण भाष्य से कोई सहायता नहीं ली है, क्योंकि सायण के भाष्य में अनित्य इतिहास, पौराणिक गाथा तथा अश्लीलता की भरमार है फिर वे किस प्रकार सहायता लेते ? हाँ, उन्होंने शतपथ ब्राह्मण, निरुक्त, निघण्टु व अष्टाध्यायी, महाभाष्य का सहारा अवश्य लिया है। वे स्वयं महर्षि थे उनको सायण भाष्य से सहायता लेने की क्या आवश्यकता थी ? जिस मंत्र का अर्थ समझ में नहीं आता था तो वे समाधिस्थ होकर समझ लेते थे।

पृष्ठ २६०—"मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि दयानन्द के भाष्य में भौतिक और वैज्ञानिक अर्थ स्पष्ट नहीं हो पाए हैं। वे यत्र-तत्र विमान, रथ आदि निर्माण-योग्य यन्त्रों एवं सूर्य चन्द्र आदि प्राकृतिक तत्त्वों का संकेत मात्र करते हैं। जबकि उन्हें इन विषयों की विशद् व्याख्या करनी चाहिए थी। संभवतः इस न्यूनता का कारण दयानन्द का भौतिक और वैज्ञानिक ज्ञान का अभाव या उपेक्षा ही होगा। वे वैज्ञानिक न थे। इसलिए भी वे अपने भाष्य में भौतिक और वैज्ञानिक अर्थ की विशद् व्याख्या नहीं कर सके।"

---

१. "वैदिक वाङ्मय का इतिहास भाग १ खण्ड २ पृष्ठ ७६ [सन् १९३१ ई० प्रथम संस्करण, लाहौर]।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पृष्ठ २६०-२६१ (सायण की प्रशंसा करते हुए) सायण के भाष्य में भौतिक और वैज्ञानिक अर्थों की न्यूनता प्रतीत होती है, किन्तु इस अभाव के लिए सायणाचार्य को दोषी नहीं ठहराया जा सकता है। सायण का युग वैज्ञानिक युग न था, न ही उनके समय में वैज्ञानिक भाष्य की मांग थी। सायण के समय में जिस प्रकार के भाष्य की आवश्यकता थी, उन्होंने ठीक वैसा ही भाष्य किया।"

पृष्ठ २६१ (महर्षि दयानन्दजी के भाष्य की त्रुटि प्रदर्शित करते हुए)—......उन्होंने वेद भाष्य करने की एक उचित प्रणाली का अन्वेषण मात्र किया है। उनके भाष्य में मंत्रों के सभी तथ्यों का पूर्णतः प्रकाशन हुआ हो, यह नहीं कहा जा सकता।"...

समीक्षा—लेखिका ने यहाँ भी पक्षपात का सहारा लिया है। महर्षि दयानन्द जी स्वयं योगी, महर्षि थे अतः उनके भाष्य में त्रुटि नहीं हो सकती है। वे आधुनिक विश्वविद्यालयों के बी० एससी०, 'एम० एससी०' उपाधिधारी न होते हुए भी विज्ञानवेत्ता थे। यदि वे वैज्ञानिक न होते तो मंत्रों के विज्ञानपरक अर्थ कैसे करते? क्या आजकल के किसी भौतिक वैज्ञानिक एम०एससी० उपाधिधारी में वेदों के विज्ञानपूर्ण अर्थ करने की क्षमता है? नहीं। यदि सायणाचार्य ने विज्ञानपरक अर्थ नहीं किया तो यह उसकी भूल थी पर लेखिका भूल मानने को उद्यत नहीं है। लेखिका भले न माने पौराणिक व पाश्चात्य विद्वान् सायण की भूल मानते हैं। देखिए—

सन् १८७० ई० मास मार्च में "क्रिश्चियन इण्टैलीजेंन्सर" में प्रो० रुडल्फ हार्नले ने स्वामी दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में एक लेख लिखा था। उसके कतिपय वाक्य नीचे लिखे जाते हैं—

"He is well versed in the Vedas, excepting the fourth or Atharva Veda, which he had read only in fragments, and which he saw for the first time in full when I lent him my own complete MS. copy...he is an independent student of the Vedas, and free from the trammels of traditional interpretation. The standard Commentary of the famous Sayanacharya is held of little account by him."[1]

अर्थात्—"(दयानन्द सरस्वती का) उनका अथर्ववेद को छोड़कर शेष वेदों में अच्छा अभ्यास है। उन्होंने अथर्ववेद के कुछ भागों का ही अध्ययन किया था। सम्पूर्ण अथर्ववेद उन्होंने प्रथम वार तभी देखा जब मैंने अपनी पाण्डुलिपि उनको दी। वे वेदों का स्वतन्त्र रूप से अध्ययन करते हैं और परम्परागत पद्धति की परवा नहीं करते। प्रसिद्ध सायणाचार्य का भाष्य उनकी दृष्टि में किसी काम का नहीं है।"

योगी अरविन्द घोष लिखते हैं—"सायणभाष्य को ठीक समझने वाले लोग दयानन्द सरस्वती के भाष्य के विषय में नहीं कह सकते। महाविद्वान् सायण का ऊपर से महत्व वाला दिखाई देता हुआ भी वेद का यथार्थ और सीधा अर्थ नहीं है।"...[2]

पौराणिक साहित्याचार्य पं० कालीचरण झा 'चतुर्वेदोपाध्याय जिला स्कूल पूर्णिया अपने "वेद और विज्ञान" शीर्षक लेख[3] में लिखते हैं—"वेद का एक भी

१. "वैदिक वाङ्मय का इतिहास" भाग १ खण्ड २, पृष्ठ ७४।
२. वही, पृष्ठ ८०, तुलना करो "वैदिक मैगजीन" पत्रिका सन् १९१६ ई०
३. मासिक पत्रिका "गङ्गा" का "वेदाङ्क" प्रवाह २, जनवरी सन् १९३२ ई० तरङ्ग १, पृष्ठ २१३।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पूर्ण वैज्ञानिक भाष्य न रहा ! उस समय सायण सरीखे प्रकाण्ड विद्वान् ने सर्वसाधारण में प्रचलित यज्ञ प्रथा के कारण व्याकरण के बल से याज्ञिक अर्थ करके किसी तरह लोगों को वेदार्थ समझाने और वेदोद्धार तथा वेद-प्रचार का प्रबल प्रयत्न किया। वैदिक विज्ञान-सम्बन्धी विशद व्याख्यान न करते हुए भी उनका यह प्रयत्न स्तुत्य है, जिसके कारण थोड़ा बहुत भी वेदार्थ ज्ञान हो रहा है। यहाँ यह कहना अनुचित न होगा "कि सायणाचार्य के याज्ञिक अर्थ से वैदिक विज्ञान पर उतना पर्दा नहीं पड़ा ? जितना उव्वट, महीधर सरीखे वैयाकरण भाष्यकारों के भाष्यों से पड़ा। इन लोगों ने तो लौकिक व्याकरण के बल से वैदिक शब्दों को इतना तोड़ा मरोड़ा कि वैदिक विज्ञान "निहितं गुहायाम्" हो गया है।"

पं० सत्यव्रतजी सामश्रमी (कलकत्ता के संस्कृत कॉलेज के प्राध्यापक, पौराणिक बंगाली वेदों के विद्वान्) ने "त्रयीचतुष्टय" में सायणादि भाष्यकारों के सम्बन्ध लिखा है—

It is perfectly plain, therefore, that it is only one that has attained, a thorough knowledge of Agriculture, Commerce, Geology, Astronomy, Hydrostatics, Igneology, Botany, Zoology, Physiolgy, and the science of war, can alone be a fit interpreter of the Vedas and that, it is only a Commentary written by such an expositer that can alone give full satisfaction and remove all doubts."[1]

अर्थात्—"इसीलिए यह स्पष्ट है कि वही मनुष्य वेदों का योग्य भाष्यकार हो सकता है जिसे कि कृषिशास्त्र, व्यापार, भूगर्भशास्त्र, ज्योतिष, जल-स्थिति विद्या, अग्नि विद्या, वनस्पतिशास्त्र, जीवशास्त्र, शरीरशास्त्र तथा युद्ध विद्या आदि का पूर्ण ज्ञान हो। ऐसे व्यक्ति द्वारा लिखा गया भाष्य ही केवल पूर्ण सन्तोष दे सकता है और सब प्रकार के संशयों को मिटा सकता है।"

महर्षि दयानन्द जी इन विद्याओं से पूर्ण परिचित थे अतः उनका भाष्य समुचित है।

अब सायण भाष्य की त्रुटियाँ भी देखिए—

"मांस को लोहे की सींक में गूँथकर ये उसे भूनते थे या पानी में उबालते थे (६।१६२।११)। एक स्थान पर तो इन्द्र का भी कथन है कि, 'मेरे लिए बीस बैल मारना, जिन्हें खाकर मैं मोटा बनूंगा (१०।८६।१४)। हट्टे-कट्टे बैल चुनकर भोजन के लिए मारे जाते थे (१०।२७।२)। बैल का मांस खूब पकाया जाता था (१०।२८।३)।, एक-एक बार सौ-सौ भैंसे भी कटते थे (६।१७।११)। ये मांस से हवन भी करते थे। गौ और वृषभ की आहुति (६।१६।४७), वृषभ तथा मेष की आहुति (१०।६१।१४,१०।१६६।३) खूब प्रचलित थी। जगह-जगह गोहत्या-स्थान या कसाईखाना भी होता था (१०।८९।१४)। खड्ग द्वारा गौओं को टुकड़े २ कर देते थे (१०।७९।६)।..."[2]

"धेनुः कर्त्वा चर्मरहित गौः नित्यदोग्ध्री..." [ऋ० १।१६१।३] इसकी

---

१. मासिक पत्र "वैदिक विज्ञान" अजमेर, वर्ष १ दिसम्बर १९३२ ई० संख्या ३, पृष्ठ १३३।

२. मासिक पत्रिका "गङ्गा" का "वेदाङ्क" पृष्ठ २१८ में प्रकाशित साहित्याचार्य पं० महेन्द्र मिश्र "मग" का "ऋग्वेद की कुछ उल्लेखनीय बातें" शीर्षक लेख जो सायण भाष्य का सारांश है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्याख्या करते हुए सायण ने अश्व को काटकर अश्व बनाने, रथ को काटकर रथ बनाने, गौ को काटकर चर्म रहित गाय से दूध दुहने और उसे पुनः जीवित करने का उल्लेख किया है जो परियों की कहानियों के सदृश प्रतीत होता है।

महर्षि दयानन्दजी ने 'अश्व' का अर्थ "आशुगामी"; 'धेनु' का अर्थ 'वाणी' किया है। शिल्प क्रियाजन्य पदार्थ, विमान, यान आदि विज्ञानपरक अर्थ महर्षि दयानन्दजी ने किया है।

"यः संत्राहा विचर्षणिरिन्द्रं तं हूमहे वयम्। सहस्रमुष्क तुविनृम्ण सत्पते भवा समत्सु नो वृधे।"

—[ऋ० मण्डल ६ सूक्त ४६ मंत्र ३]

सायणाचार्य का भाष्य—"(यः) इन्द्र: (सत्राहा) महतां शत्रूणां हन्ता (विचर्षणिः) विशेषेण सर्वस्य द्रष्टा (तम्) इन्द्रं। (वयं)हूमहे। स्तुतिपदैराह्वयामः। उत्तरार्धः प्रत्यक्षकृतः। हे (सहस्रमुष्क) सहस्रशेफ। यां कां च स्त्रियं संभवन्निद्रो भोगलोलुप्तया स्वशरीरे पर्वणि पर्वणि शेफान् ससजेति कौषीतकीभिराम्नातम्। तदभिप्रायेण इदं सम्बोधनम्। हे (तुविनृम्ण) बहुधन (सत्पते) सतां पालयितरिन्द्र (समत्सु) संग्रामेषु (नः) अस्माकं (वृधे) वर्धनाय (भव)।"

भाषार्थ—"हम उस इन्द्र देवता को पुकारते हैं जो शत्रुओं का नाशक और सबका द्रष्टा है। यह है पहले भाग का अर्थ। दूसरे भाग में इन्द्र को साक्षात् सम्बोधन किया। हे सहस्रशेफ बहुत धनवाले। सत् पुरुषों के पालने वाले इन्द्र आप संग्रामों में हमारी समृद्धि कीजिए।"

ऐसा ही अनुवाद पं० रामगोविन्द त्रिवेदी ने भी किया है। यहाँ 'सहस्रमुष्क' शब्द है। साधारण लौकिक संस्कृत में 'मुष्क' 'पुरुष की प्रजनन इन्द्रिय' का नाम है। उसी को 'शेफ' भी कहते हैं।

श्री वामन शिवराम आप्टे अपने "संस्कृत हिन्दी कोष' में लिखते हैं—"मुष्कः [मुष्+कक्] १. अण्डकोष २. पोत····"[१]

पुनः शेपः शेपस् (नपुं०) शेफः, फम्, शेफस्—१. लिङ्ग, पुरुष की जननेन्द्रिय, २. अण्डकोष।"[2]

अतः सायण ने 'सहस्रमुष्क' का अर्थ 'सहस्रशेफ' किया, अर्थात् जिसके शरीर पर सहस्रों प्रजनन-इन्द्रिय हों। ऐसा अश्लील व भद्दा अर्थ सायण ने क्यों किया? इसलिए कि मस्तिष्क पर पौराणिक गाथा का प्रभाव था। वे लिखते हैं कि "कौषीतकी ब्राह्मण में लिखा है कि इन्द्र जिस किसी स्त्री को देखते उससे संभोग करना चाहते। अतः उनके शरीर पर सहस्रों प्रजनन इन्द्रियाँ हो गईं। यह सायण के दृष्टिकोण का दोष है। अब महर्षि दयानन्दजी का भाष्य देखिए—

"(यः) (सत्राहा) सत्यदिनानि (विचर्षणिः) विद्वान्मनुष्यः (इन्द्रम्) ऐश्वर्ययुक्तम् (तम्) (हूमहे) प्रशंसामः(वयम्) (सहस्रमुष्क) असंख्यवीर्य्य (तुविनृम्ण) बहुधन (सत्पते) सतां विदुषां पालकः (भवा) अत्रद्व्य चातस्तिङ इति दीर्घः। (समत्सु) सङ्ग्रामेषु (नः) अस्माकम् (वृधे) वर्धनाय।"

---

१. "संस्कृत-हिन्दीकोश" पृष्ठ ८०६ [सन् १६६६ ई० में मोतीलाल बनारसीदास, जवाहरनगर, दिल्ली-७ द्वारा प्रकाशित]

२. वही, पृष्ठ १०२६।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भाषार्थ—हे (सहस्रमुष्क) असख्य पराक्रमवाले (तुविनृम्ण) बहुत धनों से युक्त (सत्पते) विद्वानों के पालने वाले अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्त (यः) जो (विचर्षणिः) विद्वान् मनुष्य (सत्राहा) सत्य दिनों में (इन्द्रम्) अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्त को पुकारता है वैसे (तम्) उसकी (वयम्) हम लोग (हूमहे) प्रशंसा करते हैं और आप (समत्सु) संग्रामों में (नः) हम लोगों की (वृधे) वृद्धि के लिए (भवा) हूजिये।

महर्षि दयानन्दजी ने 'सहस्रमुष्क' शब्द का अर्थ 'असंख्यवीर्य' या महती शक्तिवाला किया है।

नमूने के रूप में थोड़ी सी त्रुटियाँ प्रदर्शित की गई हैं। लेख का कलेवर बढ़ जाने के भय से इसे यहीं समाप्त करना पड़ता है, अन्यथा एक पोथा बन जाता।

६ से १२ अप्रैल १९७५ तक

धूम-धाम से

आर्यसमाज शताब्दी मनाएँ

★

हर घर पर

ओ३म् पताका लहराएँ

सत्यार्थ प्रकाश : ऋषि जीवन

वेद भाष्य सर्वत्र फैलाएँ।

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली—५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—डा० एस० विजयानन्द भारती

प्राचीन भारतीय विमान

वैदिक युग में भी नागरिक तथा सैनिक विमान भारत में बनाये जाते थे, इस बात पर विश्वास करना कठिन है। विमान भारतीय सशस्त्र सेना के प्रमुख चार विभागों में से एक था। यह दुर्भाग्य है कि हम स्वयं ही विश्वास नहीं करते कि हम विज्ञान के इस विशिष्ट आश्चर्यजनक कार्य को करने में भी इतने सक्षम थे।

इस युग में विमानों के निर्माण करने का ज्ञान होने के सम्बन्ध में भी जानकारी प्राप्त है। ब्राह्मण ग्रन्थों में वैदिक अग्नि अथवा यज्ञ में सम्मिलित स्त्रियों की विमानों से तुलना उनकी गति एवं फूर्ति के कारण की गई है।

प्राचीन ग्रन्थों में उल्लेख

ऋग्वेद के प्रथम मंडल की ११६ वीं ऋचा में कहा है—'हे अश्विद्ध! जिस प्रकार मरा हुआ मनुष्य अपना सारा वैभव और गरिमा को इस पथ्वी पर छोड़ देता है, उसी प्रकार तुग्रा ने भुजथु को पानी में फेंक दिया। लेकिन तुम उसके उद्धार के लिए उत्तरदायी थे। तुम उसको वैमानिक सुरक्षा पेटिका द्वारा पुनः ले आये। वह वायुयान उड़ सका और पानी पर भी तैर सका।"

वैदिक युग के पश्चात् पुराणों में शांति तथा युद्ध के समय नियमित रूप से विमानों के प्रचलन के कई उदाहरण मिलते हैं। सम्राट रावण के पास भी उसका अपना पुष्पक विमान था।

यह ब्राह्मण सम्राट भारत में वायुमार्ग से ही आया था। जब उसने अयोध्या की क्षत्रिय रानी सीता के अपहरण करने का प्रयत्न किया, तब राम के मित्र जटायु ने रावण के विमान को नष्ट करने का प्रयत्न किया था। वाल्मीकि रामायण में इस पूरे प्रसंग को अभी भी पढ़ा जा सकता है।

रावण को उसी की भूमि पर पराजित करने के पश्चात् भगवान् रामचन्द्र ने रावण के साम्राज्य पर अधिकार कर लिया। परन्तु उन्होंने सम्पूर्ण राज्य रावण के भाई को सौंप दिया और वे अपनी राजधानी अयोध्या को पुष्पक विमान द्वारा लौट आये। रामायण महाकाव्य में वाल्मीकि ने उस विमान के मार्ग का विस्तार से वर्णन किया है।

गणित की चरम सीमा

वैदिक युग में वैदिक गणित अपनी चरमसीमा पर पहुंच गया था और हाल ही में हम उसके कुछ भागों का वर्णन करने में सफल हो सके हैं। संस्कृत श्लोक में जो सामान्य तौर पर भगवान राम और कृष्ण की स्तुति से सम्बन्धित दिखाई देता है जब उसका विश्लेषण किया जाता है तो उसका अर्थ होता है 'पाई' अर्थात् २२।७ से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३.२ स्थानीय दशमलव तक होता है। विदित है कि राम से तात्पर्य अयोध्या के दैवी राजा से है। क्या आप मुझ पर विश्वास करेंगे यदि मैं आपसे कहूँ कि राम से तात्पर्य न ईश्वर से है, न सम्राट से वरन् उसका अर्थ है अंक तीन।

जब मुझे इस चमत्कार को राकेट वैज्ञानिक विभाग के उच्चपदाधिकारी को बताने का मौका मिला तो वे उसकी सटीकता, शीघ्रता, सादगी, कूटार्थ को देखकर अभिभूत रह गये। उन्होंने स्वीकार किया कि निस्संदेह उस समय सर्वश्रेष्ठ प्रगतिशील सभ्यता अस्तित्व में थी परन्तु दुर्भाग्य से उसे अनियन्त्रित नैसर्गिक प्रकोप का भाजन बनना पड़ा होगा। परन्तु इस महान विज्ञान को सुरक्षित रखने का श्रेय वास्तव में ब्राह्मणों को देना चाहिये। जिन्होंने इस अंशानुक्रम से बिना किसी परिवर्तन के इसे जीवित रखने हेतु कठिन परिश्रम किया।

यह प्रमाणित ही है कि विज्ञान किसी एक विभाग में ही उन्नत नहीं होता है, उसका तो सर्वाङ्गीण विकास में विश्वास है।

सर्वांगीण विकास

केवल शस्त्र विज्ञान में ही विकास नहीं हुआ है, अपितु गणित में भी और विशेष रूप से गोलीय त्रिकोणमिति—में भी विकास हुआ है। राजाभोज ने अपने लिखित ग्रन्थ 'समरांगण सूत्रधार' में विमानों की महत्ता पर विशेष बल दिया है। इस ग्रन्थ में विमानों के कई प्रकार वर्णित हैं तथा उनके संचालन एवं कार्यप्रणाली का वर्णन भी किया है। इस ग्रंथ में कहा गया है कि अकेला विमान चालक एक ही समय में कई मशीनों को नियन्त्रित कर सकता है और कई मनुष्य एक ही जटिलतम मशीन को नियन्त्रित करने में सक्षम होते हैं।

आगे उसी ग्रन्थ में लिखा है कि मशीन के कार्य क्या हैं? वे कई प्रकार के हैं। यद्यपि उसका मुख्य कार्य पदार्थ के तत्वों में परिवर्तन लाना होता है। यन्त्रों में परिवर्तन लाना होता है। यन्त्रों की उचित सहायता से कोई भी वस्तु बनाना संभव है। पृथ्वी पर रहने वाले लोग सरलता से आकाश में ले जाये जा सकते हैं और बाद में उन्हें पृथ्वी पर उतारा भी जा सकता है। जो भी कुछ दुष्कर और असम्भव दिखाई देता है, मशीनों की सहायता से उस तक पहुँचा जा सकता है।

ढाँचे का वर्णन

ग्रन्थ में कुछ शब्द हैं जो विमान की पेचीदगियों से सम्बन्धित है। उसमें लिखा है कि विमान के लिए हलके किस्म की लकड़ी का चयन किया जाय। उसके ढाँचे को इस प्रकार से बनाया जाय कि वह पेंचीदगीपूर्ण नहीं दिखे। उसका इन्जिन पारे से चलने वाला होना चाहिए। अग्नियन्त्र को मुख्य इन्जिन के नीचे होना चाहिये ताकि इन्जिन को गरम किया जा सके। एक बार चालक-चक्र तेजी से कार्य करना प्रारम्भ कर दे तो पार्द्रस की शक्ति आगे का कार्य अपने आप कर लेगी। वह विमान को तैरने तथा गतिमान होने देगी।

आगे वर्णन किया गया है कि हल्का काष्ठ एक विमान निर्माण में सहायक हो सकता है। इसका आकार और प्रकार एक मंदिर के समान होना चाहिए। उसमें पार्द्रस से अतिरिक्त कुम्भ होना चाहिए। एक बार पार्द्रस ठीक ढंग से गरम हो जाय तो विमान तेज आवाज करते हुए तीव्र गति से चलने लगेगा। लकड़ी और ढ़ले हुए स्पात के हिस्सों में निर्मित विमान आकाश में ऊपर तक जाता है और सिंह के समान गर्जना करता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निश्चित रूप से यह कहना कठिन है कि विमान-निर्माण-विज्ञान कब भारत में लुप्त हो गया। ऐसा लगता है कि कवि कालिदास के पास स्वयं का विमान था। मध्य प्रदेश से कन्याकुमारी तक हू-ब-हू वस्तुस्थिति का वर्णन उक्त तथ्य को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है। यह सत्य है कि भारतीय वैज्ञानिक अर्थात् ऋषि लोग विज्ञान में हर ओर प्रगति कर सकते थे। 'समरांगण सूत्रधार' के लेखक ने लिखा है कि इस स्थान पर विमानों के विषय में हर बात को विस्तार से बताना बहुत खतरनाक है। कारण एक बार विज्ञान शत्रु के खेमे तक पहुँच जाय तो वह हमारे अस्तित्व के लिए हानिकारक होगा और सुदर्शन चक्र के समान हमीं पर प्रहार करेगा।

गुप्तता प्रमुख आधार

गुप्तता भारतीय विज्ञान का प्रमुख आधार है।

विज्ञान की समस्त शाखाओं में यह बात स्पष्ट दिखाई देती है जैसे वैद्यक, गणित और वैमानिक विद्या कौटिल्य के अर्थशास्त्र से भी सर्वसाधारण जनता को अनभिज्ञ ही रखा गया था क्योंकि इस बात का भय था कि यदि शत्रु के हाथों में एक बार इस प्रकार की वैज्ञानिक चमत्कृति चली जायेगी तो वह नष्ट कर दी जायेगी। महाभारत युद्ध में सेनानायकों द्वारा ले जाये जाने वाले विविध प्रकार के राकेटों के वर्णन से यह ज्ञात होता है कि उस समय मंत्र विमान द्वारा शीघ्र उड़ने वाले राकेटों का चालित अस्तित्व था।

हम वास्तव में भाग्यवान हैं कि हमारे प्राचीन ऋषि एवं वैज्ञानिक अपने ज्ञान को लिखना नहीं भूले। परन्तु यह हमारा दुर्भाग्य है कि तरुण पीढ़ी इस प्रकार के विज्ञानपूर्ण साहस के कारनामों में कोई अभिरुचि नहीं लेती है। हमें इस बात का स्मरण रखना चाहिये कि हमारी प्राचीन सभ्यता बिना इस प्रकार के सक्रिय सहयोग के जीवित नहीं रह सकती। पुराने ग्रन्थों एवं प्रकरणों में उल्लेखित ज्ञान के भंडार को सुरक्षित रखने का संपूर्ण प्रयास किया जाना अत्यावश्यक है।

यह सत्य है कि साम्राज्यवादी अंग्रेजों ने भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों को इस झूठे वितण्डवाद द्वारा कि अत्यधिक पिछड़े हुए लोग हैं, दबाने की चेष्टा की उन्हें विशाल साम्राज्यवाद पर शासन करना था और जब तक वे शासितों से अपने आपको विज्ञान में सर्वश्रेष्ठ प्रकट नहीं करते तो उनका शासन करना भी असंभव था। इसके अलावा उन्हें इग्लैण्ड की आंगल फर्मों को बढ़ावा देना था और तैयार माल का निर्यात करके अपने लिए एक अच्छा जीवन व्यतीत करना था।

जानबूझ कर पूरी कोशिशें की गई कि इस देश में वैज्ञानिक प्रतिभाएँ पैदा ही न हों। बड़ौदा के बुद्धिमान महाराजा श्री सयाजीराव गायकवाड़ तृतीय ने उनके स्थानीय इन्जीनियरिंग महाविद्यालय, कला भवन में एक वाष्प-चलित इन्जिन का निर्माण करवाया था। सौभाग्य से उन्हें अपने ही राजमहल प्रसाद क्षेत्र में तेल एवं प्राकृतिक गैस भी मिल गई। अंग्रेजों ने पूरे प्रयत्न किये जिससे विवश होकर उस महाराज ने इस प्रकार के वैज्ञानिक साहस के कार्यक्रमों में भाग लेना कम कर दिया। बम्बई के एक प्रसिद्ध दैनिक में यह प्रकाशित हुआ था कि १८९६ में एक पण्डित ने बम्बई की चौपाटी पर एक वैदिक विमान का प्रदर्शन किया था। यह विमान ऊपर आकाश में गया था। अंग्रेज शासकों ने इस आधार पर और विकास को निरुत्साहित किया कि लोकमान्य तिलक प्रदर्शन के समक्ष उपस्थित थे। यह विस्तृत रूप से बताने की आवश्यकता नहीं कि शासक लोग कैसे और क्यों भयभीत हो गए और सारा प्रदर्शन समाप्त कर दिया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विभिन्न राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं में एक झलक लेने से एक अनभिज्ञ व्यक्ति भी वास्तविक आवश्यकताएँ क्या हैं, यह समझ जायेगा। यही वह अनमोल अवसर है जबकि हम अपनी शक्तियों को गैर वैज्ञानिक मामलों में नष्ट करने से रोकें और अपने कार्य तक ही अपने को सीमित रखें। यदि चोटी पर सत्ता के लिए यही पागलपन की दौड़ जारी रहती है तो इस देश में विज्ञान के उज्ज्वल भविष्य की आशा करना व्यर्थ है। सच्चे विज्ञान के लिए अपने आपको अर्पित करने वाले ईमानदार, निष्ठावान तथा सच्चे वैज्ञानिक के लिए क्या राजनीतिज्ञ लोग थोड़ा समय निकाल पायेंगे ?

येनास्य पितरो याताः येन याताः पितामहः।
तेन यायात् सतां मार्गं, तेन गच्छन्न रिष्यति ॥

मनु० ४, १७८

मनुष्य को चाहिए कि उसके पिता, पितामह आदि पूर्वज जिस उत्तम आचार-व्यवहार को चला रहे हैं, उसको वह भी चालू रखता हुआ सन्तों (सत्पुरुषों) के मार्ग पर चलता चला जाए। कुल मर्यादा की रक्षा करने वाला और सन्तों के मार्ग का नित्य अनुसरण करने वाला साधक कष्ट नहीं पाता !

सार्वदेशिक सभा ने
स्वामी दयानन्द का
घोर अपमान
किया है—

क्या आर्य जनता
इसे सहन करेगी ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मारीशस में हिन्दी

—श्री दयानन्द वसन्तराय
(क्रीड़ा मन्त्री, मारीशस)

प्रस्तुत लेख मारीशस के क्रीड़ा मन्त्री श्री दयानन्द वसन्तराय द्वारा नागपुर में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन में प्रस्तुत विचारों पर आधारित है। इस लेख में मारीशस द्वीप में हिन्दी की स्थिति, उसके प्रचार और प्रसार में विभिन्न संस्थाओं द्वारा किए गए महान योगदान की सविस्तार चर्चा की गई है। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि हिन्दी उस देश में हिन्दू धर्म, संस्कृति तथा परम्पराओं की रक्षा में किस प्रकार से सहयोगी सिद्ध हुई है।

मारीशस की राजभाषा अंग्रेजी है पर वहां फ्रेंच का विशेष प्रभाव है। लिखित रूप में फ्रेंच की अपभ्रंश क्रियोली का प्रभाव है तथा यह स्पष्ट है कि मारीशस की अधिकतर जनता जो भारतवंशी तथा भोजपुरी भाषा-भाषी है, वह भी इस प्रभाव से आक्रान्त है।

इतना होते हुए भी मारीशस में हिन्दी के प्रति उत्साह है। हिन्दी हमारी संस्कृति और धर्म की भाषा है। हिन्दी हमारे उन्मुक्त चिन्तन की भाषा है कि जिसके द्वारा हम विश्व के एक बहुत बड़े जनसमुदाय से जुड़े हैं। उससे हटना हमारे लिए सम्भव नहीं।

हमारे पूर्वजों ने गीतों, भजनों, कथा-वार्ताओं, चौपाइयों आदि के माध्यम से हिन्दी के स्वरूप की और संस्कृति के प्राण की रक्षा की है। अब तो हमारे यहां साहित्यानुरागी विद्वान् हैं। विभिन्न सस्थाएं हिन्दी में मौलिक रचनाओं को प्रोत्साहन दे रही हैं। फलस्वरूप हमारे यहां कविता, कहानी, उपन्यास, निबन्ध, एकांकी, व्यंग्य-हास्य आदि विधाओं में प्रयास किए जा रहे हैं। हमारे लेखकों को भारतीय पत्र-पत्रिकाओं में स्थान मिलता रहा है जो हमारे लिए गर्व का विषय है। हिन्दी के प्रति हमारी नीति सर्वथा एकारात्मक है। हम यह मानकर चलते हैं कि मारीशस में यदि हमें भारतीय धर्म और संस्कृति को बनाए रखना है तो हमें हिन्दी का आश्रय ग्रहण करना ही होगा। हम प्रत्येक परिस्थिति में उसे अपनाए रखेंगे। हम हिन्दी को संकुचित नहीं, विशाल बनाना चाहते हैं ताकि वह एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में दुनिया में प्रिय और मान्य हो सके।

हिन्दी की प्रगति

मारीशस में लगभग सभी प्राथमिक विद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। सभी अध्यापक शिक्षित हैं। उनके प्रशिक्षण की व्यवस्था है। समय-समय पर भारत से हिन्दी-विशेज्ञों को आमन्त्रित किया जाता है।

गत वर्ष से पांच सरकारी माध्यमिक स्कूलों में हिन्दी शिक्षण प्रारम्भ कर दिया गया है। उनमें स्नातक शिक्षकों की व्यवस्था है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस वर्ष १५ जनवरी को महात्मा गांधी संस्थान का उद्घाटन हुआ है। इसमें माध्यमिक कक्षाओं में हिन्दी के प्रशिक्षण की व्यवस्था है।

देश की बहुत सी गैर-सरकारी पाठशालाओं की माध्यमिक कक्षाओं में भी हिन्दी पढ़ाई जाती है तथा छात्रों की सीनियर कैम्ब्रिज को परीक्षा के लिए तैयार किया जाता है।

इसके अतिरिक्त अनेक संस्थाओं द्वारा सब गांवों में हिन्दी पाठशालाएं चलाई जा रही हैं जो हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, भारतवर्षीय आर्य विद्या परिषद, अजमेर, श्री गीता-रामायण परीक्षा समिति, गीता भवन, ऋषिकेश, भारतीय विद्या भवन, बम्बई तथा आर्य हिन्दू धर्म सेवा संघ, दिल्ली की परीक्षाओं की व्यवस्था करती है। इन सभी परीक्षाओं में भाग लेने वाले परीक्षार्थियों की संख्या सैकड़ों से बढ़कर हजारों तक पहुँच गई है। प्रतिवर्ष इन परीक्षाओं का प्रबन्ध क्रमशः हिन्दी प्रचारिणी सभा, आर्य रवि वेद प्रचारिणी सभा, आर्य सभा मारीशस, मारीशस सनातन धर्म टैम्पल्स फेडरेशन तथा श्री सनातन धर्मीय ब्राह्मण महासभा इत्यादि संस्थाएं करती हैं। वेद तथा गीता और रामायण की परीक्षाओं द्वारा भी हिन्दी शिक्षण को बल मिल रहा है। संस्कृत परीक्षाओं का संचालन भी हो रहा है।

इस वर्ष हिन्दू महासभा लन्दन की जनरल सर्टीफिकेट आफ एजुकेशन के लिए संस्कृत परीक्षा का चतुर्वर्षीय पाठ्यक्रम बनाने में संलग्न है।

इसके अतिरिक्त हमारे देश से भारतीय विश्वविद्यालय में बहुत से छात्र स्नातक स्तर की शिक्षा प्राप्त करने आते हैं। इनमें कुछ छात्र हिन्दी विषय भी लेते हैं। व्यक्तिगत रूप से बहुत से छात्र लन्दन की जनरल सर्टीफिकेट आफ एजुकेशन की साधारण और अग्रिम स्तर पर हिन्दी की परीक्षा देते हैं।

पत्र-पत्रिकाओं का भारी सहयोग

देश का रेडियो और दूरदर्शन केन्द्र भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार में भारी सहयोग दे रहा है, और अधिक सहयोग दे रहे हैं—भारत से आयातित हिन्दी चलचित्र, जिन्हें प्रायः सभी लोग बड़े चाव से देखते हैं। अहिन्दी भाषी भी न केवल हिन्दी चलचित्रों में रुचि रखते हैं अपितु उन्हें समझ भी सकते हैं और उनसे पूर्ण आनन्द उठाते हैं।

मारीशस में एक साप्ताहिक, एक पाक्षिक तथा अनेक त्रैमासिक हिन्दी पत्र निकलते हैं। हिन्दी दैनिक एक भी नहीं है। हम इस ओर प्रयत्नशील है। मारीशस के 'सेवा शिविर' ने रामायण वितरण और भजन-कीर्तन आदि द्वारा भी हिन्दी का पर्याप्त प्रचार किया है।

वे प्रेरणा स्रोत

ग्रामीण पाठशालाएं अपने ही बल पर खड़ी हैं। इन स्वावलम्बिनी संस्थाओं में हिन्दी के उन्नयन के लिए विभिन्न प्रकार के आयोजन होते रहते हैं।

इस प्रकार धार्मिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक कार्यों में हिन्दी का प्रयोग देख कर हमारे हृदय में उन हिन्दी के शिक्षकों के प्रति कृतज्ञतापूर्वक भक्ति की लहरें उमड़ पड़ती हैं, जिन्होंने १९२५ ई० में १२।। रुपए मासिक वेतन पर प्रतिदिन एक-एक घण्टा तीन पाठशालाओं में पहुंचकर हिन्दी पढ़ाने की सेवा को पुण्य समझकर स्वीकार किया था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सप्ताह में एक घण्टे से आरम्भ होकर आज सरकारी प्राथमिक शाला की हिन्दी शिक्षा सर्वत्र ऐच्छिक विषय के रूप में बराबर चल रही है। हिन्दी शिक्षकों की संख्या भी प्रति वर्ष बढ़ती ही जा रही है।

भारतीय उच्चायोग द्वारा संचालित सांस्कृतिक केन्द्र तथा पुस्तकालय विभिन्न गतिविधियों से हिन्दी की सेवा कर रहा है। परन्तु इस विषय में अभी और प्रयत्नों की आवश्यकता है।

हिन्दी नाटक प्रतियोगिता

देश के युवा एव क्रीड़ा मन्त्रालय की ओर से दो वर्षों से आयोजित हिन्दी नाटक प्रतियोगिता द्वारा भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार में पर्याप्त योगदान मिल रहा है। बीस वर्षों से केवल अंग्रेजी और फ्रेंच में नाटकों का आयोजन होता आ रहा था। इस वर्ष प्रतियोगिता हेतु ३२ एकांकियों का प्रदर्शन हुआ। हिन्दी नाटक की अन्तिम प्रतियोगिता के कार्यक्रम प्रत्यक्ष रूप से दूरदर्शन यन्त्र पर प्रदर्शित होते रहते हैं।

युवा एवं क्रीड़ा मन्त्रालय ने रामचरितमानस पर आधारित एकांकी नाटक-लेखन प्रतियोगिता हिन्दी, अंग्रेजी, फ्रेंच तथा उर्दू भाषाओं में आयोजित की थी। युवा लेखकों ने उनमें भाग लिया था और हिन्दी नाटक को प्रथम स्थान मिला।

रामचरित मानस चतुःशती घूमधाम से मारीशस में मनाई गई। हिन्दू महासभा की ओर से देशव्यापी रामायण गान प्रतियोगिता का आयोजन हुआ था।

सनातन धर्म मंदिर संघ के मन्दिरों और भवनों में भी हिन्दी की पाठशालाएं चलती हैं, जिनमें हिन्दी माध्यम से गीता, रामायण आदि उत्तम ग्रन्थों की परीक्षा के लिए शिक्षा दी जाती है। मारीशस के तीर्थ स्थान 'गंगा तालाब' के महाशिव रात्रि समारोह में भक्तिभाव से सम्मिलित होने वाले तीन लाख से अधिक तीर्थ-यात्रियों के लिए तीन दिन के कार्यक्रम हिन्दी माध्यम से संचालित-प्रसारित होते हैं।

इन संक्षिप्त विवरणों से मारीशस के हिन्दी प्रेम और भारतीय संस्कृति से इसके दृढ़ अनुराग को समझा जा सकता है।

सत्यार्थप्रकाश : बाँटिए

३२५) सैकड़ा : बढ़िया कागज

सुनहरा तिरंगा आवरण :

सजिल्द ४००) सैकड़ा

कपड़े की जिल्द ५००) सैकड़ा

दयानन्द-संस्थान नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—सत्य वर्मा

जब भारत का झण्डा सागर की तरंगों पर लहराता था

हमारे इतिहास का यह नितान्त ही दुखद तथ्य है कि हमारी राजनीतिक दासता और पाश्चात्य प्रभुत्व तथा अपनी ही विस्मरण प्रवृत्ति के वशीभूत हमने स्वदेश के अतीत को भुला दिया है। पश्चिमी लेखकों और विद्वानों ने विश्व पर यह व्यक्त करने का प्रयास किया है कि उन्होंने ही जहाजरानी के विज्ञान और कला का आविष्कार किया है। उन्होंने इस क्षेत्र में भी भारत के योगदान पर पर्दा डालने का प्रयास किया है। किन्तु हमारे पाठकों को भी शायद यह जानकर कम आश्चर्य नहीं होगा कि इतिहास के पृष्ठों में ऐसी साक्षियां उपलब्ध हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि भारत ही जहाजरानी के विज्ञान और कला का जनक है। एतद्-विषयक दिशाओं मे पाश्चात्य देशों ने जो उल्लेखनीय प्रगति की है, आज हम उन्हें ही इस क्षेत्र में अग्रगामी तथा ध्वजवाहक मानने लगे हैं।

आधुनिक इतिहास में एतद् विषयक तथ्य को उजागर करने के लिए बगभूमि के सुप्रसिद्ध इतिहासकार डा० राधामुकुद मुखर्जी द्वारा किए गए अनुसंधान ने काफी उजागर किया है। उनका कथन है कि "नौकानयन की कला का उद्भव ६ हजार वर्ष पूर्व सिन्धु सरिता से हुआ था। अंग्रेजी भाषा के शब्द नेवीगेशन की संरचना भी संस्कृत से ही हुई है।…" नेवीगेशन संस्कृत के जिन दो शब्दों से बना है वे हैं नव (नौका या जहाज) और गति (चाल)।

जर्मन विद्वान् बब्लर ने कहा—"प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में ऐसे वक्तव्य विद्यमान है कि जिन से हिन्द महासागर में प्राचीन काल में जलयानों के संचरण का प्रमाण प्राप्त होता है और यह भी विदित होता है कि हिन्दू व्यापारी व्यापार हेतु फारात की खाड़ी और उसकी सरिताओं की यात्रा किया करते थे।

प्रमुख भारतीय पुरातत्व डा० व० च० छावड़ा का कथन है "यह वस्तुतः अनहोनी बात ही होती है कि तीन ओर महासागरों से घिरा भारत, जिसके निवासियों में आविष्कार और उद्योग की उल्लेखनीय भावना विद्यमान रही नौकानयन के क्षेत्र में कोई प्रगति न करते, जबकि इस देश ने अन्य कला और विज्ञानों के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ की हैं। हाल ही में हुए अनुसन्धानों ने असंदिग्ध रूप से यह सिद्ध कर दिया है कि प्राचीन काल में भारत की नौकानयन प्रणाली किसी से भी कम स्तर की नहीं थी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अब हम ऐसे कतिपय अन्य पाश्चात्य लेखकों व विद्वानों के कथन को उद्धृत करेंगे, जिन्होंने इस शोध की प्रबल प्रतिष्ठापना की है। १८११ में ही 'लेख हिन्दूज' नामक एक फ्रांसिसी भाषा का ग्रन्थ प्रकाशित हुआ था। उसमें कहा गया है— "प्राचीन काल में जलयानों (जहाजों) के निर्माण में भारतीयों ने अपनी महान योग्यता का प्रदर्शन किया था और आज के हिन्दू भी इस दिशा में यूरोप को नमूने पेश कर सकते हैं कि अंग्रेजों ने नौकानयन शिल्प की दृष्टि से जो भी उपलब्धियां की हैं उनके लिए वे हिन्दुओं (आर्यों) के ऋणी हैं और उन्हीं के सूत्रों को ग्रहण कर वे जहाजरानी में सफल हो पाए हैं। भारतीय जलयान धैर्य और अनुकरणीय कर्मनिष्ठा के नमूने हैं जो उपयोगिता की दृष्टि से भी उल्लेखनीय हैं।"

सुप्रसिद्ध ब्रिटिश प्रशासक सर जॉन मालकम ने बाद में "जर्नल ऑफ रायल एशियाटिक सोसायटी" के प्रथम खण्ड में लिखा था कि "जिस उद्देश्य से भारतीय जहाजों का निर्माण हुआ था वे उनकी पूर्ति की दृष्टि से सर्वथा सक्षम रहे।···"

डा० राबर्ट हेने गैल्डर्न और जी० ई० इरवोम ने अपनी रचना "प्राचीन भारत की सभ्यताएं" में, जिसका प्रकाशन १९५१ में हुआ था, लिखा है कि "जिस आकार का जहाज फाहियान को भारत से चीन ले गया था, वैसा ही था, कि जैसे जहाज प्रशान्त महासागर को पार करके मैक्सिको और पेरू पहुँचे थे। कोलम्बस के जन्म से एक हजार वर्ष पूर्व भारतीय जहाज यूरोप में बने किसी भी जहाज की तुलना में अधिक श्रेष्ठ थे। गोल्डन के टोकियो भाषण में कहा गया था "भारत और दक्षिण पूर्वी एशिया के हजारों वर्ष ईस्वी पूर्व के जहाजों के बारे में हमें पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है। हमें चीनी सूत्रों से पता चलता है कि दक्षिणी एशिया में लगभग ५० मीटर अथवा १५० फुट तक लम्बे जलयान उपयोग में लाए जाते थे। जिनमें चार मस्तूल होते थे। इन जलयानों (जहाजों) में ६०० से ७०० तक यात्री और १००० टन तक माल ले जाया जा सकता था। ये जलयान सागर तट के साथ-साथ नहीं चलते थे अपितु हिन्द महासागर में इनका संचरण होता था। इसके अतिरिक्त ये जलयान कोलम्बस और मैगेलिन द्वारा उपयोग में लाए गए जहाजों से निश्चित रूप से ही केवल बड़े ही नहीं अपितु सागर की दृष्टि से अधिक उपयुक्त भी थे।

इतिहास का पुनः स्मरण

हम यहाँ इसी सिलसिले में पुराने इतिहासकारों का भी उल्लेख करेंगे। निकोलो कोन्टी ने लिखा है "भारत के निवासियों ने हमारे जहाजों से भी बड़े आकार के कुछ जलयान बनाये थे और उनमें पांच तक जाल और मस्तूल होते थे।···" सुप्रसिद्ध यूनानी भूगोलविद् तथा इतिहासकार स्ट्राबो ने भी इस विषय में पर्याप्त प्रकाश डाला है। एक अन्य लेखक ने १३० ई० पू० से ३०० ई० तक के मध्य में अमेरिका में भारतीयों की एक बस्ती थी। इनमें वे भारतीय भी थे जो जहाजों के ध्वस्त हो जाने के कारण वहां ठहरने पर बाध्य हुए थे। ये उन दो व्यापारी जहाज में सवार होकर गए थे जो कैस्पियन सागर में उठे तूफान से ध्वस्त हो गए थे। कैस्पियन सागर व्यापार का अनुसन्धान ही रोम और पार्थिया के मध्य व्यापारिक प्रतिद्वन्द्विता का कारण बना था जो आर्मीनिया को लेकर उदित हुई थी। आर्मीनिया में भारतीय व्यापारी जहाजों से भारी मात्रा में माल आता था। जूलियस सीजर ने ओसिला और टाइग्रर को गहरा करने की योजना बनाई थी और इसके साथ इस्थमस के आरपार एक नहर को काटने का भी निश्चय किया था जिससे कि भारतीय व्यापार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में मदद मिल सके। किन्तु अपनी योजना को पूर्ण कर पाने के पूर्व ही उसकी हत्या हो गई थी। उसका उत्तराधिकारी आगस्टस हुआ, जिसने विजय पाई थी और उसने मिस्र और भारत के मध्य सागरीय व्यापार को बढ़ाने और चलाने में सफलता प्राप्त की। होरेस, पिलनी और अन्य कई के उद्धरणों से इस बात पर प्रकाश पड़ता है। हम यहां श्री जे० एल० रीद का उद्धरण भी प्रस्तुत करेंगे जो हांगी गोदी के अधीक्षक तथा नौसैनिक आर्किटैक्ट तथा जहाज निर्माता संस्थान के एक सदस्य थे। उन्होंने कहा है कि "प्राचीन हिन्दू नक्षत्र विद्याविदों ने चुम्बक का इस्तेमाल किया था, जो आज भी आधुनिक कम्पास में इस्तेमाल होता है। इसका उपयोग उत्तरी और पूर्वी दिशा के निर्धारण हेतु किया था। इसके अतिरिक्त अन्य धार्मिक समारोहों में भी इसका उपयोग होता था। हिन्दू कम्पास एक लोह यन्त्र था जो तेल के एक बर्तन में तैरता और उत्तरी दिशा का निर्देश करता था। प्राचीन हिन्दू कम्पास को संस्कृत में "मैत्स्य यन्त्र" कहा जाता था।

इसके अतिरिक्त अनेक साहित्यिक और पुरातत्व साक्षियां भी विद्यमान हैं। जो उपरोक्त मान्यता की सम्पुष्टि करती हैं। मध्य जावा के बोरोबुदुर नामक नगर में स्थित विश्वविद्यालय बौद्ध स्तूपों का शिल्प और अजन्ता के प्राचीन भारतीय भित्तिचित्र आदि में भी प्राचीन भारत के नौकानयन पर प्रकाश पड़ता है। मोहन-जोदड़ों में हुआ उत्खनन भी इसकी अकाट्य साक्षी प्रस्तुत करता है। इसका सबसे ठोस प्रमाण गुजरात के अहमदावाद जिले में स्थित लोकल में मिली एक गोदी से प्राप्त हुआ है। इसके पूर्वी और पश्चिमी किनारे ७१० फुट लम्बे और उत्तरी १२४ फुट और दक्षिणी ११६ फुट था। इसके अतिरिक्त प्राचीन भारतीय सिक्के व शिला-लेख प्राचीन भारत में जहाजरानी की साक्षी देते हैं। ◆

नगरपालिका का अध्यक्ष

टंडनजी एक समय इलाहाबाद नगरपालिका के अध्यक्ष रहे। उस समय प्रदेश अथवा प्रान्त के राज्यपाल (गवर्नर) सर हारकोर्ट वटलर थे, जो बड़े आरामपसन्द थे। लोग उन्हें नवाब कहते थे। प्रयाग से वे राजधानी लखनऊ ले गये थे, पर प्रयाग में भी राजभवन (गवर्नमेंट हाउस) बना रहा, जहां वे आया करते थे। उस समय टंडनजी जान्सटनगंज में एक छोटे-से मकान में रहते थे। जमीन पर बैठकर चारों तरफ कागज फैलाकर वे काम करते थे। उन्हें टेबल-कुर्सी लगाये हुये मैंने कभी नहीं देखा।

उस समय प्रयाग में पानी की बहुत कमी हो गई थी। गवर्नमेंट हाउस में गवर्नर के स्नान करने के लिए एक बड़ा-सा कुण्ड था, जिसमें उस समय पानी नहीं रहा। गवर्नर के अंगरक्षक (ए० डी० सी) गण पिस्तौल, तलवार से सुसज्जित अध्यक्ष के पास दौड़े हुए आये। जिस कमरे में टंडनजी काम करते थे, वहाँ पहुंचने के लिए बाहर से एक संकरी सीढ़ी बनी हुई थी। इस पर अपने बूट फटफटाते हुए वे लोग ऊपर पहुंचे। जमीन पर ही उन्हे बैठना पड़ा। जब उन्होंने लाट साहब के स्नान के अर्थ राजभवन के कुण्ड के लिए पर्याप्त पानी की माँग पेश की, तो टंडनजी ने कहा कि जब मैं नगरवासियों को पीने को ही काफी पानी नहीं दे पा रहा हूं तो लाट साहब को नहाने के लिए कहां से दूं। —श्रीप्रकाश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समाजवाद के लक्षण : कितने सारपूर्ण कितने थोथे ?

★

वचनेश

आज का बहुर्चचित शब्द है समाजवाद ! जितने प्रवक्ता उतनी ही परिभाषाएं ! श्रमिक नेताओं की दृष्टि में कारखानों में हड़ताल कराना समाजवादी कार्यक्रम है तो ऐसे भी उदारमना सज्जन हैं कि जिनकी राय में किसी भूखे को भोजन कराना ही समाजवाद है। इस स्थिति के कारण समाजवाद के भी अनेक प्रकार हैं और अनेक ही किस्में। मार्क्सवादी समाजवाद से लेकर क्रान्तिकारी समाजवाद तक का उच्चारण होता है तो भारतीय समाजवाद से लेकर वैदिक समाजवाद तक का उद्घोष भी गूंजता है ! किन्तु एक सिद्धान्त के रूप में श्रमिक-आन्दोलन के विश्व-कोष खंड तृतीय के पृष्ठ १५४ पर इस प्रकार दी गई है—

समाजवाद कर्मचारी वर्ग का एक सिद्धान्त और आन्दोलन है, जिसका उद्देश्य है समाज पर सामूहिक नियन्त्रण की प्राप्ति और यह उद्देश्य वर्ग-संघर्ष से प्राप्त होता है। इसके लिए राज्य पर अधिकार करके औद्योगिक क्षेत्र में स्वायत्त-शासन की स्थापना करनी होगी।

इस प्रकार समाजवाद के मुख्यत: निम्नलिखित पांच स्तम्भ हैं—

(१) यह कर्मचारी वर्ग का एक आन्दोलन और सिद्धान्त है।
(२) इसका उद्देश्य है समाज पर सामूहिक नियन्त्रण।
(३) इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु वर्ग संघर्ष।
(४) राज्य सत्ता पर अधिकार।
(५) औद्योगिक क्षेत्र में स्वायत्त शासन की स्थापना।

पहला प्रश्न : कर्मचारी कौन ?

अब सर्वप्रथम प्रश्न उपस्थित होता है कि कर्मचारी कौन है ? समाजवादी विचारधारा के व्याख्याताओं के अनुसार कर्मचारी वह है कि जो परिश्रम करके किसी भी प्रकार से समाज की किसी मांग को पूर्ण करे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस परिभाषा के आधार पर अनेक प्रश्न उठने स्वाभाविक हैं। इसके अनुसार धर्मोपदेशक वर्ग कर्मचारी हैं भी या नहीं ? जो व्यक्ति ६० वर्ष तक लगातार काम करने के उपरान्त कार्य करना छोड़ देता है, वह कर्मचारी माना जाएगा अथवा नहीं ? क्या पचास पचपन वर्ष की आयु वाला ऐसा कोई पुरुष या महिला कर्मचारी कही जाएगी अथवा नहीं कही जाएगी कि जो शारीरिक अस्वस्थता के फलस्वरूप अपनी कर्मशक्ति खो बैठी है ?

यदि कोई वैज्ञानिक दस-पन्द्रह वर्ष तक अन्वेषण कार्य करने के उपरान्त थक जाने के उपरान्त अपने अन्वेषण में सफल अथवा असफल होने के उपरान्त यदि अपनी खोज का कार्य बन्द कर देता है तो वह फिर कर्मचारी समझा जाएगा अथवा नहीं ?

समाजवादियों द्वारा कर्मचारी की जो परिभाषा दी गई है उसके आधार पर विचार किया जाए तो फिर देश के बुद्धिजीवियों के एक बहुत बड़े वर्ग को भी कर्मचारी नहीं कहा जाएगा। उस स्थिति में समाज पर सामूहिक नियन्त्रण वाला कौन सा वर्ग हो सकता है, इसकी कल्पना करना कोई दुष्कर कार्य नहीं अर्थात् यह कल्पना बड़ी आसानी के साथ की जा सकती है !

वर्ग भेद का समाजवादी सिद्धान्त कितना उचित

समाजवाद के द्वारा प्रमुख आधार बताया गया है वर्ग संघर्ष। समाजवादी वर्गों का आधार 'अर्थ' को मानते हैं। उनकी दृष्टि में वर्ग का आधार संपत्ति ही है यह भी कहा जा सकता है। इसके अनुसार समाजवादियों के विचार से जनता के दो ही वर्ग हैं। एक है बुर्जुआ और दूसरा है सर्वहारा। जिसके पास ऐसी संपत्ति है कि जिससे उसे आय प्राप्त होती है, उसे बुर्जुआ या पूँजीपति का नाम दिया जाता है और उस वर्ग का सर्वहारा की संज्ञा दी जाती है। जिसके पास ऐसी कोई संपत्ति नहीं होती कि जो इसकी आय का आधार बन सके ऐसा वर्ग वह माना जाता है जिसमें शारीरिक श्रम करने वाले श्रमिक या कर्मचारी आते हैं।

समाजवाद सम्पत्तिवानों और सम्पत्ति-विहीनों में संघर्ष का सृजन कर सम्पूर्ण राज्य और उद्योग धंधों पर सम्पत्तिहीनों के नियन्त्रण का पक्षपाती है। क्योंकि वह उन्हीं की सत्ता का शासन पर भी जोर देता है।

ऐसी स्थिति में एक प्रश्न का किसी भी विचारशील व्यक्ति के मानस पटल पर उभरना स्वाभाविक है कि यदि एक कारखाने के समान वेतन प्राप्त करने वाले दो श्रमिकों में से एक जुआरी और शराबी हो और दूसरा सच्चरित्र एवम् अपनी आय के अनुसार व्यय करते हुए कुछ बचत करने वाला, तो जहाँ दुर्व्यसनी कर्जदार और दीनता की स्थिति में रहेगा वहाँ दूसरा श्रमिक थोड़ी-थोड़ी बचत के द्वारा सामान्य सम्पत्ति अर्जित करके उसे अपनी अतिरिक्त आय का साधन बना ले तो क्या उस श्रमिक को साम्यवादी अथवा समाजवादी चिंतन के आधार पर बुर्जुआ ही निरूपित किया जाएगा।

वस्तुस्थिति यह है कि समाज में वर्ग तो दो ही हैं किन्तु उनका श्रेणी विभाजन संपति के नहीं अपितु गुणों के आधार पर करना अधिक तर्क-संगत है और वह है सद्गुणी और दुराचार करने वाला। इन्हें ही हम आर्य और दस्यु की संज्ञा भी दे सकते है।

भगवद्गीता में इसी तथ्य को इस प्रकार वर्जित किया गया है—

द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एवं च ॥ (१६-६)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(संसार में दो प्रकार के प्राणी हैं। एक दैवी स्वभाव वाले तथा दूसरे आसुरी स्वभाव युक्त)।

इस प्रकार के विपरीत स्वभाव वाले व्यक्ति संपत्तिवान् और सम्पति विहीन दोनों में होते हैं। अतएव यदि संघर्ष होता भी है तो स्वभाव के आधार पर होता है, सम्पति के आधार पर नहीं। वस्तुत: प्रत्येक व्यक्ति को दैवी स्वभाव के अनुसार धर्मयुक्त साधनों से धन-सम्पत्ति के अर्जन की स्वीकृति प्राप्त होनी अभीष्ट है, और उसके धर्मानुसार उपभोग की भी।

सत्ता और समाज का नियन्त्रण

जहाँ तक राज्य सत्ता को हस्तगत कर उसके द्वारा समाज पर नियन्त्रण का सिद्धान्त है, यह भी तर्क की कसौटी पर समाज के विकास में सहायक नहीं सिद्ध होता क्योंकि समाजवादी राज्य द्वारा समाज पर अधिकार और सामूहिक अधिकार के पक्षधर हैं। अब यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उपस्थित होगा कि सामूहिक अधिकार के नियन्त्रण का सीमा निर्धारण कैसे होगा? उदाहरण के लिए इस सिद्धान्त के पक्षपातियों से यह पूछा जा सकता है कि जब समाज के संपूर्ण कार्यों पर नियन्त्रण की बात कही जाती है तो क्या उसमें यह अधिकार भी राज्य को प्राप्त होगा कि कोई व्यक्ति किसको पूजा करे, न भो करे अथवा क्या सन्तानोत्पत्ति की बात भी राज्य के नियन्त्रण में ही आएगी। यदि हाँ तो फिर ऐसा समाज बौद्धिक-दासता की शृंखलाओं में जकड़ा समाज होगा जिसमें व्यक्ति के स्वतन्त्र विचार, चिन्तन मनन और अपने विचारों की अभिव्यक्ति भी प्रतिबंधित होगी।

उद्योगों में स्वायत्त शासन

समाजवाद की एक और मान्यता है, उद्योग धधों में स्वायत्त शासन। सुनने में लुभावनी लगने वाली यह बात अनेकों प्रकार के अन्तर्विरोधों से युक्त है। क्या इस सिद्धान्त को मान्यता देने का तात्पर्य यह नहीं हो सकता है कि किसी कारखाने के चपरासी से लेकर इन्जीनियर तक सभी को समान रूप से यह अधिकार प्रदान कर दिया जाए कि वे निश्चय करें कि इस उद्योग में कितनी पूंजी लगनी है और इसके कार्य का कितना विस्तार किया जाना है अथवा कौन-कौनसी वस्तुएँ तैयार की जानी हैं?

वर्तमान व्यवस्था के अनुसार पूंजी लगाने वाला ही उद्योग के पूर्ण प्रबंध के लिए जिम्मेदार होता है। अब से कुछ सौ वर्ष पूर्व तो पूंजीपति सर्वथा स्वतन्त्र था। किन्तु यह भी सत्य है कि पूंजीपतियों में से अनेक ने अपनी आसुरी प्रवृत्ति के उदय के कारण मजदूर को उसके परिश्रम के अनुसार पूर्ण पारिश्रमिक न देते हुए उसका शोषण किया। इसके कारण मजदूर वर्ग को अनेक प्रकार से अन्याय और शोषण का भी सामना करना पड़ा। अतएव गत कुछ दशकों में पूंजीपतियों पर अनेक प्रकार के अंकुश भी लगे। परन्तु इस रोग का यह निदान ढूंढ़ना सर्वथा गलत है कि पूंजीपति का प्रबंध से अधिकार ही निःशेष कर दिया जाए। क्योंकि इस तथ्य को विस्मृत नहीं किया जाना चाहिए कि आज भी किसी उद्योग धन्धे के लिए पूंजी ही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। इस सत्य से भी नेत्र मूंदना गलत होगा कि जो व्यक्ति पूंजी लगाएगा वह स्वाभाविक रूप से ही उस उद्योग के लाभ में अधिक रुचि लेगा। जबकि मजदूर की कारखाने के उद्योग में रुचि सीमित ही होती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अतएव उद्योगों पर सामान्य प्रजातांत्रिक परिभाषा के अनुसार श्रमिकों का शासन एक असंगत दृष्टिकोण है। हाँ जिस भाँति राज्य संचालन में कार्यपालिका, विधायका और न्यायपालिका का अपना-अपना कार्य होता है, उसी भाँति उद्योग में तीन के स्थान पर पूंजी लगाने वाला एक और भी पक्ष हो और इन चारों का ही समन्वय हो। इसके अपने-अपने अधिकार और साथ ही कर्त्तव्य भी निर्धारित किए जाएं। यदि स्वायत्त शासन इस प्रकार की व्यवस्था को कहा जाए तो उसे एक युक्ति-युक्त दृष्टिकोण माना जा सकता है किन्तु समाजवादी पूंजी को भी इधर-उधर करने का अधिकार उद्योगों में स्वायत्त शासन के नाम पर श्रमिकों को देना चाहते हैं, यह असंगत दृष्टिकोण है—

समाजवादी मान्यताएँ : एक विश्लेषण

अतएव समाजवाद के उपरोक्त लक्षणों का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट है कि मनुष्यों का आर्थिक आधार पर वर्गीकरण एक अस्वाभाविक प्रक्रिया है। क्योंकि संपत्ति का संचय करने वाला धर्म और अधर्म दोनों का पल्ला पकड़कर ही संपत्ति या धन का संचय कर सकता है। अतएव वर्गीकरण स्वभाव के आधार पर हो सकता है, संपत्ति के आधार पर नहीं। यह देखना न्यायकर्त्ता का दायित्व है कि संपत्ति का अर्जन अधर्माचरण के द्वारा तो नहीं हुआ। संपत्ति संचय करना दोषयुक्त नहीं उसके संचय का उपाय गलत हो सकता है। अत: गलत उपायों की रोकथाम जहाँ आवश्यक है, वहाँ सम्पति रखने के अधिकार को ही छीन लेना सर्वथा असंगत है।

पूंजी द्वारा लाभ व समाजवादी तर्क

समाजवादी विचारधारा के मानने वालों की दृष्टि में सम्पत्ति का प्रयोग पूंजी के रूप में होना संभव है और पूंजी से लाभ मिलता है जो अन्यायपूर्ण है। किन्तु इस तर्क में कोई सार प्रतीत नहीं होता। इस सत्य और तथ्य को हम अस्वीकार नहीं करते कि पूंजी से लाभ प्राप्त होता है, किन्तु वह लाभ अन्यायपूर्ण है यह भी प्रत्येक स्थिति में अनुचित ही है, यह कहना असंगत है।

उदाहरण के लिए समाजवादियों से यह प्रश्न किया जा सकता है कि एक शिक्षक किसी विद्यालय में पढ़ाता है और साथ ही अतिरिक्त परिश्रम करके कतिपय पुस्तकें आदि लिखता है और उनके प्रकाशन से उसे अतिरिक्त आय की बचत होने लगती है और उससे वह कोई अतिरिक्त धंधा आरम्भ कर देता है और उसमें अपने पारिवारिक जनों को लगाकर उसे और बढ़ाता है। यह आय वृद्धि उसके संचित धन का पूंजी का रूप प्रदान कर देती है तो क्या इस पूंजी को अन्याययुक्त कहा जा सकता है? इस प्रकार पूंजी लगाकर आय बढ़ाना अन्याय नहीं और न ही अयुक्ति-संगत ही है।

अतएव समाजवादी सिद्धान्तों के विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है कि इसके सिद्धान्तों व लक्षणों में ऐसी अटपटी बातें हैं कि जो स्वयं में अयुक्ति-संगत और अधर्मयुक्त हैं। इसका सारा चिन्तन एकपक्षीय और एकांगी है। इसमें व्यक्ति के जीवन के विभिन्न पक्षों पर विचार न कर एकपक्षीय विचार ही किया गया है, जो एक सीमित सत्य पर आधारित है समग्र सत्य पर नहीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समाजवादी विचार और मानव प्रकृति

समाज का बुद्धिसंगत समष्टिपरक विचार अथवा समाजवाद प्रथम दृष्टि-निक्षेप में तो एक प्रबल आकर्षण उत्पन्न करता है। उसके पीछे एक बड़ा सत्य है कि प्रत्येक समाज उस स्थिति में एक सामूहिक सत्ता को प्रस्तुत करता है, जिसमें तथा जिसके द्वारा व्यक्ति जीता है और व्यक्ति जो कुछ दे सकता है वह सब कुछ समाज को देने के लिए उत्तरदायी है। इससे भी अधिक समाज के साथ एक प्रकार के सम्बन्ध के द्वारा ही, इस वृहत्तर सामूहिक सत्ता के साथ एक प्रकार के सामंजस्य द्वारा वह अपनी नाना विकसित या विकसनशील शक्तियों एवम् क्रियाओं की पूर्ण उपयोगिता प्राप्त कर सकता है। क्योंकि यह एक सामूहिक सत्ता है अतएव यह मान लिया जाएगा कि इसमें खोज करने योग्य एक सामूहिक तर्क एवम् इच्छा है जो सुसंगठित आत्माभिव्यक्ति और क्रियाशीलता के लिए एक सचेतन और प्रभावी साधन के प्रस्तुत किए जाने पर ही अपनी सही अभिव्यक्ति व सही क्रियाशीलता को पा सकेगी।

समानता और साथीपन के आधार पर सामाजिक जीवन के सही संगठन के लिए यह आवश्यक है कि हर व्यक्ति को समाज में उसका उचित स्थान मिले, सामान्य उद्देश्यों के लिए उसका पूरा प्रशिक्षण और विकास हो, कार्य, विश्राम और पुरस्कार में उसका उचित भाग हो व सामूहिक अस्तित्व समाज के सन्दर्भ में उसके जीवन को उचित मूल्य प्रदान किया जाए।

मानव प्रकृति की कसौटी पर

किन्तु स्थिति की दयनीयता यह है कि यह सारा उत्तम सिद्धान्त अपने निर्धारित विचारों से मानव प्रकृति के वास्तविक तथ्यों की प्रतिकूलता पर अवश्य ही लड़खड़ा कर गिर जाता है। क्योंकि यह मानव-सत्ता की संश्लिष्टता और उस संश्लिष्टता के सारे इंगितों को अनदेखा कर जाता है। विशेषतः यह मानवीय आत्मा और उसकी स्वतन्त्रता की चरम आवश्यकता की, निसन्देह उसके निम्नतर अंशों के नियन्त्रण की भी, अवहेलना करता है! क्योंकि यह उस समग्र स्वतन्त्रता का अंश है कि जिसके लिए मानव संघर्षरत है—एक विकसनशील आत्मसंयम के लिए दूसरों की बुद्धि और इच्छा के द्वारा यान्त्रिक नियन्त्रण के लिए नहीं। आज्ञाकारिता ही इसकी सम्पूर्णता का अंग है, परन्तु एक सच्ची निर्देशक शक्ति की उन्मुक्त और स्वाभाविक आज्ञा-कारिता यांत्रिक शासन या सरकार की आज्ञाकारिता नहीं। सामूहिक सत्ता मानी जा सकती है पर यह सत्ता एक आत्मा और जीवन है केवल एक मस्तिष्क और शरीर नहीं!

प्रत्येक समाज इस मानवता की उप-आत्मा के रूप में विकसित होता है और एक सामान्य स्वभाव, चरित्र और मस्तिष्क की रचना विकसित करता है, इसके जीवन्त और इसकी संस्थाओं को आकार देने वाले अन्वशासी विचारों और प्रवृत्तियों को विकसित करता है। परन्तु समाज में उसके सारे सदस्यों के पास समान रूप से उपस्थित कोई सामान्य बुद्धि और इच्छा नहीं खोजी जा सकती; क्योंकि समुदाय-आत्मा अपनी प्रवृत्तियों के भले की विभिन्नता, इच्छाओं की विभिन्नता जीवन की विभिन्नता के माध्यम से कार्यान्वित करती है और इस समूह जीवन की प्राणशक्ति मुख्य रूप से इस विभिन्नता की क्रियाशीलता इसके सातत्य और इसकी समृद्धि पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निर्भर करती है। ऐसा होने के कारण संगठित राज्य की सरकार का अर्थ हो जाता है कई एक व्यक्तियों की सरकार चाहे वह संख्या सिद्धान्त में अल्पसंख्यकों की हो या बहुसंख्यकों की !

अतएव इतिहास इस बात की साक्षी रूस और चीन में सत्तारूढ़ शक्तियों के उदाहरण से प्रस्तुत कर रहा है कि सत्ता कुछ व्यक्तियों के ही हाथ में केन्द्रित हो जाती है और सामूहिक सत्ता की कल्पना निस्सार ठहरती है ! हाँ इसका एक परिणाम यह अवश्य हो निकलता है कि मानव मस्तिष्क चिन्तन की स्वतन्त्रता या कार्य के द्वारा विचारों को जीवन से सिद्ध करने की स्वतन्त्रता से वंचित कर दिया जाता है तो तर्क अपना कार्य नहीं कर सकता और न वह शासन ही कर सकता है।

इससे स्पष्ट है कि समाजवादी मान्यताओं के परिणामस्वरूप एक ऐसे अन्धकारपूर्ण ऊजड़ देश के बन जाने की संभावना है कि जहाँ धूमिल रहस्यमयताएँ भौतिकवादी प्राणदेशमयी या मिली-जुली रहस्यमयताएं मानव-जीवन पर प्रभुत्व के लिए टकराएं और संघर्ष करें।

★

सत्यार्थ-प्रकाश

ऋषि-जीवन

और

वेद भाष्य

प्रत्येक परिवार में पहुँचाएँ

दयानन्द-संस्थान

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संगठन और समृद्धि

निर्धन किन्तु बड़ा परिवार ! खाने के भी लाले। स्थिति विकट बनी तो परिवार का प्रमुख सपरिवार ग्राम से चल पड़ा एक नगर की ओर ! चलते-चलते रात हो गई और आ गया समीप एक सघन वन। पिता ने अपने सबसे बड़े पुत्र को सम्बोधित करते हुए कहा "बेटे ! जाओ वन से कुछ लकड़ियाँ ले आओ। आग जला ली जाए।"

पिता के निर्देश पर वह चलने लगा तो छोटा भाई बोल उठा "पिता जी इन्हें मत भेजो ! मैं लकड़ियाँ ले आऊँगा।"

उससे भी छोटा और कह उठा "नहीं पिता जी, यह कार्य तो मैं ही करूँगा।"

पिता ने जब पुत्रों में होड़ लगी देखी तो बोले "प्रिय पुत्र तुम सभी थोड़ा-थोड़ा कार्य कर दो। तुम में से एक लकड़ियाँ ले आये तो दूसरा पानी और तीसरा पत्थरों से चूल्हा बना दे।"

सबने पिता की आज्ञा का पालन किया और कुछ ही देर बाद चूल्हा तैयार था। लकड़ियाँ भी आ चुकी थीं तो आग भी जल उठी और पानी भी आ गया। जिस वृक्ष के नीचे इस परिवार ने डेरा डाला था, उसके ऊपर नीड़ था एक पक्षी का। उसने यह सब दृश्य देखा तो हँसा और बोला "अरे भाई ! तुमने सब कुछ तो जुटा लिया किन्तु तुम्हारे पास खाने को तो कुछ भी नहीं, पकाओगे क्या और खाओगे क्या ?"

(समझाने के लिए ही यह कहानी—यों पक्षी मानव भाषा में बोलते नहीं)

बड़े बेटे ने दृष्टि ऊपर डाली "हम तुझे ही खाएँगे। देख मैं अभी तुझे पकड़ता हूँ।"

पक्षी भय से प्रकम्पित हो उठा और बोला "नहीं भइया ! ऐसा न करना, मैं तुम्हें एक स्थान बता देता हूँ, जहाँ से तुम्हें सब कुछ सुलभ हो जाएगा।"

परिवार के सभी लोग पक्षी द्वारा किए जा रहे पथ प्रदर्शन के अनुसार चलते-चलते एक स्थान पर पहुँचे। पक्षी बोला "इस स्थान को खोदिए।"

सभी ने खोदा तो नीचे देखा कि बहुत बड़ा कोष है; सोना है, चांदी है, तो हीरे जवाहरात भी। उन्होंने यह सम्पदा निकाली। फिर वे अपने ग्राम वापस लौट कर आनन्दपूर्वक निवास करने लगे।

उनके एक पड़ोसी ने जब यह काया पलट वाला दृश्य देखा तो पूछा "भइया ! तुम एक ही रात में इतने धनवान कैसे बन गये ?"

परिवार के सदस्यों ने पड़ोसी को सारी घटना सुना दी। वृक्ष वाली बात बताई तो पक्षी वाली घटना भी दोहरा दी।

पड़ोसी का मन भी डोल गया। उसने भी अपने सारे परिवार को साथ लिया और ग्राम से प्रस्थान कर गया। रात में पहुँचा उसी वृक्ष के नीचे और डाल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिया डेरा। उसने अपने पड़ोसी के समान ही अपने पुत्र को कहा, जाओ लकड़ियां ले आओ।"

वह बोल उठा "पिताजी छोटे को क्यों नहीं कहते ? क्या उसके पैरों में पीड़ा हो रही है ?"

पिता ने छोटे को कहा तो वह बोला "यह मुझसे बड़ा है। इसे इतना भी विचार नहीं आता कि मैं चलते-चलते थक कर चूर हो गया हूँ। और को क्यों नहीं कहते। क्या इनकी लातें टूटी हुई हैं ?"

बेचारा पिता सबसे कहता फिरा किन्तु गया कोई भी नहीं। परेशान होकर उसकी पत्नी बोली "अच्छा कोई नहीं जाता तो फिर मैं ही जाती हूँ।"

किन्तु पति चीख उठा "तू कहाँ जाएगी। यहीं रह, कहीं हाथ-पांव तुड़वाने हैं क्या अन्धेरे में।"

कोई भी न गया। न लकड़ियां आईं, न पानी, न चूल्हा ही बना और न आग ही जली।

वृक्ष पर बैठा वही पक्षी बोल उठा इस सारे दृश्य को देखकर हँसते-हँसते "भाई, कैसे विचित्र हो तुम सब। न लकड़ी है, न पानी न, चूल्हा है, न आग, न पकाने को आटा ही है और न बनाने को साग। भूखे ही रहोगे, भला खाओगे क्या ?"

एक लड़का तुरन्त चीखा 'अब तुझे ही अपना आहार बनाएँगे।'

पक्षी हँसते हुए बोला 'अरे चुप भी बैठे रहो। दूर गये मुझे खाने वाले। तुम में तो आपस में ही फूट है। तुम मेरा क्या बिगाड़ोगे ? वह वृक्ष की डाली से उड़ा और निकल गया दूर किसी और वृक्ष पर बसेरा करने।

यह है एकता और फूट का नतीजा। जो मिलकर चले, मिलकर रहे, मिलकर सोये और मिलकर आचरण करें उन्हें मिलता है सुख, समृद्धि और सफलता और जिनमें है आपसी फूट, सामाजिक टूट उन्हें असफलता ही पल्ले पड़ती है।

इसीलिए वेद का उद्घोष है हम सभी के लिए प्रेरक !

संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥

अर्थात्—प्रेम से मिलकर चलो, बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भांति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो॥

★

जो तमाशा देखने दुनिया में थे आये हुए,
कुछ न देखा, फिर चले, आखिर वो पछताये हुए॥
फर्शो-मखमल पर भी मुश्किल से जिन्हें आता था ख्वाब,
खाक पर सोते हैं, अब वो पांव फैलाये हुए॥
जो मुहय्याए-फना-हस्ती[१] में हैं मिस्ले-हुबाब,[२]
होते हैं अव्वल से ही पैदा वो कफनाए[३] हुए॥

—बहादुरशाह 'जफर'

१. नश्वर जीवन में; २. बुलबुले के समान; ३. कफन लपेटे हुए।

★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi